राजभाषा विशेषांक

जल विकास

मासिक | खंड 33 | अक्तूबर, 2022
Quarterly | Vol. 33 | October, 2022

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की आंतरिक पत्रिका
(In house Bulletin of National Water Development Agency)

इस अंक में

संदेश एवं अपील

– महानिदेशक महोदय की ओर से 4
– मुख्य अभियंता (मुख्यालय) का संदेश 5
– निदेशक तकनीकी एवं राजभाषा अधिकारी का संदेश 6
– सहायक निदेशक (राजभाषा) का संपादकीय 7
– महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा राजभाषा अपील 8
– माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश 9–10
– माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश 11
– माननीय जल शक्ति एवं जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश 12
– माननीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं जल शक्ति राज्य मंत्री 13
– माननीय सचिव, जल शक्ति, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश 14

लेख

– **नदियों का अंतर्योजन : जल सुरक्षा के लिए एक पुनर्नवीकृत प्रेरणा**
डॉ आर.एन.संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) 15–20
– भारतीय अंग्रेजी में सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं और अभिव्यक्ति का अनुवादः
हिन्दी के विशेष संदर्भ में – डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी 21–26
– पर्यावरण असंतुलन, कोरोना और हम,– ललित कुमार स्यानियॉ, सहायक अभियंता 27–31
– **सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत फसलों की जल आवश्यकता (सकल सिंचाई माँग**
Gross Irrigation Requirement) के आँकलन के लिए प्रस्तावित पद्धति
– शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता, मुख्य अभियंता (दक्षिण) 32–35
– अनुवाद परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ –कार्यालयी हिन्दी और अंग्रेजी के विशेष संदर्भ में
– अक्षित रोहिल्ला, हिन्दी अनुवादक 36–41
– राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना .. जल संकट का निवारण–रीता कश्यप, आशुलिपिक 42–45
– भारत में जल संकट और समाधान – बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार 46–47
– पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना एक नजर में – ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार 48–49
– राजभाषा में यूनिकोड की आवश्यकता– राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक 50–51

रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

– तकनीकी सारसंग्रह 52–58
– नियुक्ति/पदोन्नति/सेवानिवृत्ति/शोक का विवरण 59–60
– मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा–2021 का आयोजन 61–68
– मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2022 का आयोजन 69–79
– मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2022 का आयोजन 80–89

कविताएं

– केन बेतवा जोड़ नहर – सतीश चन्द्र अवस्थी, अधीक्षण अभियंता (उत्तर) 90
– मॉ गंगा की पुकार – बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार 91
– जल है अनमोल रत्न – अमित बूरा, कनिष्ठ अभियंता 92

रा.ज.वि.अ. पदाधिकारियों के बच्चों का कोना

– पर्यावरण पर कविता
श्रेया, पुत्री श्रीमती राधा 94

– जल संरक्षण पर कविता
बानी, पुत्री श्री विक्रम सिंह 95

– मेरा नाम है जल पर कविता
प्रखर वाधवा, पुत्र श्रीमती रीना वाधवा

– जल संरक्षण पर चित्र 96
नीलेश मौर्य, पुत्र श्री ईश्वर लाल मौर्य

– जल ही जीवन है – श्रध्दा पुत्री श्रीमती मिथलेश मौर्य 97

– जल बचाओ पर चित्र
श्रेया, पुत्री श्रीमती राधा 98

– जल संरक्षण पर चित्र
प्रत्युष वाधवा, पुत्र श्रीमती रीना वाधवा 99

महानिदेशक की ओर से

भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है। किसी भी भाषा को राजभाषा का गौरव प्राप्त करने के लिए सरल और सहज होना आवश्यक है जिससे कि एक आम नागरिक भी सरकार के काम–काज को समझ सके। इसके साथ–साथ उसमें सर्वव्यापकता, प्रचुर साहित्य, सरलता और वैज्ञानिक तत्व, सभी प्रकार के भावों को प्रकट करने का सामर्थ्य होना अनिवार्य है और ये सभी गुण हिन्दी भाषा में मिलते हैं।

हिन्दी विश्व की तीसरी और भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। तकनीकी में भी हिन्दी ने अपना आधार दृढ़ कर लिया है। माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी कंपनी ने भी हिन्दी की लोकप्रिय और वैश्विक स्थिति के कारण हिन्दी सॉफ्टवेयर के साथ–साथ कई एप भी हिन्दी भाषा में बनाए हैं। आज ग्लोब्लाइजेशन के दौर में भी हिन्दी का महत्व और भी बढ़ता जा रहा है। इससे सिद्ध होता है कि इन्टरनेट पर भी हिन्दी आधिकारिक भाषा के रूप में प्रयोग मे लाई जा रही है। सोसल मीडिया में हिंदी भाषण के योगदान को कम नहीं माना जा सकता।

जनसंपर्क का सरल एवं सुगम माध्यम होने के कारण इसने सभी भाषाओं और बोलियों के बीच अपना एक अलग स्थान सुनिश्चित कर लिया है। इसके साथ–साथ विदेशों जैसे फिजी, ट्रिनिडाड, गुयाना, सूरीनाम, मॉरीशस आदि में भी हिन्दी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। दुनिया के बाजार में अब इस बात की चर्चा होने लगी है कि ''भारत से जुड़ना है, भारतीयों के मन में जगह बनानी है तो हिन्दी सीखो''। हिन्दी की महत्ता तथा लोकप्रियता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि विश्व के 130 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन किया जा रहा है और इसे सीखने की सुविधा दी जा रही है। हिन्दी की फिल्मों और संगीत ने भी इसके प्रचार–प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई है और इसे लोकप्रिय बनाने में अपना सशक्त योगदान दिया है।

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण भी राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने और उसे एक लक्ष्य तक पहुंचाने और उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेने के उपरांत भी उसे उसी स्थिति में बनाए रखने की शुभ कामनाओं सहित।

सधन्यवाद ।

(भोपाल सिंह)
महानिदेशक

संदेश

बहुभाषिकता विश्वव्यापी है। दुनिया का प्रत्येक देश अपनी भाषा में ही उन्नति कर रहा है। चीन, जापान, फ्रांस आदि देश उसके उदाहरण है। हमारे देश के संदर्भ में भी यही लागू होता है। हिन्दी इसकी एक प्रमुख और बहुत बड़े भू–भाग में बोली और उससे भी अधिक पूरे भारत में समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी की परम्परा और इतिहास सुदृढ़ है आज वह तकनीकी भाषा के रूप में अपना एक मजबूत स्थान बना रही है। अब वर्तमान भारत की हिंदी व्यावहारिक भाषा के रूप में बाजार, कम्प्यूटर, जनसंचार और रोजगार पर्यटन का सहज माध्यम बन चुकी है। यह हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु का काम कर रही है। हिन्दी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ–साथ 11 राज्यों और 3 संघ शासित क्षेत्रों की भी राजभाषा है।

केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा तथा अपने मंत्रालय द्वारा जारी सभी आदेशों का अनुपालन राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा सुनिश्चित किया जाता है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय तथा इसके सभी क्षेत्रीय कार्यालय हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की तिमाही रिपोर्ट सूचना प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से राजभाषा विभाग को ऑनलाइन भेजते हैं। भारतीय भाषा प्रौद्योगिकी मिशन ने हिन्दी भाषा में काम करने के लिए कई सॉफ्टवेयर टूल्स भी विकसित किए हैं जिनके माध्यम से कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करना अत्यधिक सरल हो गया है। अब हमें इन प्रौद्योगिकियों के उत्तरोतर प्रयोग एवं उपयोग की ओर सतत बढ़ते रहने की आवश्यकता है।

हम सबका यह कर्तव्य है कि सरकार के अन्य नियमों की भांति हम ''राजभाषा के नियमों'' का पालन भी पूरी निष्ठा और लगन से करें और मुझे बहुत खुशी है कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण बहुत हद तक इस कार्य में सफल भी हुआ है।

(बालेश्वर ठाकुर)
मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

संदेश

जल विकास 2022 का राजभाषा विशेषांक आपके सम्मुख प्रस्तुत है जिसमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) के सभी कार्य परिचालित हो रहे हैं। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण अपने तकनीकी कार्यों के साथ–साथ राजभाषा संबंधी कार्य और इससे संबंधित अनुपालन करने में सदैव प्रयासरत रहा है। केवल मुख्यालय ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में पदाधिकारियों द्वारा कार्यालय के अपने सभी कार्य में विशेष रूचि एवं निष्ठा से किए जा रहे हैं। जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र द्वारा ''राजभाषा दिगंत पुरस्कार'' प्राप्त करने का गौरव मिला है। मुझे आशा है कि जल विकास के इस विशेषांक का आप स्वागत करेंगे और यह आपकी रूचि के अनुकूल होगा।

इस अंक में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखे गए लेख प्रकाशित किए गए हैं। आशा है कि ये लेख आपको पसंद आएंगे।

राजभाषा विशेषांक के ''तकनीकी सारसंग्रह'' में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के तकनीकी कार्यों की प्रगति को दर्शाया गया है।

इस अंक में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय एवं मुख्य अभियंता, उत्तर एवं दक्षिण तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा–2022 में आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में महानिदेशक महोदय द्वारा जारी की गई अपील भी प्रस्तुत है। हिन्दी पखवाड़े के आयोजन में आप सभी की भागीदारी ही इसकी शानदार सफलता का कारण है।

वर्ष 2021–2022 में हिन्दी के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए ''राजभाषा वैजयंती'' अन्वेषण सर्किल हैदराबाद को और उनके अधीनस्थ प्रभागों को लघु राजभाषा वैजयंती से सम्मानित किया गया है। मेरी सभी को हार्दिक बधाई और आशा है कि रा.ज.वि.अ. के सभी कार्यालय हिन्दी का प्रयोग सदा इसी निष्ठा पूर्वक करेंगे।

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के पदाधिकारियों द्वारा जिन विभिन्न प्रशिक्षण/ संगोष्ठी/सम्मेलन एवं कार्यशालाओं में भाग लिया गया उनका विवरण भी इस अंक में प्रस्तुत किया गया है एवं साथ ही राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हुई नई नियुक्तियों, पदोन्नतियों व सेवानिवृत्तियों का विवरण भी दिया गया है। इस अंक के अंत में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के पदाधिकारियों की रोचक कवितायें प्रस्तुत हैं जो आप सभी को काव्य रस की अनुभूति कराएंगी। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के पदाधिकारियों के बच्चों का कोना में बच्चों द्वारा जल संरक्षण का चित्रण किया गया है जो हमें अनायास ही जल के प्रति हमारे कर्त्तव्य को दर्शाता है।

अंत में आप सभी से मेरा अनुरोध है कि आपको यह अंक कैसा लगा, और इसको बेहतर बनाने के बारे में अपने विचार हम तक अवश्य पहुंचाएं।

सधन्यवाद।

(डी.के.शर्मा)
निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति की पानी की मांग लगभग 85 लीटर है जो सन 2025 तक लगभग 125 लीटर होने की सम्भावना है। देश में जल उपभोक्ता और जल उपलब्ता के संदर्भ में विशेषज्ञों द्वारा समय समय पर किए गए अध्ययनों से यह पता चलता है कि भारत में पिछले लगभग 60–70 वर्षों में जल उपलब्धता एक तिहाई रह गई है और जनसंख्या पहले की अपेक्षा कई गुना अधिक बढ़ गई है। जल के अन्य स्रोतों के मुकाबले हम मुख्यतया भूतल पर निर्भर होते चले जा रहे हैं, जिसका परिणाम यह है कि भूजल स्तर निरंतर नीचे गिरता जा रहा है। भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर भी जल की उपलब्धता और उपभोक्ता के बीच का यह अंतर बहुत बड़ी चुनौती बनती जा रही है। इन्हीं समस्याओं को दृष्टिगत रखकर ही राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण अपनी योजनाओं के द्वारा जल संकटों से उबरने के लिए कई अध्ययन किए हैं, जिनके कियान्वित होने से भारत में जल की अधिकता वाले क्षेत्रों से जल की कमी वाले क्षेत्रों को पानी अंतरित करके इस संकट का समाधान निकालने का प्रयत्न किया जा रहा है।

इस अंक में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय, मुख्य अभियंता (उत्तर) एवं मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा 2022 में आयोजित की गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। महानिदेशक महोदय द्वारा एवं माननीय, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह द्वारा जारी संदेश, माननीय मंत्री जल शक्ति, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत का संदेश, माननीय जल शक्ति एवं जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार एवं और माननीय जल शक्ति राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री प्रहलाद सिंह पटेल का संदेश तथा सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, ज.सं.न.वि.अ और गं.सं. वि. श्री पंकज कुमार का संदेश भी प्रकाशित किया जा रहा है।

जल विकास का राजभाषा अंक प्रत्येक वर्ष नई अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयत्न करता रहा है और मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है उसी प्रकार यह राजभाषा विशेषांक राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की समस्त गतिविधियों से आपको परिचित कराने का प्रयास है। इसमें प्रकाशित तकनीकी लेख में आपको जल संबंधी कई पहलुओं एवं समाधानों का परिचय मिलेगा।

मुझे पूरा विश्वास है कि सभी कविताएं आपको भाव–विभोर करने में सफल होंगी।

आशा है कि जल विकास का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और इस संबंध में अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं से आप हमें अवश्य अवगत कराएंगे।

(डॉ.अनिल कुमार द्विवेदी)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भोपाल सिंह
महानिदेशक
Bhopal Singh
Director General

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार
(जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग)
National Water Development Agency
Ministry of Jal Shakti, Government of India
(Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation)

दिनांक : 30 अगस्त, 2022

अपील

संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था और पिछले 73 वर्षों में हिन्दी कश्मीर से कन्या कुमारी तक एक आम बोल-चाल वाली सहज एवं सरल सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। विश्व आज "ग्लोबल विलेज" में बदल रहा है और नई पीढ़ी हर सूचना और जानकारी इंटरनेट के माध्यम से खोजती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हमारे लिए यह आवश्यक हो गया है कि हम अपने कार्य से संबंधित लाभदायक और सूचनापरक जानकारी अपनी वेबसाइट के माध्यम से उपलब्ध कराएं। यह जानकारियां वेबसाइट पर हिन्दी में भी उपलब्ध होनी चाहिए। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। यहां तक कि अनुमोदन हेतु पत्रों का प्रारूप एवं अन्य अनुमोदन लेने हेतु फाईल ई-आफिस के माध्यम से ही भेजी जाने लगी है। सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान कार्यप्रणाली का आधार बन चुकी है। मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी होती है कि आज हम विचार-विमर्श, चर्चा, प्रस्तुतिकरण तथा अपनी अन्य प्रकार की सभी अभिव्यक्तियां हिन्दी के माध्यम से ही करने में पूरी तरह से सक्षम हैं।

यह हम सबका संवैधानिक दायित्व है कि हम हिन्दी के प्रचार-प्रसार और काम-काज को पूरी गम्भीरता से लें और अपने कार्यालय का अधिक-से-अधिक कार्य हिन्दी में ही करें । भारत सरकार की राजभाषा नीति प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भाव से हिन्दी का विकास करने पर जोर देती है जिसे हमें भी अपनाना चाहिए। हिन्दी के प्रयोग को और बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में भारत सरकार की योजनाओं के अलावा अपनी भी कुछ योजनाएं इसी लक्ष्य से चलाई जा रही हैं कि हमारे पदाधिकारी पूरे वर्ष पूरे उत्साह एवं प्रेरणा से हिन्दी में कार्य करें।

मेरी आप सभी से अपील है कि हिन्दी पखवाड़े के दौरान राजभाषा का शत-प्रतिशत उपयोग किया जाए और पूरे साल भी हिन्दी को आगे बढ़ाने में हम सभी अपना योगदान सुनिश्चित करें।

(भोपाल सिंह)
महानिदेशक

18–20, सामुदायिक केन्द्र, साकेत, नई दिल्ली / 18-20, Community Centre, Saket, New Delhi-110017
दूरभाष / Phone : 011–26519164 / 41033995 फैक्स / Fax : 011-26513846
कक्ष न. 305, पालिका भवन, आर.के. पुरम, सेक्टर–13, नई दिल्ली–110066
Room No. 305, Palika Bhawan, R.K. Puram, Sector-13, New Delhi-110066
दूरभाष / Phone : 011-24195726 / 24195700, फैक्स / Fax : 011-24195727
ई–मेल / E-mail : dg-nwda@nic.in वेबसाइट / Website : www.nwda.gov.in

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम–काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम–काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13–14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस–2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन–साधारण के लिए **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा–भाषी अपनी–अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई–महाशब्दकोश' में 90 हज़ार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई–सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हज़ार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी **'बृहत शब्दकोश'** के निर्माण पर भी काम शुरु किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द–संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियो ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश–विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022

(अमित शाह)

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

सत्यमेव जयते

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

संदेश

06 SEP 2022

मेरे प्रिय साथियों,

'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं।

भारत की सांस्कृतिक चेतना विलक्षण है। हमारा देश भाषा के मामले में अत्यन्त समृद्ध है। देश में सांस्कृतिक समन्वय के जो प्रयास हो रहे हैं, उनमें हिन्दी भाषा का विशेष योगदान है। विपुल शब्द भण्डार वाली हिन्दी एक सरल, व्यावहारिक और जीवंत भाषा है। देश के महान विचारकों एवं दार्शनिकों ने काफी चिंतन और मनन के बाद हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। अतः राजभाषा कार्यान्वयन हमारा संवैधानिक दायित्व है। इसकी सार्थकता हमारी निष्ठा पर निर्भर करती है। जनता का काम जनता की भाषा में सम्पन्न हो, सरल एवं सुबोध हिन्दी में हो।

आज के संदर्भ में जल संचयन और जल का उचित प्रयोग जैसे विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय के जल से जुड़े हुए क्रियाकलापों से संबंधित जानकारी आम जनता की समझ में आने वाली सरल भाषा में प्रदान की जानी चाहिए। ऐसा करके हम अपने दायित्व को और अधिक महत्वपूर्ण ढंग से पूरा कर सकते हैं।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में उत्साह के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा समारोह' आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण भावना का परिचय देंगे।

हार्दिक शुभकामनाएं।

जयहिन्द!

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-jalshakti@gov.in

विश्वेश्वर टुडु
BISHWESWAR TUDU

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जल शक्ति एवं
जनजातीय कार्य राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR
JAL SHAKTI & TRIBAL AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

दिनांक: अगस्त, 2022

संदेश

प्रिय साथियों,

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। भारत के संविधान के अनुसार भी संघ की राजभाषा हिन्दी है। राजभाषा हिन्दी में सरकारी कामकाज करने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करें। हमारा देश एक बहु-भाषी देश है जहां अनेक संस्कृतियां विद्यमान हैं। हिन्दी एक सेतु के रुप में काम कर रही है जो भारत की विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, और संप्रदायों को आपस में जोड़ती है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध कराए हैं। कंप्यूटरों पर हिन्दी में काम करने में अब कोई कठिनाई नहीं है। अलग से किसी हिन्दी सॉफ्टवेयर के बगैर कंप्यूटरों पर यूनिकोड समर्थित फॉन्टस् के साथ आसानी से हिन्दी में कार्य किया जा सकता है। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम कम्प्यूटरों पर उपलब्ध इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें और राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की ईमानदार कोशिश करें।

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में दिनांक 14.09.2022 से 28.09.2022 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है।

मुझे उम्मीद है कि विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी इस 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

'हिन्दी पखवाड़े' के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देते हुए 'हिन्दी पखवाड़े' की सफलता की कामना करता हूँ।

(विश्वेश्वर टुडु)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, **फैक्स** : 011-23354496, Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
415, 'बी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली -110 001, 415,'B' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23070580, 23070669, Tel. : (011) 23070580, 23070669, E-mail : mos-tribalaffairs.gov.in

प्रहलाद सिंह पटेल
PRAHLAD SINGH PATEL

सत्यमेव जयते

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एवं
जल शक्ति राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
FOOD PROCESSING INDUSTRIES
AND JAL SHAKTI
GOVERNMENT OF INDIA

शुभकामना संदेश

कोई भी वनस्पति हो, फूल हो, फल हो उसकी अपनी एक प्रकृति होती है। वे अपनी तय प्रकृति में ही पनपते हैं, फलते-फूलते हैं। उसी तरह अभिव्यक्ति की भी अपनी एक भाषा होती है। जो हमारे विचारों के अनुरूप होती है। विचारों की उसी प्रकृति में हम अपनी अभिव्यक्ति करते हैं। पुष्पित, पल्लवित करते हैं। मुझे लगता है वह भाषा हमारी अपनी होनी चाहिए। जो भाषा हमारी प्रकृति से मेल खाती हो, हमसे मिलती-जुलती हो, हमसे एक लगाव रखती हो, एक अपनापन हो। जो हमसे बतियाती हो, हमारी बात समझती हो, समझाती हो। यानि मां की तरह हो। मुझे यह मातृत्व का रिश्ता हिन्दी से लगता है।

जिस तरह से दुनिया के सांस्कृतिक मंच पर वेद हों या गंगा हमारी पहचान है उसी तरह दुनिया के भाषाई मेले में हिन्दी भी हमें अपनी पहचान देती है। किसी दूसरे का मुखौटा लगाकर न हम अपना चेहरा बदल सकते हैं और न ही पहचान। हम अपने विचारों को अभिव्यक्ति के किसी भी स्तर पर सार्थकता तभी प्रदान कर पाएंगे, जब हम उसका माध्यम उसकी प्रकृति के हिसाब से यानि अपनी भाषा में ही चुनेंगे। हम अपनी भाषा पर जितना गर्व करेंगे। जितना ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करेंगे। हमारी राजभाषा उतनी समृद्ध और गौरवशाली होगी। हिन्दी दिवस पर आप सभी को मंगल कामनाएं।

(प्रहलाद सिंह पटेल)
30/8/22

खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, 204 - पंचशील भवन, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली-110 049
Ministry of Food Processing Industries, 204 - Panchsheel Bhavan, August Kranti Marg, New Delhi-110 049
Phone: 011-2649 1254 **Fax:** 011-2649 1256,
E-mail: mos-fpi@nic.in; office.pspatel@gmail.com; mos.fpi2021@gmail.com
निवास : 7- बी जनपथ, नई दिल्ली - 110 001
Resi.: 7-B, Janpath, New Delhi - 110 001 | **Phone:** 011-2301 5098, 2301 7383

पंकज कुमार
PANKAJ KUMAR
सचिव
SECRETARY

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण विभाग
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION

दिनांक 25 अगस्त, 2022

अपील

किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। भाषा विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम होती है। हिन्दी देश की भावनात्मक एकता की कड़ी है। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना एक राष्ट्रीय कार्य है।

विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी हम विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह आयोजित कर रहे हैं। मुझे आशा है कि मंत्रालय के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी इसमें भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेगा। हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभा सकें।

इस अवसर पर, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और **'हिन्दी पखवाड़े'** के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

पंकज कुमार

(पंकज कुमार)

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

श्रम शक्ति भवन,रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001 / Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel. : 23710305, 23715919, Fax : 23731553, E-mail : secy-mowr@nic.in, Website : http://www.mowr.gov.in

''नदियों का अंतर्योजन : जल सुरक्षा के लिए एक पुनर्नवीकृत प्रेरणा''

डॉ. आर.एन.संखुआ

प्रवाह संयोजन की प्रस्तावना: प्रत्यक्ष पर्यावरणीय चिंताओं के बावजूद इस क्षेत्र के लिए परियोजना के लाभों को नजरअंदाज करना कठिन है। नदियों के अंतर्योजन के माध्यम से क्षेत्र में भयंकर सूखे एवं शुष्क क्षेत्र में जल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की अपेक्षा थी, हालांकि कभी–कभी कुछ राज्य सरकारों को आई एल आर एक संकटपूर्ण दुविधा में डाल देता है जहां उसे पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक कल्याण के बीच चयन करना पड़ता है। चूंकि नदी अंतर्योजन परियोजनाओं में स्थानीय आबादी को फिर से बसाने के अलावा वनभूमि और जानवरों को खतरे में डालना शामिल होता है, इसलिए प्रत्येक परियोजना क्षेत्र में पारिस्थितिक प्रभाव को कम करने के लिए एक मजबूत प्रथानिर्मित बहुआयामी पर्यावरण रणनीति बनाई जानी चाहिए।

बहुमूल्य जल संसाधनों के संतुलित वितरण को सुनिश्चित करने का अत्यंत सफल तरीका नदी जल वितरण है और यदि इसे अच्छी तरह क्रियान्वित किया जाता है, तो कई पीढ़ियों को इसके लाभ मिल सकते हैं। दुनिया भर के कई देशों ने ऐसी परियोजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया है। उदाहरण के लिए मेक्सिको ने 1958 में अपने शहर में पानी की आपूर्ति के लिए लर्मा बेसिन से पानी स्थानांतरित किया। अमेरिका में कैलिफोर्निया राज्य जल परियोजना ने राज्य के बेहतर पानी वाले उत्तरी भाग से अपेक्षाकृत शुष्क दक्षिणी भाग में 4 बी सी एम जल प्रवाह को प्रवर्तित किया। केन–बेतवा दमनगंगा–पिंजाल, पार–तापी–नर्मदा नदी योजन परियोजनाएँ प्रगतिशील कदम हैं, बशर्ते की पारिस्थितिक प्रभावों की क्षतिपूर्ति पर्याप्त रूप से की जाए।

राष्ट्रीय नदी–योजन परियोजना (एन आर एल पी) का जल अंतरण का प्रयास पश्चिमी एवं दक्षिणी भारत में पानी की कमी को कम करने के साथ–साथ आवर्तक बाढ़ के प्रभावों को कम करने के लिए एक सार्थक पहल है। एन आर एल पी के पूरा होने पर भारत के उपयोग योग्य जल संसाधनों में 25% की वृद्धि होगी और विभिन्न क्षेत्रों में जल संसाधन की असमानता में कमी आएगी। इस बढ़ी हुई क्षमता से भारत में प्रति व्यक्ति भंडारण को बढ़ाने में आसानी होगी। यह भारत में प्रति व्यक्ति 200 मीटर है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया और चीन में क्रमशः 5960, 4717 और 2486 मीटर प्रति व्यक्ति है।

वर्षा में अनियमित अनुपात की अस्थाई भिन्नता के कारण हमारी जल नीति में सर्वोच्च प्राथमिकता घरेलू जल संतुष्टि को दी जानी चाहिए। इसके अलावा, वर्षा आधारित कृषि भूमि को जलवायु में भिन्नता से सुरक्षा, विशेष रुप से लंबे सूखे के समय भारत की जल नीति में समान रूप से उच्च प्राथमिकता एवं महत्व दिया जाना चाहिए। अंतर्योजन परियोजना के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि कुछ नदियों के अधिशेष जल को कम जल वाली नदियों में यदि स्थानांतरित किए जाने से जल की कमी से सूखे की मानवीय पीड़ा की समस्या का स्थायी समाधान किया जा सकेगा।

मुख्य अभियंता (दक्षिण)

अंतर–बेसिन असमानता–इसका प्रमुख लाभ किसानों द्वारा लिया जाता है, क्योंकि वे कृषि प्रक्रियाओं के लिए मानसून पर निर्भर नहीं होते। राष्ट्रीय स्तर पर बाढ़ और सूखा की समस्या का निराकरण किया जा सकेगा। जिस नदी का पानी बाढ़ का कारण बनता है, उसे सूखे की समस्या वाले क्षेत्र में स्थानांतरित किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप केन– बेतवा लिंक का निर्माण कुछ सूखा प्रभावित क्षेत्रों में जलापूर्ति के लिए किया गया। नदियों के अंतर्योजन के माध्यम से वनों की कटाई कम पानी की उपलब्धता और सिंचाई सुविधाओं की कमी जैसी सामाजिक समस्याओं को गम्भीरता से लिया गया। व्यापक समानता के आधार पर गरीब किसान जो सिंचाई संकट के कारण अपनी भूमि का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं वो उसका उपयोग करने में सक्षम होंगे।

1. यह एक वितरण सुपरिचित असमानता है, जिसके कारण जल संसाधन मंत्रालय एवं केंद्रीय जल आयोग के अभियंताओं ने असम की तरह सूखे के वर्षों में भी बाढ़ की आपदा झेलने वाले गंगा बेसिन से कम जल संपदा वाली नदियों एवं नहरों में जल के स्थानांतरण एवं भंडारण की मांग की है।
2. भंडारण से जल के उपयोग में सुगमता होती है बाँध बड़े हो या छोटे जिस क्षेत्र में वे अवस्थित होते हैं, उसी के अनुरूप इसका निर्णय होना चाहिए, क्योंकि उनकी आवश्यकता होती है।
3. उत्तर की बारहमासी नदियों के अधिशेष जल को कम जल वाली प्रायद्वीपीय नदियों में स्थानांतरित करना लाभप्रद होगा। जल विद्युत उत्पादन सिंचाई परियोजनाएं, मनोरंजन स्थल मछली पकड़ने हेतु जलाशय, अंतर्देशीय जलपरिवहन आदि इसके अनुषंगी होंगे। बाढ़ नियंत्रण, नौपरिवहन, जलापूर्ति, मत्स्य पालन, लवणता और प्रदूषण नियंत्रण जैसे आकस्मिक लाभों के अलावा नदियों के अंतर्योजन के फलस्वरुप 35 मिलियन का मतलब 140 मिलियन हेक्टेयर से 175 मिलीयन हेक्टेयर अधिकतम सिंचाई क्षमता और 34,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन है।
4. गांव निर्धन होते जा रहे हैं एवं शहरों में भीड़ बढ़ती जा रही है, जिसके कारण शहरों की हवा, मिट्टी और जल अभूतपूर्व रूप से प्रदूषित हो रहे हैं। इस अस्वस्थ्यकर प्रवृत्ति को उलटने का एकमात्र तरीका ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं कृषि–उद्योगों के माध्यम से रोजगार के अधिक अवसरों का सृजन करना है। चूँकि प्रस्तावित लिंक नहरें और भंडारण अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों में होने जा रहे हैं इसलिए ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के बड़े अवसर पैदा होने वाले हैं।
5. मानसून के दौरान जलाशयों में जमा अधिशेष जल को शुष्क मौसम के दौरान उसे छोड़ना नदियों में शुष्क मौसम प्रवाह की न्यूनतम मात्रा सुनिश्चित करने के साथ–साथ प्रदूषण नियंत्रण, नौकायन, वन्यजीव संरक्षण, मत्स्य विकास आदि भी करेगा। कोई भी जल स्रोत या तो जलाशयों या फिर बहने वाली लिंक नहरें दोनों ही ग्रामीण एवं शहरी लोगों के लिए अत्यंत आकर्षक एवं मनोरंजक अवसर प्रदान करेंगे।
6. हिमालयीन नदियों के लिए 14 और प्रायद्वीपीय भारत में 16 को जोड़ने का तात्पर्य है कि 15000 किलोमीटर नई नहरें जल के 174 बी सी एम को स्थानांतरित कर जोड़ेंगी।
7. भंडारण के प्रश्न को सदैव बड़े बांधों के आलोक में देखने की जरूरत नहीं होती है। नहरों के पानी का समुचित उपयोग क्षेत्रानुसार फसलों की खेती, ड्रिप सिंचाई को प्रोत्साहित और पारंपरिक तरीकों यथा तालाबों को जलाशय के रूप में पुनर्जीवित करना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है।

नदी अंतर्योजन में अधिशेष जल का अनुमान गलत नहीं है

केंद्रीय जल आयोग के अंतरिक्ष इनपुट का उपयोग कर जल उपलब्धता के संबंध में किए गए ताजा अध्ययन में जैसा कि पाया गया है कि विभिन्न पर्यावरण प्रबंधन की स्थिति के अंतर्गत ब्रह्मपुत्र एवं बराक नदी प्रणाली (मात्र 24 बीसीएम के उपयोग से 528.27 बीसीएम यील्ड) एवं गंगा (526.09 बीसीएम) और तीस्ता में एनआरएलपी में अतिरिक्त नदी प्रवाह है। मध्यम रूप से संशोधित पर्यावरणीय परिस्थितियों में महानदी और गोदावरी में अधिशेष हो सकता है। फिर भी महानदी और फिर गोदावरी के अंतर बेसिन स्थानांतरण उन्हें अधिशेष प्रवाह की अनुमति देता है जबकि उन्हें थोड़ा पर्यावरणीय प्रभाव स्थितियों को व्यवस्थित करना होगा।

मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स में सोहरा के मासिनराम के मुद्दे की तरह 11000 मिलीमीटर से अधिक वार्षिक औसत वर्षा के साथ कठिनाइयों का सामना हो सकता है। पहले केवल 15000 से 20000 लोगों के लिए वैज्ञानिक रणनीतिक सोच के माध्यम से सर्दी के महीनों में जलापूर्ति की योजना थी जिसे बढ़ाकर 70000 लोगों के लिए जलापूर्ति प्रणाली का विस्तार किया जा सकता है। सरकार जल शक्ति अभियान के कार्यों के माध्यम से जल प्रबंधन के निर्धारित मार्गो को लागू कर रही है, जो वर्तमान समय में रणनीति तैयारियों, वाटरशेड आधारित सहयोग के रूप में जल के क्षेत्रीय प्रबंधन में सुधार के लिए हितधारकों को शामिल करना आदि है। यदि सोहरा में सही फसल पद्धति और लाभदायक जल संचयन जैसे जलप्रबंधन को ठीक से संबोधित किया जाता है तो उस क्षेत्र की समस्या को हल किया जा सकता है। जल संचयन एवं उसका संरक्षण दोनों समान रूप से सच है चाहे वह वर्षा–दुर्लभ अजमेर हो या फिर वर्षा पूरित चेरापूंजी।

एन एल आर पी जल सुरक्षा के लिए एक पुनर्नवीकृत प्रेरणा

महाराष्ट्र एवं गुजरात द्वारा प्रभावित कुछ एन पी पी लिंक और इंटर स्टेट नदी–योजन पश्चिम एवं मध्य भारत के मुख्य शुष्क क्षेत्रों की देखभाल करेंगे।

तलछट भुखमरी और जलमग्नता एवं पुनर्वास

मौजूदा तलछट भुखमरी में वृद्धि एन एल आर पी की चिंता का विषय नहीं हो सकता है, क्योंकि दिनों से हफ्तों तक अल्पकालिक उतार–चढ़ाव नदियों के लिए हाइड्रोलॉजिकल गड़बड़ी के रूप में कार्य कर सकता है। उदाहरण स्वरूप वह नदी की प्रक्रिया में एक निरंतर महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत दे सकते हैं या नहीं दे सकते जो कई वर्षों की अवधि में बन सकते हैं। एक बड़ी बाढ़ जो गंदगी और निलंबित तलछट के परिवहन को बढ़ाती है, एक क्षणिक घटना हो सकती है, जो तलछट काल के निरंतर परिवर्तन का संकेत नहीं देती। इसके अलावा, तलछट को स्पष्ट रूप से शामिल करना चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि तलछट का गैर–रेखीय और एपिसोड प्रक्रियाओं द्वारा आपूर्ति, परिवहन एवं संग्रहण किया जाता है और जो विभिन्न अनुपात में अस्थाई रूप में संचालित होते हैं तथा जिन्हें मनुष्य द्वारा लगातार बदल दिया जाता है। भूमि के जलमग्न होने के कारण हुई क्षति को पारंपरिक मुआवजे एवं पुनर्वास सहायता कार्यक्रमों के माध्यम से संबोधित किया जाएगा, जैसे की भूमि के लिए नकद, भूमि के लिए भूमि मुआवजा, परियोजना निर्माण–स्थलों पर सीमित और अस्थाई रोजगार के अवसर विकास परियोजनाओं में बेहतर आवास एवं आय और आजीविका बहाली सुधार सहायता कार्यक्रम आदि ।

सिंचाई जल स्थानांतरण की लागत और लाभ

एन एल आर पी में प्रस्तावित व्यक्तिगत सिंचाई लिंक में निवेश के लिए स्थानांतरण या निवेश की मात्रा की आवश्यकता वास्तव में विवादित मुद्दे हैं। हालांकि, एन आर एल पी में प्रस्तावित अन्योन्याश्रित लिंक में सिंचाई के लाभ उच्च मूल्य के साथ कृषि उत्पादन पद्धति लागत से अधिक हो सकता है। कुछ लाभों के आर्थिक प्रभाव जैसे सूखे और बाढ़ को कुछ हद तक कम करना, मछली पकड़ना, पिकनिक स्थल और मनोरंजन पार्क से राजस्व, आय में वृद्धि को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। एन आर एल पी विमर्श में दूसरा उठने वाला मुद्दा लागत और लाभ है। एन आर एल पी जल अंतरण में सिंचाई को सबसे अधिक लाभ पहुँचाने की परिकल्पना की गई है। यह 34 मिलियन हेक्टेयर नई सिंचित फसल भूमि (सतह के माध्यम से 24 मिलियन हेक्टेयर और 10 मिलियन हेक्टेयर जोड़ने की योजना बना रहा है। आई एल आर (प्स्त) कार्यक्रम का पूरा प्रभाव तभी महसूस होगा जल निर्माण पूरा हो जाएगा, जलाशय भर जाएंगे और सिंचाई, पेयजल, औद्योगिक प्रयोजन एवं जलविद्युत उत्पादन हेतु उसके अंतिम उपयोगकर्ताओं तक पहुँच जाएगा।

मानसून प्रणाली और जलवायु परिवर्तन की अखंडता पर प्रभाव

भारत के पास जलवायु परिवर्तन के बारे में चिंतित होने के कारण हैं, जैसे कि आई एल आर लागू किए बिना भी इस वर्ष मानसून की वापसी में 40 दिनों की देरी हुई। गैर जलवायु चालक भी परावर्तित सौर विकिरण एवं वाष्पीकरण जैसे जलवायु प्रभावों के माध्यम से प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में प्रणालियों और क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण पानी की उपलब्धता की अस्थिरता में अप्रत्याशित को इसके विभिन्न रूपों अर्थात् मिट्टी की नमी, तालाबों, भूजल एवं नदी चैनलों के माध्यम से निपटा जाना चाहिए तथा भूजल की लवणता को कम करना चाहिए, जैसा कि इस लेख के परिचय में दिया गया है। राज्यों को जल भंडारण क्षमता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे अन्य बातों के साथ–साथ पारम्परिक जल संचयन संरचनाओं और जल निकायों का पुनरूद्धार शामिल होना चाहिए। जैसा कि कहीं और बताया गया है, जलवायु परिवर्तन पहले से ही चल रहा है, प्रभाव महसूस किए जा रहे हैं और आई एल आर के बिना भी कतिपय अनुकूलन हो रहा है। और आगे आई एल आर अधिक जल संरक्षण, अधिक वाष्प–वाष्पोत्सर्जन के साथ–साथ अधिक वर्षा को बढ़ाएगा।

औसत वार्षिक वर्षा 3880 बी सी एम में से लगभग 1166 बी सी एम स्वच्छ जल बिना उचित उपयोग के समुद्र में चला जाता है। जल से भयंकर तबाही एवं उसके समुद्र में बहकर नष्ट हो जाने (विशेषकर ब्रह्मपुत्र एवं गंगा) से रोकना और उसे सूखा प्रभावित दक्षिण एवं पश्चिम क्षेत्रों में उत्पादक प्रयोग हेतु कैसे मोड़ा जाए मुख्य चुनौती है, ताकि मौजूदा बाढ़ और सूखे के सिंड्रोम से छुटकारा मिल सके। राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (एन पी पी) की परिकल्पना सतह जल से 25 मिलियन हेक्टेयर और 10 मिलियन हेक्टेयर से 175 मिलियन हेक्टेयर बढ़ाई जा सके। एन एल आर पी समता एवं सामाजिक न्याय के सिद्दांत पर आधारित घरेलू एवं औद्योगिक जलापूर्ति सुनिश्चित करने के अलावा बाढ़–सूखा–बाढ़ सिंड्रोम का प्रबंधन, बढ़ी हुई खाद्य सुरक्षा प्रदान करने, जल विद्युत विकास में वृद्धि एवं नदियों के न्यूनतम पर्यावरणीय प्रवाह (ई–प्रवाह) को बनाए रखने का प्रबंधन करेगा।

वर्तमान में राष्ट्रीय जल परिवहन नदियों की अपर्याप्त गहराई के कारण लगभग 120 दिनों या कुछ अधिक चलते हैं। नदियों की गहराई न्यूनतम अपेक्षित गहराई 2.5 मीटर से कम है। प्रस्तावित आई एल आर ग्रिड राष्ट्रीय नौपरिवहन के माध्यम से अंतर्देशीय जलपरिवहन लागू कर सड़क एवं रोल

परिवहन पर पड़ने वाले भार को कम करेगा। लघु एवं मध्यम सिंचाई परियोजनाओं की सीमित क्षमता और उत्तर भारत के जल दुर्लभ क्षेत्रों में पानी की भारी मांग जो कि भारत का अन्न भंडार भी है, नदियों के अंतर्योजन को एक मजबूत प्रकरण बना दिया है। इस परियोजना से भी अंतर्देशीय जल परिवहन का एक विशाल नेटवर्क निर्मित होगा जो परिवहन की लागत एवं भूतल परिवहन पर पड़ने वाले दबाव के साथ–साथ वायु प्रदूषण को भी कम करेगा। परियोजना को लागू करते समय संसाधन प्रबंधन, राज्यों के बीच करार की बड़ी चुनौतियाँ होंगी, किंतु पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव से बचने का अवसर भी मिलेगा। आई एल आर परियोजना हमारी अर्थव्यवस्था को आदर्श दोहरे अंक की वृद्धि की ओर ले जाने में अत्यधिक सहायक होगी। लघु योजन परियोजनाओं के लाभों से इनकार नहीं किया जा सकता, इसलिए नदी योजन परियोजनाओं पर प्रकरण–दर–प्रकरण निर्णय लेने की आवश्यकता होगी। जलशक्ति मंत्रालय एवं संरक्षणवादियों द्वारा गठित परिस्थितिक विज्ञान शास्त्रियों, जल विज्ञानियों, जल व्यावसायियों के विशेषज्ञों के पैनल द्वारा रणनीति बनाई एवं कार्यान्वित की जानी चाहिए। किंतु विकास प्रक्रिया सदैव पर्यावरण के लिए खतरा पैदा करती है। ऐसी योजनाओं से जुड़े प्रतिकूल परिणामों को सदैव ध्यान में रखा जाना चाहिए।

राज्यों को बोर्ड पर लाना

पेरियार परियोजना परम्बिकुलम–अलियार, कुरनूल–कड़प्पा नहर, तेलुगू गंगा परियोजना एवं रावी–व्यास सतलुज–इंदिरा गाँधी नहर परियोजना जैसे अनेक पहल नदी अंतर्योजन के सफल क्रियान्वयन के उदाहरण हैं। परियोजना के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन हेतु राज्यों को आगे आने के लिए राजी करने की आवश्यकता है, क्योंकि जल राज्यों का विषय है। आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, पुडुचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश प्रमुख राज्य हैं जो परियोजना से लाभान्वित होंगे। कई राज्यों ने योजना का समर्थन किया है जबकि कुछ अन्य ने चिंता जताई है। यदि हम (अधिशेष) नदियों पर जलाशयों का निर्माण कर सकते हैं तथा उन्हें देश के अन्य भागों से जोड़कर क्षेत्रीय असंतुलन कम करने के साथ–साथ अतिरिक्त सिंचाई, घरेलू एवं औद्योगिक जलापूर्ति, जलविद्युत उत्पादन और परिवहन की सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं। केन बेतवा लिंक परियोजना (के बी एल पी) राज्यों के बीच आपसी विश्वास का ज्वलंत उदाहरण हो सकता है, जहाँ सूखाग्रस्त बुंदेलखंड क्षेत्र भयंकर जलसंकट का सामना कर रहा है, वह भी नदी अंतर्योजन का फल पा सकेगा, क्योंकि केंद्र सरकार ने केन–बेतवा लिंक परियोजना को लागू करने तथा उसके जल को मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में भेजने के उद्देश्य से व्यापक पैमाने पर कार्य शुरू कर दिया है।

समापन टिप्पणी

भूमि के उपयोग और पानी की मात्रा से जुड़े परस्पर मुद्दों को एक साथ सबसे अच्छी तरह संबोधित किया जाता है और सबसे कुशल तरीका होता है बेसिन प्रबंधन समाधानों की योजना बनाने के लिए उप–बेसिन का उपयोग करना। इसके साथ आई एल आर बेसिन क्षेत्रों में अंततः कुछ नए एवं व्यापक प्रयास शुरू करेगा, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। निश्चित रूप से आई एल आर की कुछ परियोजनाओं के माध्यम से भूजल के आधार प्रवाह के सूखने के कारण नदियों पर आने वाले भावी संकट को कम किया जा सकेगा। नदियों के अंतर्योजन की आवश्यकता और व्यवहार्यता पर संघीय मुद्दों को आसान बनाने पर समुचित जोर देते हुए पहले से ही पानी की कमी वाले राज्यों में बढ़ती कमी के समाधान के लिए प्रकरण–दर–प्रकरण आधार पर विचार किया

जाना चाहिए। एक उपयुक्त नियोजित जल संसाधन विकास और प्रबंधन गरीबी को कम करने, जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने, क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने तथा प्राकृतिक पर्यावरण को बनाए रखने में सक्षम होगा। यह आवश्यक है कि जरूरी पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों को व्यापक ई आई ए और एस आई ए मानको के अनुरूप समन्वित तरीके से लागू किया जाए। अतः सहकारी प्रयासों को मजबूती और विस्तार देने के लिए व्यापक ई आई ए और एस आई ए को समन्वित तरीके से लागू किया गया है। इसलिए सह–बेसिन राज्यों के बीच सहकारी प्रयासों को मजबूत करने एवं विस्तार हेतु नदी घाटी प्राधिकरण के गठन के माध्यम से पुनर्वास एवं उपयुक्त वनीकरण से संबंधित एन आर एल पी कार्यान्वयन के लिए कानूनी प्रावधानों के साथ सह–तटवर्ती संबंधों को बढ़ावा मिलेगा।

भारतीय अंग्रेजी में सामाजिक–सांस्कृतिक पहलुओं और अभिव्यक्ति का अनुवादः हिन्दी के विशेष संदर्भ में

डॉ. अनिल कुमार द्विवेदी

एक भाषा में कही गई बात को ठीक उसी ढंग से अन्य भाषा में कहे जाने को अनुवाद कहते हैं। यह एक भाषा वक्ता की स्रोत भाषा कही जाती है और जिस भाषा में संदेश दिया जाता है या कहा जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहा जाता है। रोम से अनुवाद कर्म की नींव पड़ी। इसके बाद पूरे यूरोप में अनुवाद फलने–फूलने लगा और जिसकी परिणति श्री जान हैरिंगटन, विलियम गोल्डिंग, एनीबाले कारो आदि विद्वत अनुवादकों के साहित्यिक कर्म के रूप में हुई। यद्यपि कई लोगों ने बहुत सारे धार्मिक और साहित्यिक कृतियों का अनुवाद किया है, फिर भी किसी विद्वान नें अनुवाद के निश्चित सिद्धांतों पर न तो कोई चर्चा ही की और न ही कोई सिद्धांत ही स्थापित किया। लेकिन कालांतर में पुनर्जागरण के अंतिम दौर में विद्वानों के बीच अनुवाद सिद्धांतों को स्थापित करने की आवश्यकता महसूस होने लगी।

अनुवाद एक भाषा वैज्ञानिक गतिविधि है। परंतु अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा अर्थात दोनों भाषाओं का अपना महत्व होता है। इनका अपना अलग सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक संदर्भ एवं भौगोलिक महत्व होता है जो सामान्यतः समान नहीं होते हैं। हर भाषा की अपनी विशाल शक्ति और सामान्य संवेदनशीलता होती है। अनुवाद एक बहुआयामी और बहुभाषी भाषावैज्ञानिक गतिविधि है जो सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देता है।

दो या दो से अधिक भिन्न भाषा भाषी समुदायों के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। अंग्रेजी भारत पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के उपरांत एक उप–उत्पाद के रूप में फली–फूली भाषा है। सबसे पहले अंग्रेजी ने भारतीय सांस्कृतिक संबंधों एवं संदर्भों को छूने के लिए और अपने भाव उन तक पहुंचाने के लिए हिन्दी के अधिकतर शब्दों, मुहावरों, आादि को अंग्रेजी शब्द कोश में शामिल किया फिर, उसके बाद हिन्दी से उधार के रूप में अंग्रेजी में शामिल किए गए शब्दों को अंग्रेजी भाषा की प्रकृति एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप इनका उपयोग किया जाने लगा। बाद में इन शब्दों को भाषाविज्ञान में गृहीत शब्दों की संज्ञा दी गई। भारतीय अंग्रेजी में सृजनात्मकता के नाम पर अंग्रेजी के शब्द संसाधनों को समृद्ध कर द्विभाषिकता के प्रवेश द्वार पर भारतीय जनमानस को खड़ा कर दिया गया जोकि वर्तमान में सांस्कृतिक और भाषिक संक्रमण के रूप में परिलक्षित हो रहा है।

वास्तव में लेखक जब किसी विषय पर लिखते हैं तो वे मानक ब्रिटिश अंग्रेजी को भारतीय अर्थ में निरूपित करने में अपने आप को असहाय पाते हैं। क्योंकि इसमें सटीक शब्द संग्रह नहीं है जो भारतीय संस्कृति एवं परिवेश में वांछित अभिव्यक्ति के समान या लगभग उस अर्थ को दर्शाने की स्थिति में हो। इसीलिए लेखक या तो भारतीय संदर्भ या अर्थ अभिव्यक्ति के लिए लिप्यंतरण का उपयोग करते हैं या फिर इसके लिए अनुवाद में संदेश को उस अर्थ तक पहुंचाने के लिए अपना भरसक प्रयास करते हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रयास कहां तक सफल हो पाता है यह सुधी पाठकों की ग्रहणशीलता, संप्रेषणीयता या अनुवाद के भाषावैज्ञानिक सिद्धांतो की कसौटी पर ही कसा जा सकता है। कभी–कभी अनुवाद में इस प्रकार का प्रयोग सफल हो जाता है और कभी–कभी यह प्रयोग असफल भी पाया गया है। परंतु जब सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों की बात हो तो वहां पर स्थिति अलग हो जाती है और अर्थ का अनर्थ होने की स्थिति बनती है। उदाहरण स्वरूप इस संदर्भों में पाए गए विभिन्न प्रकार के अनुवादों और भाव अभिव्यक्तियों को यहां दिया जा रहा है–

सहायक निदेशक (राजभाषा)

1. लिप्यंतरण

क्र.सं.	हिन्दी शब्द / वाक्यांश / अभिव्यक्तियां	सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का अनुवादः शब्दों / उपवाक्यों द्वारा शब्द / उपवाक्य के संदर्भ में।
1.	भारतीय परंपरा और संस्कृति में यह मान्यता है कि किसी नए कार्य के शुभारंभ से पहले बलिदान के प्रतीक के रूप में नारियल की **'बलि'** दी जाती है। अर्थात नारियल फोड़ा जाता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	……..The station building was ready…… coconuts were broken on the railway track. (The Guide, pg27) नारियल की 'बलि' देना और उसे **तोड़ना दोनों अलग अलग शब्द हैं और उनका अलग अलग संदर्भ है।**
2.	शुभ अवसरों पर लाल धागा बांधा जाता है जिसे संस्कृतिक एवं पारंपरिक सदंर्भ में **'कलावा'** कहा जाता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Ashima ties red threads for good luck to a marble lattice screen (The Namesake, pg85) यहां पर **'रेड थ्रेड'** अर्थात लाल रंग का धागा अनुवाद भारतीय संस्कृति के रीति रिवाजों और शुभ अवसरों पर बांधे जाने वाले **'कलावा'** की भावभूमि पाठकों तक नहीं पहुंचा पा रहा है। यह केवल भाषांतरण मात्र है।
3.	सायं काल अर्थात **'गोधूलि वेला'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Cow dust hour (The strange case of Billy Biswas, pg99) **'अर्थात सायं को गायों के चलने के समय उड़ने वाली धूलि की अवधि'** गोधूलि का अंग्रेजी अनुवाद भारतीय सांस्कृतिक रीति और पारंपरिक भाव को उत्पन्न नहीं कर पा रहा है। यह केवल भाषांतरण मात्र है।
4.	**गरीब खाना / कुटिया** भारतीय संदर्भ में लोग अपने व्यक्तित्व की गंभीरता दर्शाने के लिए अपने बड़े से बड़े मकान को भी अपना गरीब खाना या कुटिया कहकर संबोधित करते हैं। इस शब्द से वक्ता के वार्तालाप में अहम की जगह उसकी सरलता एवं सहृदयता परिलक्षित होती है। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Humble cottage (Kanthapura, pg7) इसका पुनः हिन्दी अनुवाद विनम्र कुटिया होता है यह किसी कुटिया का नाम तो हो सकता है परंतु अनुवाद की दृष्टि से यह **गरीब खाना / कुटिया** का पूर्णभाव बिल्कुल नहीं दे सकता।
5.	हिन्दी भाषा में **''बाप का नौकर''** उपवाक्य गुस्से या अपशब्दों की अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। मानवीय व्यवहार में उसकी प्रकृति और तात्कालिक क्षण की मनोदशा के अनुसार यह संभव भी होता है। जो अच्छे व्यवहार की श्रेणी में नहीं आता।	I am not your Father's servant (Coolie, pg229) यहां पर हिन्दी ''बाप का नौकर'' का अंग्रेजी में शाब्दिक अनुवाद किया गया है जो मूल की भावना को नही छू पाता है तथा मात्र शाब्दिक अनुवाद बन कर साहित्य की शोभा बढ़ा रहा है परंतु संदर्भ की व्यापकता को नहीं छू पाता है।
6.	**'जीवन साथी का चयन'** अर्थात वर द्वारा कन्या तथा कन्या द्वारा वर के चयन को जीवन साथी का चयन कहा जाता है जोकि भारतीय परंपराओं के संदर्भ के अनुकूल एवं व्यावहारिक प्रयोग है। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	**Mate selection** (The last labyrinth, pg67) भारतीय संस्कृति में जीवन साथी के चयन की भावभूमि इतनी हल्की नहीं है जितनी कि पाश्चात्य संस्कृति में। अंग्रेजी **Mate** का हिन्दी अनुवाद साथी है। अब यह प्रश्न उठता है कि किस प्रकार का साथी? यहां यह स्पष्ट नहीं है।

7.	**'गौ रक्षा'** अर्थात गाय की रक्षा करना। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Protection of Cow (Untouchable, pg124) हिन्दू मान्यताओं के अनुसार गाय के 'रोम–रोम' में भगवान का निवास है और इसके प्रति अगाध आस्था रखते हुए हम इसकी हर दृष्टि से सुरक्षा के संस्कार अपने परिवार और समाज को देते हैं यह हमारे जीवन में एक मान्यता और संस्कार के रूप में विद्यमान है जिसकी भावभूमि अंग्रेजी के Protection से कहीं बढ़कर प्रतीत होती है।
8.	**'नमस्कार'** (अभिवादन की भारतीय पद्धति) इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Put her palms together (India: A million munities now, pg20) इसका शाब्दिक अनुवाद 'उसने अपने दोनों हाथ जोड़ या एक साथ रखा' । अतः मात्र इतने से ही नमस्कार पूर्ण प्रतीत नहीं होता है बल्कि अभिवादन के भाव भी होते हैं। यह संस्कृतिक परंपरा केवल भारत में ही है अन्य देशों में अभिवादन के अन्य तरीके हैं।
9.	**धार्मिक कर्मकांड में प्रयुक्त होने वाले 'हवनकुंड'**का अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Rice poured in to a pyre…..... (The Namesake, pg222) अंग्रेजी मे हवनकुंड का कोई समानार्थी या अंग्रेजी विकल्प नहीं है। यहां हवन करने के लिऐ कहा गया है कि Rice poured in to a pyre. Pyre का हिन्दी अर्थ चिता होती है। अब यहां हवन करना ईशभक्ति और सद्कर्म का परिचायक है। जबकि चिता पर मृत्यु के पश्चात लाश जलाई जाती है। यहां अनुवाद में शुभता और अशुभता के बीच पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति के संदर्भगत अर्थ ग्रहण का द्वंद है। पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार इसका हिन्दी अनुवाद है चिता पर हवन करना या चावल डालना जो कि भारतीय संस्कृति के विपरीत है।
10.	**व्याख्यात्मक अनुवाद** **'दातून करना'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Rubbring his teeth with a twig from neem tree (The white tiger, pg109) का शाब्दिक अनुवाद अर्थात **नीम के पेड़ की टहनी दांत पर रगड़ना**। यहां **'दातून करने** की क्रिया का व्याख्यात्मक अनुवाद कर दातून की भावभूमि छूने का प्रयास किया गया है। संदर्भ को देखते हुए कुछ हद तक तो भाव स्पष्ट हो सकता है परंतु भाषा की दृष्टि से नहीं।
11.	**अंतिम संस्कार के बाद 'क्रिया पर बैठना'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Sitting unshaven on chair starting through them, speaking to no one….. meals eaten in complete silence. The television turned off…… this meal less meal in only things that seems to make sense. (The Namesake, pg180) **हिन्दी के 'क्रिया पर बैठना'** का अंग्रेजी में कोई सटीक **शब्द** या उपवाक्य नहीं है। इसलिए व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उनका अंतिम संस्कार करने वाले व्यक्ति द्वारा रखी जाने वाली दैनिक पारंपरिक सावधानियों, आचार–व्यवहार, खान–पान आदि का भरतीय संदर्भ में

		व्याख्यात्मक अनुवाद किया है जिसे यदि पुस्तक के संदर्भ आदि से जोड़कर न देखा जाये तो इस व्याख्यात्मक विवरण का **'किया पर बैठना'** जैसे पारंपरिक रीति रिवाज और संस्कारों के संदर्भ में इसका कोई अर्थ नहीं होगा।
12.	**'चरण स्पर्श करना'/ 'चरण रज लेना'** आदर और सम्मान का प्रतीक व्यवहार। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	……and touch the dust under his sleepers. (The white tiger, pg25) यहां इसका शाब्दिक अनुवाद 'और उसने उसके चप्पल के नीचे की घूल को छुआ' होगा। **'चरण स्पर्श करना'/ 'चरण रज लेना'** के लिए अंग्रेजी में कोई सटीक **शब्द** या उपवाक्य नहीं है।**'चरण स्पर्श करना'/ 'चरण रज लेना'** भारतीय संस्कृति और परंपरा का एक विशिष्ट प्रतीक है जिसे अपने से बड़े, सम्माननीय, विद्वान, गुरू आदि को सम्मान देने के लिए ऐसा किया जाता है। परंतु पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा नहीं है। इसलिए लेखक ने निहित भावों को भारतीय संस्कृति के करीब लाने का प्रयास किया है जिसे कि सांस्कृतिक संदर्भ में स्पष्ट अनुवाद की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।
13.	**विवाह के संदर्भ मे 'मजाक का रिश्ता'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	"Indian girls never make eye at anyone expect at the marriages of their elder sister"…….. (An Indian Dream By M.J. Akbar, Best Indian stories, Vol-I) यहां संदर्भ में भारतीय सांस्कृतिक परिवेश की पूर्ण झांकी प्रस्तुत की गई है। परंतु यदि इसका अनुवाद मजाक का रिश्ता माना जाये, यह सटीक प्रतीत नहीं होता है।
14.	**'शगुन'** भारतीय संस्कृति में विवाह के अवसर पर वर या कन्या को उसके हितैषियों, रिश्तेदारों, शुभचिंतकों परिवारीजनों आदि द्वारा आशीर्वाद के रूप में दी जाने वाली राशि को 'शगुन' कहते हैं। जबकि पाश्चात्य संस्कृति में यह उपहार आदि के रूप में प्रचलित है। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	The Amount's are for one hundred and one dollars (or rupee), two hundred one dollars, occasionally three hundred and one dollars, as Bengali consider it inauspicious to give round figures. (The Namesake, pg227)
15.	**'चंदन'** धार्मिक आस्था के रूप में भक्त अपने माथे पर लगाता है। यह कई रंग आकार और प्रकार में लगाया जाता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	His tiny forehead has been decorated with struggle with sandal wood paste to farm miniature beige moons floating above his brows. (The Namesake, pg39)
16.	**'सुहागन'** अर्थात जिस विवाहिता स्त्री का पति जीवित हो। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	……to bear a font end of cane bed uncles holding up the other end…….. my mother's body had been wrapped from head to toe in a saffron silk cloth which was covered in raze petals and Jasmine garlands. My aunts……. clapping their hands for me to…… shiv's name is truth (The white tiger, pg19)

		इस व्याख्यात्मक अनुवाद में शवयात्रा की झलक मिलती है। परंतु पहने हुए कपड़े एवं श्रंगार सुहागन के प्रतीक हैं। तथा भगवान शिव की सत्ता में आस्था की भी अभिव्यक्ति है।
17.	**'मांग से सिंदूर पोंछना'** विवाहित महिला के पति की मृत्यु होने का प्रतीक। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	(…… her mother's) Vermillion erased from her part…….. (The Namesake, pg47) मांग से सिंदूर पोंछना विधवा होने अर्थात किसी विवाहित महिला के पति का देहांत होने का प्रतीक है। यह मात्र Vermillion erased का हिन्दी अनुवाद ही नहीं बल्कि इससे ऊपर उठकर दाम्पत्य जीवन के आधार का प्रश्न है।
18.	**'भोग लगाना/ प्रसाद चढ़ाना'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Offering are made to pictures of their grandparents and father (The Namesake, pg222) यहां अंग्रेजी अनुवाद में खाने का अवसर देने का भाव है न कि सम्मानजनक तरीके से खाने की कोई वस्तु खिलाना। खाने का अवसर देना और भावपूर्वक खिलाना दोनों मे सांस्कृति अंतर है।

संकर अनुवादः

संकरित अनुवाद में पाठकों को सटीक एवं संदर्भगत अनुवाद और उसकी अर्थ संगति पाठकों तक पहुंचाने के लिए स्रोत भाषा के मुख्य शब्द को लिया जाता है, उदाहरण के लिए–

1.	शब्द / उपवाक्य / अभिव्यक्ति	संकर अनुवाद
	'पर्दा प्रथा' इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Purda system (Purda and Polygamy, pg18)
2.	**'पान खाकर पीक थूकने वाला'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Pan and Spit man (The white Tiger, pg55)
3.	**'पान'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Munching Pan (The Guide, pg171)

विश्लेषणात्मक अनुवादः

विश्लेषणात्मक अनुवाद में अर्थ स्पष्टीकरण एवं संप्रेषणीयता को केन्द्र में रखते हुए भाषा में निहित सामाजिक और सांस्कृतिक अंतरण के कारण इसका अर्थ स्रोत भाषा में महत्वपूर्ण है लेकिन लक्ष्य भाषा में यह अप्रासंगिक प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए–

1.	**'ससुराल'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	Father in law's house (The cabuliwala, pg9)
2.	**'सहभोज'** इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	To share rice with (The Namesake, 59)
3.	**'पंच तत्व'** (भारतीय संस्कृति में यह विश्वास है कि मानव के शरीर से प्राण निकलने के बाद शव का जल्द ही अंतिम संस्कार किया जाता है ताकि पंच तत्वों से बना शरीर जल्द से जल्द ब्रहमांड में मिल जाए। अर्थात जहां से उत्पत्ति वहीं पुनः मिल जाना। इसका अंग्रेजी अनुवाद देखें।	To know that he himself will be burned, not buried, that him body will occupy no plot on earth, that no stone in this country will bear his name beyond life. (The Namesake, pg69)

इस प्रकार लिप्यंतरण, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक अनुवाद के संदर्भ में मूल रूप से यही निकल कर आता है कि सांस्कृतिक संदर्भ में अनुवाद तो किया जा सकता है परंतु अनूदित कृति में अनुवाद की गंध और अनुवाद में शुभता और अशुभता के बीच पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति के संदर्भगत अर्थ ग्रहण के द्वंद को कम नहीं किया जा सकता है। यह सत्य है कि विशेषकर भारतीय सांस्कृतिक, साहित्यिक, परंपरा, रीति, रिवाजों, प्रचलनों, शुभ अवसरों, मान्यताओं के प्रचार–प्रसार के लिए अनुवाद कर्म को एक पुल की तरह प्रयोग करने का प्रयास किया जाता रहा है परंतु इस तथ्य को भी स्वीकार करना पड़ेगा कि अनुवाद के माध्यम से पाठको के मध्य जो अर्थ ग्रहण एवं संप्रेषण में अर्थ विचलन होता है वह भी कमतर प्रतीत नहीं होता है।

पर्यावरण असंतुलन, कोरोना और हम

ललित कुमार स्यानियॉ,

1) भूमिका

इन दिनों पूरी दुनिया एक अनूठे अनुभव से गुजर रही है। कोरोना महामारी से लड़ते हुए बहुत से देशों ने लॉकडाउन देखा, सामाजिक आदान–प्रदान में बदलाव देखा और आइसोलेशन की चुनौती स्वीकार की है। इस मुश्किल वक्त में कुदरत लगातार हमारी दोस्त बनी रही। इस दौरान हमने पक्षियों पर ध्यान दिया और खुश हुए कि उनका गाना सुन सकते हैं। आखिरकार हमने नाजुक सी तितलियों के परों की चमक देखी, कतार बनाकर चलती चीटियों को भी देखा, हरे–सुनहरे पेड़ों को देखा जो सुहावनी हवा में झूलते हैं। हमने सूरज का उगना – डूबना देखा और सितारों से भरी रात भी तो देखी है। कुदरत की खूबसूरती को निहारते हुए हमें उस संदेश को भी समझना चाहिए जो इस वक्त कुदरत ने हमें दिया।

कोरोना महामारी मानवता के आड़े तभी आई, जब हमने कुदरत से छेड़खानी की, जैसे लगातार प्राकृतिक संसाधनों की खपत करने से पर्यावरण में बदलाव हुआ। अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए हम उस धरती का शोषण करते चले गये जिसे हम अपना घर कहते हैं। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन की वजह से दुनियाभर में तापमान बढ़ा है। यह हमने विज्ञान की आंखों से दखा। यह सच है कि ग्लेशियर पिघल रहे हैं या समुद्र का स्तर ऊंचा हो रहा है, जंगल कम हो रहे हैं और सूखा व बेमौसम तूफान आने लगे हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि अगर हम इसी तरह पर्यावरण का नुकसान करते रहे तो क्लाइमेट चेंज का ऐसा असर हो सकता है जिसके आगे यह महामारी बहुत छोटी लगे। अपने आसपास हुए खूबसूरत बदलावों पर आज एक नज़र डालते हैं क्योंकि अब भी हम बदलेंगे तो पाने के लिए हमारे पास सबकुछ होगा।

2) नदी, बारिश, हवा और दवा, सब कुछ हिमालय

हिमालय पर्वत हमारे देश के लिये किसी व्यक्ति के सिर पर विराजित मुकुट के समान है जो हर आने वाली विपदा से उसकी रक्षा करता है। ज्ञात हो कि हिमालय के संसाधनों के बड़े हिस्से का लाभ देश के सभी क्षेत्र उठाते हैं। हिमालय के स्थानीय राज्यों के खाते में आने वाला लाभ करीब 10 फीसदी ही होता है। इसलिए हिमालय की चिंता करना सबका दायित्व होना चाहिए।

हिंदूकुश में सूखा

हमने हिमालय के विकास के लिए जो मापदंड तैयार किए वे उसी रुटीन के अंतर्गत थे जो मैदानी क्षेत्रों के लिए तय किए गए थे– सड़कों का जाल बिछाना, नए–नए उद्योग लगाना, बड़ी परियोजनाएं शुरू करना। यह समझना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि हिमालय के हालात को आज हम अच्छे दर्जे में नहीं रख सकते। आज इस तर्ज पर भी सोचने की जरूरत है कि अगर हिमालय नहीं होता तो उसके क्या परिणाम हो सकते थे। पहला बड़ा असर शायद पूरे हिंदूकुश क्षेत्र में बहुत बड़े सूखे के रूप में पड़ा होता। मानसून देश में दक्षिण भारत से चलते हुए उत्तर भारत में मात्र हिमालय के कारण ही वर्षा देता है। हिमालय मानसूनी हवाओं के जल से पूरे देश को सींचता है और यही जल हिमखंडों का भी निर्माण करता है। ये हिमखंड ही हैं जो हिमनदियों का रूप धारण

सहायक अभियन्ता

करके आगे बढ़ते हुए इस पूरे क्षेत्र में जीवन को संबल देते हैं। हरित क्रांति जैसी देश की आर्थिक सूरत बदलने वाली क्रांतियां भी इसी बदौलत संभव हुईं।

सीधे शब्दों में कहा जाए तो अगर हिमालय नहीं होता तो देश के उस पार वर्षा होती और यह पूरा क्षेत्र जल विहीन होता। यानी 3 लाख 50 हजार वर्ग किमी का यह क्षेत्र बंजर ही होता। मध्य एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप के मध्य एक प्राकृतिक अवरोध की तरह खड़ा है हिमालय, जो हमें शीतकालीन शुष्क और सर्द हवाओं से भी बचाता है। हिमालय नहीं होता तो हम बढ़ते प्रदूषण के कारण बड़े पर्यावरणीय संकट से घिर जाते। कार्बन डाईऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों के प्रभावों से हमें बचाने में हिमालय के वनों का बहुत बड़ा हाथ है।

हिमालय देश का बहुत बड़ा बायो डायवर्सिटी स्पॉट भी है। दुनिया के जैव विविधता वाले 34 हॉट स्पॉट हिमालय में हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो यहां विभिन्न तरह की प्रजातियां हैं, चाहे वे खेती–बाड़ी से जुडी हों या वनों से या तमाम तरह के जीवों से। हिमालय ऐसी प्रजातियों का सबसे बड़ा क्षेत्र है। यह भी हमारे संज्ञान में होना चाहिए कि आज दुनिया भर में जितनी भी तरह की फसलें या सब्जियां हम खाते हैं उनका बहुत बड़ा जैविक केंद्र हिमालय ही है। भोजन के काम आने वाली विभिन्न तरह की प्रजातियां हिमालय की ही देन हैं। अपने देश में हिमालयी क्षेत्र संवहनी पौधों की 8000 से अधिक प्रजातियों का घर है, जिनमें से 1748 औषधीय गुण वाले पौधे हैं। ज्ञात हो कि रामायण काल में भी लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा के लिए हनुमान जी हिमालय पर्वत से ही संजीवनी बूटी लेकर आये थे।

देश की नदियों को देखें तो 19 बड़ी और 70 से ज्यादा छोटी नदियां पूरे हिमालय क्षेत्र से निकलती हैं, चाहें वे तीस्ता, ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना हों या जम्मू–कश्मीर से जुड़ी हुई झेलम, चेनाब जैसी नदियां हों। ये पूरे देश को पालती हैं। भले इनका छोटा ही हिस्सा स्थानीय रूप से कहीं प्रयोग में आता हो लेकिन देश की आर्थिकी और पारिस्थितिकी के नियंत्रण में इनकी बड़ी भूमिका है। इनसे जुड़े 9000 हिमखंड हैं जो इन्हें पानी मुहैया कराते हैं। वे देश के लिए भी जल डिपॉजिट हैं। साथ में सैकड़ों बांध जो हिमालय को भेदते हैं वे इन्हीं नदियों पर बने हैं।

इन सबके अलावा हिमालय हमारे लिए एक रक्षक के रूप में भी अपनी भूमिका निभाता है। उच्च हिमालय की दुर्गम पहाड़ियां हमारी ढाल का कार्य करती हैं। यह बहुत बड़ा रक्षा कवच है जो आज भी दुश्मनों का हम तक पहुंचना और हमारे लिए चुनौती खड़ी करना कठिन तो बना ही देता है। आध्यात्मिक दृष्टि से भी हिमालय की सर्वोच्चता जगजाहिर है। देश के सबसे बड़े धाम ब्रदीनाथ, केदारनाथ इसी श्रृंखला का हिस्सा हैं। हिमालय में तमाम देवी–देवताओं का निवास माना जाता रहा है। साफ है कि इतनी महत्वपूर्ण श्रृंखला को समझने में हमसे चूक हुई है। इसके संरक्षण को लेकर हम कतई गंभीर नहीं हैं। कम से कम 18 देशों का जीवन इस श्रृंखला से सीधे तौर पर जुड़ा है। कुदरत का जो बड़ा मंजर कहीं–कहीं बचा है, उनमें प्रमुख है हिमालय। इसलिए हिमालय है तो हम हैं।

3) दम घोंटती हवा में खुलकर सांस लें तो कैसे

अब अगर प्राणवायु ही प्राण लेने पर उतारू हो जाए, तो फिर कुछ बचने की गुंजाइश कैसे रहेगी। ताजा ग्लोबल एयर रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में जिस तरह की परिस्थितियां बनी हैं उनमें प्राणवायु में सुधार की उम्मीद करना कठिन से कठिनतर होता जा रहा है। रिपोर्ट बताती है कि दुनिया भर में 64 लाख लोग आजकल इसके सीधे शिकार हो रहे हैं। भारत की भी हिस्सेदारी इसमें अच्छी–खासी है। यहां पिछले साल 16 लाख लोग इसकी वजह से मौत का शिकार हुए हैं जो चीन में होने वाली मौतों (18 लाख) से कुछ ही कम है। ठोस अध्ययन के अभाव में अभी प्रामाणिकता और सटीकता के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि कोरोना के चलते जो लॉकडाउन हुआ उसके परिणामस्परूप स्थितियां कितनी बेहतर हुई। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि लॉकडाउन से प्रदूषण के मोर्चे पर स्थितियों में सुधार हुए। इसकी सबसे बड़ी वजह तो यही रही कि इस दौरान यातायात पर विराम लगा हुआ था।

छोटे बच्चों पर ज्यादा असर

एक अध्ययन के मुताबिक एलपीजी गैस की योजना से गांवों में वायु प्रदूषण में कमी हुई है। लेकिन ऐसे तात्कालिक और छोटे–मोटे सुधारों से बात नहीं बनने वाली। भारत में शहरी क्षेत्रों में करीब 40 प्रतिशत बच्चे रहते हैं। अगर वहां गैस चैंबर जैसे हालात पैदा हो रहे हैं तो समझा जा सकता है कि देश के भविष्य को हमने किस हाल में रख छोड़ा है। सर्दियों में हालात और खराब इसलिए हो जाते हैं क्योंकि स्मोक और फॉग मिलकर स्मॉग बनाते हैं जो ज्यादा नुकसान पहुंचाता है।

वायु प्रदूषण कैसे दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पीएम 2.5, जो कि हवा को खराब करने वाला सबसे बड़ा कारक है, उसमें पिछले 10 वर्षों में करीब 61 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। ओजोन परत में छेद के प्रभावों से जोड़कर देखें तो यह और ज्यादा खतरनाक बन जाता है। साफ है कि हम वायु प्रदूषण को हल्के में नहीं ले सकते। इसके लिए हर तरह से किए जाने वाले प्रयत्नों पर गौर करने की जरूरत है। यह एक ऐसी समस्या है जिसका हल मात्र सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए बड़े स्तर पर जनजागरण की भी आवश्यकता है। हमें व्यक्तिगत स्तर पर भी अपनी कई तरह की गतिविधियों पर अंकुश लगाने होंगे। इनमें निर्माण कार्य, यातायात, उद्योग आदि से जुड़ी ऐसी गतिविधियां शामिल हैं जिन्हें आम तौर पर हम अनिवार्य की श्रेणी में रखते हैं।

इसके लिए कड़े फैसलों की तरफ जाना होगा क्योंकि जीवन के लिए प्राणवायु सबसे महत्वपूर्ण है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में सख्ती दिखाते हुए सरकारों को कहा है कि तत्काल कदम उठाए जाएं। जाहिर है, सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुरूप नीतियां बनाएगी, लेकिन अपनी जीवनशैली में स्वैच्छिक सुधार से ज्यादा असरदार कुछ और नहीं हो सकता।

ध्यान रहे, दिल्ली में ही लाखों की संख्या में डीजल इंजन वाली गाड़ियां चलती हैं जो वायु प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत हैं। गाड़ियों की भरमार के साथ ट्रैफिक जाम की समस्या आती है और

दिल्ली की हवा बिगाड़ने में इसका भी अहम योगदान है। ऐसे में अगर लोग अपनी जीवनशैली में बदलाव लाते हुए पब्लिक ट्रांसपोर्ट से ही आने जाने का मन बना लें तो सिर्फ इसी एक उपाय से 30–40 फीसदी प्रदूषण पर अंकुश लगना संभव है। भारत में सालाना निकलने वाली करीब 60 करोड़ टन पराली का जलाया जाना एक अलग समस्या है। इस पर बातें काफी हुई हैं, लेकिन कोई ठोस समाधान इसका अभी तक नहीं निकाला जा सका है। जो समाधान सुझाए जा रहे हैं वे किसानों के हालात से मेल नहीं हो पा रहा और समस्या साल–दर–साल ज्यों की त्यों बनी हुई है। अब तक के अनुभव को देखते हुए कहना होगा कि बड़े और कड़े फैसले लेने से ज्यादा जरूरी है उन फैसलों पर सही ढंग से अमल सुनिश्चित करना। अगर ढंग से अमल न हुआ तो बड़े से बड़े फैसलों का भी कोई उपयोग नहीं है। सरकारें फैसला करती रहेंगी और सांस लेना मुश्किल से और ज्यादा मुश्किल होता जाएगा, जैसा कि पिछले काफी समय से होता चला आ रहा है।

4) लॉकडाउन में कारखाने बंद थे फिर भी नदियां कैसे हुईं मैली ?

कोरोना महामारी ने विध्वंस और निराशा की जो जटिल परत चढ़ा दी है, उससे उबरने में अभी वक्त लगेगा। लेकिन इस दौरान कुछ ऐसा भी हुआ जिस पर संतोष किया जा सकता है। वह है, पर्यावरण में आया बदलाव। जब कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए देशव्यापी लॉकडाउन लगाया गया और तमाम औद्योगिक इकाइयों की बंदी रही तो इसका स्वाभाविक असर यह हुआ कि पर्यावरण पहले की अपेक्षा थोड़ा स्वच्छ हो गया। खासकर स्वच्छ हवा के संदर्भ में यह परिवर्तन सबसे सुखद रहा। हालांकि यह भी एक सामान्य परिघटना नहीं बन सका, क्योंकि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की हालिया रिपोर्ट बताती है कि लॉकडाउन के दौरान भी कुछ नदियां पहले से अधिक प्रदूषित हो गईं।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों से यह निवेदन किया था कि वह लॉकडाउन के पहले और लॉकडाउन के दौरान नदी जल की शुद्धता का तुलनात्मक अध्ययन करें। इस प्रकार 20 राज्यों के प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों ने कुल 19 नदियों पर अध्ययन किया। लॉकडाउन के पूर्व यानी मार्च 2020 में इन्हीं नदियों के कुल 387 नमूनों की जांच की गई थी जिनमें 299 तय मानकों के अनुकूल थे। वहीं लॉकडाउन के दौरान, यानी अप्रैल 2020 में इन्हीं नदियों के कुल 365 नमूनों की जांच की गई जिनमें 277 ही तय मानकों के अनुकूल पाई गईं। हालांकि यह एक औसत अध्ययन है जिसका अर्थ है कि कुछ नदियों की गुणवत्ता में सुधार हुआ, कुछ यथावत रहीं और कुछ की गुणवत्ता में गिरावट आई।

आखिर ऐसे क्या कारण रहे कि कुछ नदियों का जल इस दौरान और अधिक प्रदूषित हो गया? इन 19 नदियों में कुल पांच ब्यास, चंबल, गंगा, सतलुज और सुबर्णरेखा ऐसी नदियां हैं, जिनके जल की गुणवत्ता और खराब हुई। इनमें भी चंबल, सुबर्णरेखा और गंगा के जल में क्रमशः 28.5, 26. 67 और 18.4 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। इस अध्ययन में नदियों के जल के अधिक प्रदूषित होने के कुछ कारणों की ओर संकेत किया गया है। इस दौरान इन नदियों में अंशतः बिना ट्रीट किए गए पानी को सीवेज में छोड़ा गया। दूसरा प्रमुख कारण प्रदूषकों के संकेन्द्रण का उच्चतम स्तर पर पहुंच जाना रहा और तीसरी वजह यह रही कि इस दौरान नदी को अपस्ट्रीम के कारण ताजे जल की प्राप्ति नहीं हो सकी।

ये आंकड़े इस बात की पुष्टि के लिए पर्याप्त हैं कि जितने जोर–शोर से नदियों को साफ करने का दावा किया जाता है, हकीकत उससे मेल नहीं खाती। इससे निराशाजनक बात क्या हो सकती है कि जब उद्योगों का संचालन नहीं हो रहा था तब भी गंगा गंदी हो रही थी। यह अध्ययन एक चेतावनी भी है कि अगर हम अब भी नहीं चेते तो हमें अपनी सदानीरा नदियों से हाथ धोना पड़ जाएगा।

5) अब कुदरत का भला किये बिना नहीं हो सकता अपना भी भला

हाल में ही वैज्ञानिकों ने पाया कि कुदरत के साथ जुड़ना इंसान के लिए कितना जरूरी है। इससे शारीरिक स्वास्थ्य जैसे सांस संबंधी या दिल से जुड़ी बीमारियां कम होती हैं। साथ ही मानसिक सेहत भी बनी रहती है। कुदरत के साथ जुड़ाव की वजह से तनाव कम होता है। शायद इसीलिए इन दिनों लोगों में कुदरत से जुड़ने की लहर–सी देखी गई।

सोशल मीडिया विश्लेषण से भी पता चला है कि कोरोना काल में लोगों ने घर के अंदर से भी कुदरत की सराहना की है और उसका आनंद लिया है। पिछले साल के मुकाबले देखें तो इस साल लोगों में कुदरत के प्रति जागरुकता और लगाव बढ़ा है। बहुत–से लोग समझ चुके हैं कि प्रकृति का भला किए बिना अपना भी भला नहीं होने वाला। वे छोटी–छोटी चीजें करते हैं, जैसे पक्षियों का गाना सुनना या कुदरत के लिए आगे बढ़कर सोचना। जो सोचने लगते हैं, वे फिर कुदरत के लिए काम करने लगते हैं।

कोरोना के इस कठिन समय से भी यह साफ संदेश मिला है कि कुदरत से जुड़ते चले जाने पर ही लोग इसके लिए कुछ करने की प्रेरणा पाते हैं। कुदरत के भाव और खूबसूरती को समझना, उसे सेलिब्रेट करना शुरू करेंगे तो यह हमारे टिकाऊ और मकसद वाले जीवन के लिए अच्छा रहेगा। इस कोरोना महामारी के दौरान बहुत–सी आवाजें उठीं कि हमें कुदरत के साथ नए सिरे से रिश्ता बनाना चाहिए। शहरों में शिक्षा और रोजगार को इससे जोड़ते हुए हम बड़े बदलाव कर सकते हैं। अब हमें कुदरत के बेजा इस्तेमाल पर काबू पाना होगा। इसी में हम सभी की भलाई है।

सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत फसलों की जल आवश्यकता (सकल सिंचाई माँग) के आँकलन के लिए प्रस्तावित पद्धति

शुभम कुमार

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा देश में जल के ईष्टतम उपयोग और विभिन्न हितधारकों को जल की उचित उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए जल के अधिकता वाले बेसिन से जलाभाव वाले बेसिन में जलापवर्तन हेतु विभिन्न लिंक परियोजनाओं का प्रस्तावित दिया गया है और इन प्रस्तावित परियोजनाओं के विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनाने का कार्य भी राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण कर रही है । किन्तु वर्तमान में अपवर्तन के लिए जल की उपलब्धता में आ रही कमी एक जटिल समस्या बनती जा रही है । इस समस्या का सामना करने के लिए एक सुझाव यह है कि विभिन्न परियोजनाओं के नए कमान क्षेत्रों में से कम से कम 50% क्षेत्र में सूक्ष्म सिंचाई पद्धति (ड्रिप सिंचाई अथवा ट्रिकल सिंचाई) अपनायी जाए । अब तक राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत फसलों की जल–आवश्यकता (GIR) के आँकलन के संबंध में कोई दिशानिर्देशन प्रचलित नहीं है । चूँकि वर्तमान में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में अनेक विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन समयबद्ध तरीके से बनाए जा रहे हैं, इसलिए सूक्ष्म सिंचाई के तहत ळप्ट की गणना के लिए उपयुक्त क्रियाविधि विकसित करने की आवश्यकता है ।

इस पृष्ठभूमि के साथ, मुख्य अभियंता (दक्षिण), अधीक्षण अभियंता और अधिशासी अभियंता, राजविअ, हैदराबाद के मार्गदर्शन में सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत फसलों की जल आवश्यकता (सकल सिंचाई माँग – GIR) के आँकलन करने की प्रक्रिया का प्रस्ताव तैयार किया गया । इस प्रक्रिया का उल्लेख करने से पूर्व, वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन (Evapotranspiration), फसल जल आवश्यकता (Crop Water Requirement), सूक्ष्म सिंचाई पद्धति (Micro Irrigation) और कुछ अन्य तकनीकी पदों से अवगत होना आवश्यक है ।

वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन (Evapo-Transpiration)

वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन दो अलग–अलग प्रक्रियाओं का संयोजन है जिसमें एक तरफ मिट्टी की सतह से वाष्पीकरण (Evaporation) द्वारा और दूसरी ओर फसल (तना, पत्ते, आदि) से वाष्पोत्सर्जन (Transpiration) द्वारा वायुमंडल में जल का स्थानांतरण हो जाता है । इस प्रक्रिया के कारण फसल कि सिंचाई हेतु उपबंधित किया गया जल वाष्प में परिवर्तित होकर लुप्त हो जाता है । इसके दो प्रकार होते हैं :–

1.स्थितिज वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन (Potential Evapotranspiration)- जब जल कि उपलब्धता पर्याप्त मात्र में (जरूरत से भी अधिक) हो तो ऐसी परिस्थिति में एक मानक फसल (reference crop) से होने वाले वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन को स्थितिज वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन कहते हैं । मानक फसल विशिष्ट विशेषताओं वाली एक घास होती है । जल की पर्याप्त मात्र में उपलब्धता के कारण सतह (मिट्टी आदि) की विशिष्टता का कोई प्रभाव इस प्रक्रिया पर नहीं पड़ता है ।

2. वास्तविक वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन (Actual Evapotranspiration)- जल व मिट्टी के इष्टतम परिस्थिति में बड़े क्षेत्र में उपजाए गए किसी रोग–मुक्त, पूर्ण–उर्वरित फसल जो निर्धारित मौसमी स्थिति में पूरी तरह से विकसित हो जाए, से होने वाले वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन को वास्तविक वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन कहते हैं ।

कनिष्ठ अभियंता, मुख्य अभियंता (दक्षिण)

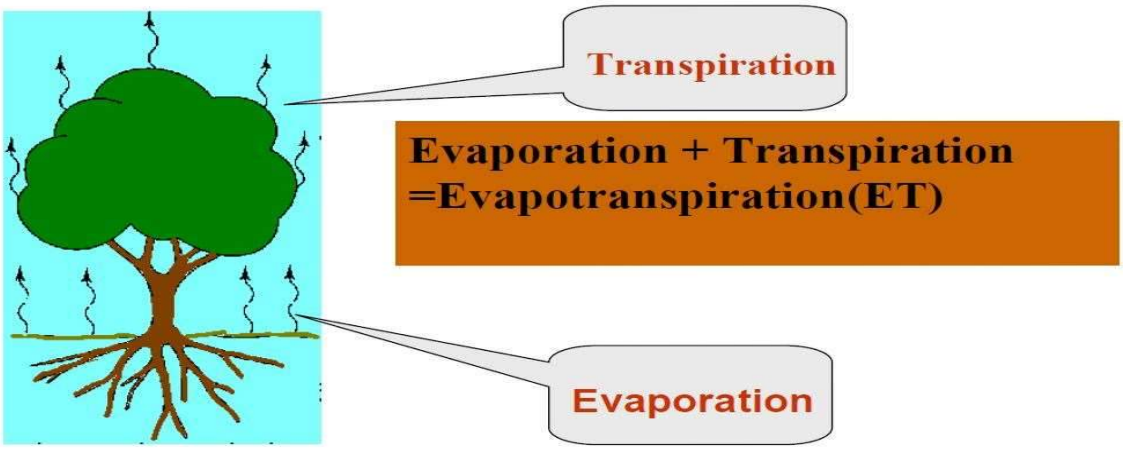

फसल जल आवश्यकता (Crop Water Requirement)

वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन के कारण फ़सली क्षेत्र से लुप्त सिंचाई जल की भरपाई हेतु जल कि आवश्यकता को फसल जल आवश्यकता कहते हैं । इसे फसल उपभोग्य उपयोग (Crop Consumptive Use) भी कहते हैं । इसका मान फसल के वास्तविक वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन (Actual Evapotranspiration) के बराबर होता है ।

सूक्ष्म सिंचाई पद्धति (Micro irrigation system)

सूक्ष्म सिंचाई पद्धति सिंचाई की ऐसी विधि है जिसमें पानी को थोड़ी–थोड़ी मात्रा, कम अंतराल पर नालियों के द्वारा पौधों की जड़ों तक सीधे पहुंचाया जाता है। इसमें जल की बहुत कम मात्रा में सभी पौधों को पानी दिया जा सकता है। इस कार्य में पाइप, वाल्व, आदि का प्रयोग किया जाता है।

साधारण सिंचाई में अधिकतर पानी जो कि पौधों को मिलना चाहिए वह वाष्प बनकर उड़ जाता है । सूक्ष्म सिंचाई पद्धति में पूरे फार्म की मिट्टी में नमी पहुँचाने के बजाए केवल फसल के जड़ में पानी पहुँचाया जाता है जिसके कारण फसलों की जल आवश्यकता (सकल सिंचाई माँग-जीआईआर) कम हो जाती है । फसलों के नए जीआईआर का आँकलन करने के लिए इसको समझने की आवश्यकता है ।

यदि हम सूक्ष्म सिंचाई पद्धति और वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन के बीच संबंध को समझने का प्रयास करें तो यह स्पष्ट होता है कि वाष्पोत्सर्जन की प्रक्रिया फसलों द्वारा स्वतः होती है इसलिए इस प्रक्रिया से होने वाले जल के नुकसान पर अंकुश लगाना संभव नहीं है । किन्तु सूक्ष्म सिंचाई पद्धति अपनाने से वाष्पीकरण से होने वाले जल के नुकसान को कम किया जा सकता है जिसके फलस्वरूप वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन हानि में कमी आती है । सूक्ष्म सिंचाई पद्धति अपनाने से हानि में होने वाली कमी को समझने और इसका आँकलन करने के लिए फसल गुणांक (Crop Coefficient) को समझना आवश्यक है ।

फसल गुणांक (Crop Coefficient - Kc)

यह एक समायोजन गुणांक है जिससे संभावित वाष्पीकरण से वास्तविक वाष्पीकरण की गणना की जाती है ।

$$\text{Crop coefficient, Kc} = \frac{\text{Actual Evapotranspiration}}{\text{Potential Evapotranspiration}}$$

यह गुणांक मूल रूप से प्रत्येक फसल की विशेषताओं पर निर्भर करता है, इसलिए यह प्रत्येक फसल के लिए विशिष्ट होता है । यह मिट्टी की विशेषताओं और उसकी नमी के साथ–साथ और सिंचाई पद्धति पर भी निर्भर करता है । फसल गुणांक को स्थितिज वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन से गुणा करने पर वास्तविक वाष्पन–वाष्पोत्सर्जन (Actual Evapotranspiration) अथवा फसल जल आवश्यकता (Crop Water Requirement) अथवा फसल उपभोग्य उपयोग (Crop Consumptive Use) का मान प्राप्त होता है ।

चूँकि सूक्ष्म सिंचाई पद्धति में सिंचाई जल को फसल के जड़ों में पहुँचाया जाता है, जिससे पूरे फसल क्षेत्र (farm) कि मिट्टी में नमी पहुँचने के बजाए केवल फसल के जड़ों के पास की मिट्टी में नमी पहुँचती है, वाष्पीकरण से होने वाले जल के नुकसान में काफी कमी आती है । खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा प्रकाशित सिंचाई व ड्रेनेज पेपर 56 के अनुसार पारंपरिक सिंचाई पद्धति (जैसे कि बाढ़ सिंचाई (flood irrigation), सीमा सिंचाई (border irrigation), आदि) के बदले सूक्ष्म सिंचाई पद्धति का उपयोग करने पर किसी भी फसल के लिए फसल जल आवश्यकता कि गणना करते समय फसल गुणांक (Kc) का मान उसके मूल का 0.4 गुना (2/5 भाग) हो जाता है ।

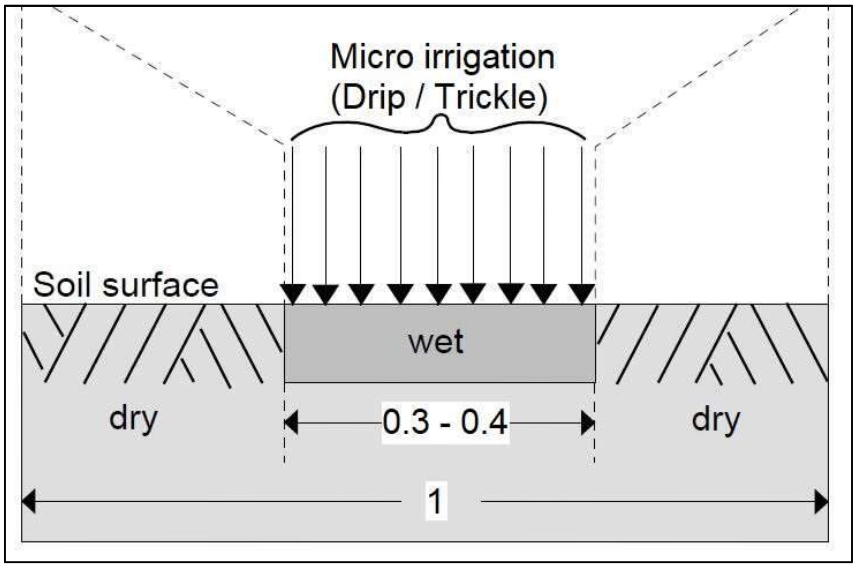

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न लिंक परियोजनाओं में सूक्ष्म सिंचाई पद्धति को सम्मिलित करते हुए इसके अंतर्गत आने वाले सभी फसलों की जल आवश्यकता (सकल सिंचाई माँग – GIR) के आँकलन करने की निम्नलिखित प्रक्रिया प्रस्तावित है :

1. तुलनात्मक अध्ययन हेतु वर्तमान प्रचलन के अनुसार लिंक परियोजनाओ के अंतर्गत नए कमान क्षेत्रों में 100% सिंचाई सघनता (irrigation intensity) अपनाई जाए । साथ ही लिंक परियोजनाओं के अंतर्गत नए कमान क्षेत्रों में पारंपरिक सिंचाई पद्धति के अनुसार जो फसल पद्धति (cropping pattern) अपनाई गई है, सूक्ष्म सिंचाई पद्धति के लिए भी उसी फसल पद्धति को अपनाया जाए । तथा उन फसलों की सकल सिंचाई माँग (GIR) की गणना के लिए उसी क्रियाविधि को अपनाया जाए जो पारंपरिक सिंचाई पद्धति के तहत घाटियों / उप–घाटियों में अपनाया गया है ।
2. पारंपरिक सिंचाई पद्धति के लिए उपयुक्त फसल गुणांक (Kc) का मान सूक्ष्म सिंचाई पद्धति के लिए 0.4 गुना (2/5 भाग) लिया जाए । तथा इस नए फसल गुणांक को संभावित वाष्पीकरण (ETo अथवा PeT) से गुणा कर फसल उपभोग्य उपयोग प्राप्त किया जाए, जिससे कुल सिंचाई माँग (Net Irrigation Requirement - NIR) की गणना वर्तमान प्रचलन अनुसार की जाए ।
3. सूक्ष्म (ट्रिकल / ड्रिप) सिंचाई के तहत कुल सिंचाई माँग (NIR) से सकल सिंचाई माँग (GIR) की गणना करने हेतु 81% की समग्र दक्षता (Overall efficiency) को अपनाया जाए । यह केन्द्रीय जल आयोग द्वारा जुलाई, 2017 में प्रकाशित "Guidelines for planning and design of piped irrigation network" के अनुसार है। (इसके लिए टेक–ऑफ बिन्दु से प्रस्तावित लिंक अलाइन्मेंट पर पाइप सम्प्रेषण (pipe conveyance) माना गया है ।)

इस प्रकार उपरोक्त प्रक्रिया के माध्यम से सूक्ष्म सिंचाई पद्धति के अंतर्गत विभिन्न फसलों की जल आवश्यकता (सकल सिंचाई माँग – GIR) का आँकलन करना प्रस्तावित है । स्पष्टीकरण हेतु गोदावरी (एस एस एम पी पी) – कृष्णा (पुलीचींतला) लिंक परियोजना में अपनाए गए फसल पद्धति के अनुसार फसलों के GIR के आँकलन का नमूना इस लेख के साथ संलग्न है ।

आशा है कि यह लेख अपवर्तन के लिए जल की उपलब्धता में आ रही कमी की जटिल समस्या के समाधान के रूप में सहायक होगा ।

लेखक द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं और उस संगठन के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं जिससे वे संबंधित हैं।

संदर्भः

1. खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) द्वारा प्रकाशित सिंचाई व ड्रेनेज पेपर 56: फसल वाष्पीकरण (फसल जल आवश्यकता की गणना हेतु दिशानिर्देशन) ।
2. केन्द्रीय जल आयोग द्वारा जुलाई, 2017 में प्रकाशित "Guidelines for planning and design of piped irrigation network"
3. गोदावरी (एस एस एम पी पी) - कृष्णा (पुलीचींतला) लिंक परियोजना का विस्तृत परियोजना प्रतिवेदन - मई, 2022 ।

प्रस्तावित क्रियाविधि द्वारा फसल जल आवश्यकता का नमूना						
CCA में Weighted average delta का आँकलन						**CCA = 100 ha Annual irrigation = 100 ha**
		सूक्ष्म सिंचाई		**पारंपरिक सिंचाई**		
Crop	**Area (ha)**	**GIR (m)**	**Water use (ha m)**	**GIR (m)**	**Water use (ha m)**	**% जल बचत**
Kharif						
Paddy	18	0.969	17.45	1.370	24.66	29.23
Jowar	5	0.037	0.19	0.132	0.66	71.71
Maize	4	0.037	0.15	0.132	0.53	71.71
Fodder	5	0.037	0.19	0.132	0.66	71.71
Cotton	7	0.060	0.42	0.270	1.89	77.66
Groundnut	12	0.029	0.35	0.098	1.17	69.96
Pulses	4	0.019	0.08	0.059	0.23	67.91
Rabi						
Paddy	12	1.055	12.66	1.700	20.40	37.94
Fodder	5	0.176	0.88	0.554	2.77	68.18
Pulses	8	0.071	0.57	0.219	1.75	67.57
Oilseeds	12	0.071	0.85	0.219	2.63	67.57
Vegetables	5	0.049	0.24	0.154	0.77	68.25
Perennial						
Sugarcane	3	0.359	1.08	1.353	4.06	73.46
Total	**100**		**35.11**		**62.18**	
Weighted average delta (m)			**0.35**		**0.62**	
इस गणना में वाष्पन हानि सम्मिलित नहीं है						

अनुवाद परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ –कार्यालयी हिन्दी और अंग्रेजी के विशेष संदर्भ में

अक्षित रोहिल्ला

1.0 भूमिका :

अनुवाद की चर्चा करते समय आपने साहित्य और भाषा के बारे में काफी अनुभव प्राप्त कर लिया है। अब उसका प्रायोगिक रूप सामने है। हमारे सामने भाषा निर्माण भाषा गठन की एक मजबूत नींव बन चुकी है। साहित्य का एक पक्ष इसका विस्तार है। क्षेत्रीय ही नहीं, भावात्मक रूप में भी अपनी सीमा लांघने की इच्छा होती है। अपनी अपने क्षेत्र की अपने देश और अपने समय की संपदा (बौद्धिक) को भाषा गत दायरे से निकाल कर वृहत्तर क्षेत्र में उसे प्रदर्शित करना अनुवाद का मुख्य लक्ष्य है ।

प्राचीन भारत में गुरु शिष्य परंपरा में गुरु से सुनकर शिष्य ग्रहण करता था । यह अनुवाद का प्रारंभिक रूप हैं । परंतु पश्चिम में ट्रांसलेट को परिवहन से जोड़ कर परिवहन का पर्याय बनाया । अनुवाद अर्थात् ट्रांसलेट (परिवहन) करना । अर्थत् एक भाषा में रचित सामग्री को लेकर अन्य भाषा क्षेत्र में पहुँचाना अनुवाद कहलाता था । इस व्यापक परिभाषा में अनुवाद का कार्य बहुत बड़ा हो जाता है।

1.1 परिभाषाः

भर्तृहरि ने अनुवाद का अर्थ 'दोहराना' या पुनर्कथन' लिया है। अर्थात् जो बात कही जा चुकी है उसे उसी भाषा में या दूसरी भाषा में व्यक्त करना या दुहरा देना, अनुवाद है । कुछ शब्दों के हेर फेर के साथ आज सारा पश्चिमी जगत भी इसी परिभाषा के आधार पर अनुवाद कार्य को स्वीकार कर रहा है ।

भारत में वैदिक भाषा के बाद जो परिवर्तन आया, वह ज्ञान फिर एक बार लोगों तक पहुँचाने हेतु उसकी टीका, अर्थ, भाषा व्याख्या आदि कार्य किया गया । **संसार में यह अनुवाद का सर्वप्रथम रूप और प्रयोग है।**

वही हाल पश्चिम में बाइबल को लेकर हुआ । मूल भाषा हिब्रू कालक्रम में अनुपयुक्त हो गई तो बाइबल को प्रचलित ग्रीक, फिर अंग्रेजी में उतारना पड़ा। आज तक यह अंतरण चल रहा है। इसलिए नहीं कि यह काम अधूरा रहा या अप्रामाणिक था । वरन विद्वानों एवं बाइबिल के अध्येताओं ने सूक्ष्म से सूक्ष्मतर स्तर पर उतरकर उसको गहराई से प्रस्तुत किया। हिंदी में यह कार्य प्रमुखतः फादर कामिल बुल्के ने किया जो भारत में सर्वाधिक प्रचलित एवं आदरणीय माना जाता है।

1.2 अनुवाद की सीमाएँ :

क) आज तो अनुवाद क्षेत्र का विस्तार सीमातीत हो गया है । कला–विज्ञान ही नहीं चिंतन और जीवन का हर बिन्दु अपने क्षेत्र से निकल बाहर आने को आतुर है। वैश्वीकरण ने इस इच्छा को और भी गति प्रदान की है। विश्व अगर छोटा गाँव बन गया तो पास–पड़ोस में आना जाना बहुत सहज भाव है । अतः इसकी व्यापकता में विस्तार आया है ।

उसी प्रकार आज वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति के कारण उसके हाथ में अनेक औजार भी आ गये हैं। केवल शब्द ही नहीं, भावों की गहन पहुँच तक आसान हो गई। एक आयाम **मशीनी अनुवाद** ने दिया हैं इससे अनुवाद का क्षेत्र बढ़ा है। अनेक सीमाएँ टूटी हैं। साधन मिलने पर अनपहुँच क्षेत्रों और स्थानों तक अनुवाद पहुँच रहा है।

मनुष्य दूर तक और गहराई से सोचने लगा है। अतः अनुवाद के संबंध में भी बहुत सचेतन हो गया। सतही समानार्थी अनुवाद को वह स्वीकार नहीं करता गहरे उसके भाव, विचार, लक्ष्य स्तर पर भी अनुवाद उसे संतुष्ट करे तब वह स्वीकार्य होता है।

इस प्रकार हम जब अनुवाद की सीमा पर चर्चा करते हैं तो जहां एक ओर विस्तार दिख रहा है तो वहीं दूसरी ओर संकोच हो रहा है। क्षेत्र में इसे विराट विश्व मिल रहा है। उसके स्तर को देखें तो सीमा संकोच होता जा रहा है। इन दोनों का कहीं मेल नहीं। दो अलग–अलग क्षेत्र हैं। फिर भी दोनों के साथ होने पर भी सीमा निर्धारित संभव है ।

ए) भाषाई सीमा :

अनुवाद कार्य में स्थूल रूप में सर्वाधिक संबंध भाषा से है। अतः उसकी ज्यादातर सीमायें भाषा ही निर्धारित करती है । मुख्यतः भाषा दो तरह की (अनुवाद के संदर्भ में) होती हैं । निकटवर्ती उत्पत्ति, विषयवस्तु को लेकर, भौगोलिक दृष्टि से वह अगर आसपास के क्षेत्र की है तो उसकी सीमा भिन्न होगी । परंतु भिन्न देश, विभन्न काल, भिन्न जाति–धर्म से संबद्ध है तो सीमा भिन्न हो जायेगी । उदाहरण के लिए हिंदी – ओड़िया अनुवाद की वो सीमाएँ नहीं होंगी जो हिंदी – जर्मन या ओड़िया – जापानी अनुवाद की होंगी। उसी प्रकार कालगत अंतर भी अनुवाद की सीमाएँ निर्धारण करती है। समकालीन भाषा और दो चार सौ वर्ष पुरानी भाषा से अनुवाद में जो सीमा आती हैं वह बाइबल के – में देखी जा सकती है।

भाषा में प्रयुक्त शब्द (जैसे बेटा, पुत्र, लड़का) ही नहीं उसके वाक्य भी सीमा तय करते हैं। कहीं विभिन्न भावोद्दीप्त वाक्य, कहीं खंडित वाक्य, तो कहीं लंबे वाक्य अनुवाद की सीमा तय करते हैं । कहीं वाक्य में कर्ता अंत में आता है, कहीं पर नकारात्मक शब्द भी अंत में जैसे वह गया नहीं आये तो अनुवादक को सीमा में रहना पड़ता है । उसी प्रकार शब्दों के कोशगत अर्थ की जगह भावनातिरेक में विशेष अर्थ हों तो वे अलग ही सीमा प्रस्तुत करते हैं। इनमें स्नेह, व्यंग्य, हास्य, क्रोध, प्रेम आदि विविध भावों के अधीन शब्दों के अपने अर्थ बदल जाते हैं। सृजनात्मक भाषा में बहुधा कोश से आगे विशेष अर्थ होते हैं। अतः सीमा को ध्यान में रख अनुवाद करना पड़ता है ।

1.3 अनुवाद का क्षेत्र

अनुवाद का क्षेत्र बहुत विस्तृत है यह क्रमशः विस्तृत होता जा रहा है । इसकी शुरूआत धर्म ग्रंथों के लोक भाषा में प्रस्तुत करने अनुवाद का प्रयोग हुआ था । विश्व की सभी भाषाओं में यही स्थिति थी । क्रमशः इसका विस्तार होने लगा । साहित्य के अन्य रूपों का लोक भाषा में अनुवाद के माध्यम से अंतरण किया जाने लगा । यह कार्य एक क्षेत्र, एक देश ही नहीं सारे विश्व में प्रचलित होने लगा। इस प्रकार साहित्य देश की सीमा लांघ महादेशों में फैल वैश्विक होने लगा। इस प्रकार विचार, भाव एवं चेतना के विस्तार में अनुवाद का प्रयोग क्रमशः सीमायें तोड़ने लगे ।

वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथों को आज हम अनुवाद के माध्यम से हृदयंगम कर रहे हैं । अन्यथा वैदिक व्याकरण तो दूर, पाणिनी तक को समझना इतना आसान नहीं है। बार–बार गीता, भागवत, महाभारत, रामायण के अनुवाद होने लगे । इससे कथानक में कवि प्रतिभा जुड़ कर नव–नूतन अर्थ और नूतन भाव विस्तार होने लगा। इस प्रकार हमारी परंपरा, हमारी संस्कृति, हमारे जीवन, हमारे प्राणों में नूतन भाव भरती रही । आज भी यह धारा प्रचलित है । इन अमर ग्रंथों का अनुवाद जारी है। पश्चिम के एक 'बाइबल' के अनुवाद में हजारों संस्थायें एवं हजारों लोग लगे हैं। इस प्रकार अनुवाद का क्षेत्र आज विस्तार पा कर बहुत बड़ा हो चुका है। 'ईसाइयत' के इतने विविध रूप मत, और भेद मिल रहे हैं। पर मूल ईश्वर चेतना एक है। उसका आधार बाइबल अनुवाद के आधार पर विभिन्न दृष्टिकोण देता है। कुरान की मूल भाषा हर मुसलमान के लिए पवित्र हैं। परंतु उसका संदेश उसे अपनी भाषा में अनुवाद करने से ही समझ आता है। कुरान की आयतों का अर्थ उसके जीवन

का अंश तभी बनता है। जब वह उसे समझ कर उसके अनुसार आचरण करता है । यहीं अनुवाद का क्षेत्र आ जाता है।

2.1 अनुवाद प्रक्रिया का अर्थ :

अनुवाद कार्य में दो भाषाओं का उपयोग होता है । **एक समझते और हृदयंगम करते हैं । दूसरी में समझाते और हृदयंगम कराते हैं**। इस सारे कार्य का नाम है 'अनुवाद प्रक्रिया' । इसमें दुहरी प्रणाली होती है। मूल भाषा की संरचना देखें इसमें मुख्यतः ध्वनि, स्वर, अक्षर, शब्द, पदबंध और वाक्य – होते हैं इनको व्यवस्थित करने की एक निश्चित नियमावली, व्यवस्था होती है। इसे उस भाषा का व्याकरण कहा जाता है । उसी तरह जिसमें अनुवाद करना होता है, उसकी भी अपनी इकाइयाँ होती हैं। और फिर उनका आपसी घटकों को आमने–सामने लाकर प्रयोग करना पड़ता है । जैसे अंग्रेजी के वाक्यों में एसवीडी (कर्ता, क्रिया, कर्म) के रूप में या फिर कर्ता का विस्तार, क्रिया के विस्तार के रूप में कर्म का विस्तार और फिर वाक्य मिलता है ।

अनुवाद के समय दूसरी भाषा में यह वाक्य क्रम बदल कर प्रयोग करता है कर्ता का विस्तार, कर्म का विस्तार, अंत में क्रिया का विस्तार करता है। यह अनुवाद की प्रक्रिया का आधार है । इसके विभिन्न चरणों पर सुविधा के रूप में चर्चा कर रहे हैं

2.2 अनुवाद के चरण :

यूजेन नाइडा ने अनुवाद के तीन चरण बताये हैं ।

1) विश्लेषण

2) अंतरण

3) पुनर्गठन

विश्लेषण

अ) भाषा के स्तर :

अनुवादक सर्वप्रथम मूल पाठ हाथ में लेता है । इस समय वह पाठ के शब्द वाक्य पद के स्तर पर अर्थ ग्रहण करता है । जटिल और अनेकार्थी वाक्यों की पहचान कर लेता है। उसकी व्याकरणिक संरचना पर विचार कर लेता है । मूल का एक रूप वह पहचान लेता है । यह कार्य भाषा के स्तर पर होता है ।

इसमें हमारी सहायता भाषा की बनावट करती है। मूल पाठ का संदेश इसी में निहित होता है । इनमें लाक्षणिक और व्यंजनात्मक अर्थ भी होते हैं। शब्दों के स्तर पर उनके अनेकार्थी रूप पर ध्यान दिया जाता है । इसी प्रकार शब्द के परस्पर साथ आने पर नया अर्थ आता है। परंतु समस्त समास किये गए शब्द का कोशगत अर्थ कभी तो सुरक्षित मिल जाता है, कभी उस अभिव्यक्ति के संदर्भ में छुपा होता है। यह विशेष अर्थ की सूचना देता है । इसी प्रकार मुहावरों के अर्थ केवल परसर्ग लगा कर बदल जाते हैं।

जैसे :

(किसी की) आँख लगना –नींद आना

(किसी से) आँख लगाना –प्रेम करना

(किसी पर) आँख लगना– ललचा जाना ।

इस प्रकार भाषिक अभिव्यक्ति के संकेतार्थ का कोशगत अर्थ के अलावा व्यंजना में है । इसे समझ कर सही संदेश प्राप्त किया जाता है। यहाँ वाक्य की अर्थ व्यवस्था और अर्थ क्षेत्र पर ध्यान रखना होता है ।

आ) विषयवस्तु के स्तर पर : अनुवादक भाषा के माध्यम से उस विषय को ग्रहण करता है जो उसमें निहित है, और संकेतित है अथवा द्योतित हैं। अगर वह वैज्ञानिक या तकनीकी विषय है तो उसे समझने लायक ज्ञान जरूरी है। विशेषज्ञ चाहे न हो, उसे समझने लायक आधारभूत ज्ञान तो होना चाहिए।

जैसे (transfer) शब्द का

1) हस्तांतरण

(2) स्थानान्तरण

दोनों संदर्भ देख कर अनुवाद करना होता है । उसी प्रकार (communication) शब्द का बहु अर्थी प्रयोग देखें

1) पत्राचार (कार्यालय में)

2) संचार (प्रेषण के अर्थ में)

3) संप्रेषण (साहित्य के अर्थ में)

इसकी सही विषयवस्तु ग्रहण करने हेतु अनुवादक को संदर्भ और परिस्थिति पर विचार करना होता है । शब्द अपने आपमें बहुत सीमित अर्थ देता है । जब प्रयोग करते हैं तो उसका क्षेत्र, वह परिस्थिति, वे पात्र और वह वातावरण सबमें अपना अर्थ विस्तार कर लेता है। कोश तो एक दृष्टि देता है । व्यवहार तो असीम होता है । वहाँ उसकी पहुँच बहुत होती है शब्द दूसरे शब्दों के साथ संबंध पद के माध्यम से नयी छाया में आ जाता है। एक अभिनव फील्ड प्रस्तुत कर देता है । उसे विभिन्न पगडंडियों में से एक चुननी होती है। जो उसे राजमार्ग से अनायास जा मिलती है । यह अंतर वाक्य संबंध भाषा की ताकत बनता है । संस्कृति और परंपरा का वाहक होता है । इसमें बहुज्ञता काम आती है। उसमें सही चुनाव कर अर्थ बिठाना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । यह भाषा की ताकत दिखाता है ।

वनवासी जीवन, ग्राम जीवन और शहरी जीवन में विषय एवं वस्तु की विविधता बढ़ती जाती है। मशीनीकरण से इसका स्तर और भी ऊँचा हो जाता है। इनके आपसी संयोग से अनुवाद का दायरा खूब विस्तृत हो जाता है । अनुवादक की पहुँच वहाँ होनी चाहिए । उसी तरह 'रस' शब्द का साहित्य में जो अर्थ है, रसायन शास्त्र में भिन्न है । इसी प्रकार केमिकल से भिन्न अर्थ औषधिशास्त्र में आयुर्वेद के पंडित बताते हैं (जैसे बसंत कुसुमाकर रस) । अर्थात् विषय के अर्थ ग्रहण में उसके संदर्भ को ध्यान में रखना निहायत जरूरी है।

इस शब्द की समझ से मूल भाषा और लक्ष्य भाषा का संबंध स्पष्ट होता है ।

इस प्रकार बाथगेट (studies of Translation model 1980) ने अलग पुस्तक लिखने से पूर्व न्यूमार्क के साथ (Theory and craft of translation in 1978) लिख कर अनुवाद को आधुनिक भाव ग्रहण करने की दृष्टि से भाषा सिद्धांत रखा । शब्द प्रतिशब्द अर्थात् (inter successive translation) की बात कही । ज्यादातर अनुवादक इस पद्धति को अपनाते हैं । शब्दों के अनुवाद लेते हुए आगे बढ़ते हैं । पर इसमें अनुवादक पूरी तरह पाठोत्तरण नहीं कर पाता । शब्दों की बजाय अनुवादक पूरे पाठ को अपने मानस में ग्रहण करता है । इससे वह पाठ के साथ मानसिक तौर पर जुड़ता है । शब्दों से प्राप्त ज्ञान आगे बढ़ कर उस भाषा में निहित भाव, शैली, प्राण आदि के साथ समझ बनाता है । इस परिचय, आत्मीयता से एक तरह का समन्वय (बाथगेट के शब्दों में) स्थापित होता है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने हिंदी में इसे 'पाठ पठन' कहा है। पाठक मूल का पठन (अध्ययन study) करता है। डा. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और डा. कृष्ण कुमार गोस्वामी इस अध्ययन को एक और दिशा में आगे बढ़ाते हैं। भाषा को प्रतीक मान कर उनका प्रतीकों के स्तर पर विश्लेषण होता है । यह प्रतीक ही संप्रेषण का आधार होता है। उसे समझ कर अनुवादक अपने को प्रस्तुत करता है । समृद्ध करता है । वह विषय को अनुभव करता है। उसकी गहराई तक पहुँचता है । अनुवाद प्रक्रिया का यही प्रथम चरण होता है इस प्रस्तुति करण में अनुवादक मूल की भाषा, भाव, छंद, संकेत आदि विविध आधारों को ग्रहण करता है। अतः यह अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है अनुवादक द्विवागीश के रूप में यहाँ प्रथम वाक् याने मूल को धारण कर लेता है। मूल पाठ का वह अच्छा और सार्थक पाठक बनता है। अपनी पूरी समझ, ज्ञान, कौशल के साथ मूल का पाठ करता है । यही उसका एक तरह से प्रस्तुति पर्व है। अनुभव संपन्न और नौसिखिये अनुवाद का यहाँ बड़ा अंतर होता है । केवल भाषा ज्ञान से काम नहीं चलता। उसके मर्म तक पहुँचने की क्षमता भी होनी चाहिए। पाठ केवल शब्दों में ही नहीं रहता He must be able to read between the lines यह अनुवादक की पाठ ग्रहण की क्षमता का निदर्शन होता है सृजनशील साहित्य में भाषा का Deeper structure अनुवादक के लिए बड़ी चुनौती होती हैं | Surface structure में वह पाठ के एक स्तर तक आसानी से पहुँच जाता है । पर सृजन के गहन तक प्रवेश की क्षमता ही अनुवादक की असल परीक्षा घड़ी होती है। उसे 'काव्य भाषा' और 'सामान्य भाषा' के अंतर को समझते हुए पाठ की काव्य भाषा (साहित्यिक विशेष स्तर) तक पहुँच कर उसे ग्रहण करना होता है। अनुवाद प्रक्रिया का यह प्रथम पर्याय है। इसे सही ढंग से पार किये बिना भ्रमित होने की संभावना होती है

पुनर्गठन :

अब तक हमने ज्यादातर विश्लेषण पाठ के पठन का किया। फिर पाठ के विश्लेषण का आयोजन किया। तब जाकर उसे भाषा के क्षेत्र से निकाल लक्ष्य भाषा में कौशल पूर्वक अवतरण किया। यहाँ भाषा का रूप चुना गया। मुहावरों कहावतों की खोज की गई। एवं नई भाषा का चोगा 'इस्त्री कर' अथवा सिर्फ 'धो–साफ' कर अंतरण किया गया । इसमें हो सकता है कहीं खुरदरापन आ जाये। लक्ष्य भाषा का स्वभाव न पकड़ा हो। यह 'अनफिल्टर्ड स्टेज' में वहाँ मूल की कई बातें आ जाती हैं, उन पर अनुवादक की नजर रहती है। तब उसे तीसरे चरण में कुछ काम की जरूरत पड़ती है। विद्वानों ने इसे अनुवाद की विभिन्न स्तरों पर पुनर्व्यवस्था माना है ।

2.3 अनुवाद – पुनरीक्षण /विश्लेषण :

अनुवादक अपने प्रवाह में तथा विभिन्न दबाव के अंतर्गतः अनुवाद कार्य करता चलता है । उसका नियंत्रण, दिशा संशोधन एवं हितैषी जो है, वह है पुनरीक्षक । अनुवादक यदि हृदय है तो पुनरीक्षक उसका विवेक बनता है । उसके चित्र की भ्रमित उड़ान को, हृदय के घोड़ों की अनियंत्रित दौड़ को पुनरीक्षक नियंत्रण करता है।

वास्तव में देखा जाय तो पुनरीक्षक अनुवाद का संशोधन, संवर्धन, परिवर्धन करता है। बैंक में रुपये देने से पहले उन्हें दो बार गिन लेता है । कमी या त्रुटि रहे तो उसे सुधार लेता है यह 'तीसरी आँख' का काम करता है । अनुवाद की दोनों आँख से कुछ छूट जाये तो अनुवादक की तीसरी आँख इसे पकड़ ले । यहाँ एकांउटेबिलिटी अनुवादक के साथ–साथ पुनरीक्षक पर भी आ जाती है ।

पहले कर्म पुरुष अनुवादक है और दूसरा उसे परिष्कार देने वाला कर्म पुरुष पुनरीक्षक होता है । यदि संभव हो तो तीसरा एक और कर्म पुरुष होता है मूल्यांकक । वह मूल और अनुवाद का तुलनात्मक अध्ययन कर उचित–अनुचित, ग्राह्य अग्राह्य का निर्णय करता है । पुनरीक्षक निष्ठावान,समर्पित भाव और तटस्थ विचारयुक्त होना जरूरी है। मूल्यांकन की सबसे बड़ी आवश्यकता

उस की विषय और भाषा पर दक्षता है। जो सामने सामग्री है, साधिकार उस पर निर्णय देने की क्षमता होनी चाहिए। यह कार्य करने हेतु उसका कद भी ऊंचा हो और काठी ठोस हो। वरना उसकी रचनात्मक आलोचना को अथवा परिवर्तन संबंधी दृष्टिकोण को अनुवादक स्वीकार ही नहीं करेगा। वह उपेक्षा करेगा या ठुकरा देगा। अपने को अनुवादक कभी 'अकुशल कारीगर' मान ही नहीं सकता। उसी तरह मूल्यांकन में भी यह भाव कतई न हो कि हर हाल में कहीं न कहीं त्रुटि निकाल कर अपने को विशेष प्रतिपादित करना है। अगर प्रस्तुत पाठ ग्राह्य है और अपनी दृष्टि से एक स्तर को छू रहा है, तो उससे छेड़छाड़ की जरूरत क्या है ?

एक पाठ के दो अनुवाद हो सकते हैं। अपर की दृष्टि को महत्व देना पड़ेगा । अपने को ही यह कह कर कि 'धरती का बीच यही है, चाहे जिधर माप लें, हमने तो ये खूंटा गाड़ दिया ।' सर्वज्ञ का ढोल पीटने के लिए मूल्यांकन करने पर कठिनाई पैदा हो जाती हैं । मूल्यांकन को कस्टम अधिकारी कहा गया है जो अपनी आँख का इस्तेमाल एक्सरे मशीन की तरह करेगा कि विदेश से आये सामान को पारदर्शी जांच कर वारा–न्यारा कर दे।

एक पाठ का अनुवाद करने के लिए अनुवादक कई तरह की पद्धतियाँ अपना सकता है । (जैसे ''हरि अनंत हरि कथा अनंता' का उदाहरण दिया जाता है) इसमें किसी एक अनुवाद को अंतिम पाठ नहीं कहा जा सकता श्रेष्ठता की कोई ऊंचाई नहीं हो सकती । एक अनुवाद को आधार बना मूल्यांकन दूसरा पाठ प्रस्तुत कर सकता है। अतः पुनरीक्षण और पुनरीक्षक की सीमाएँ और शक्तियाँ स्पष्ट रहनी चाहिए ।

अनुवादक और अनुवाद :

अनुवादक अंधे की यह दृष्टि सारे संसार की आज जगतीकरण' के रूप में आँख बनी हुई हैं ।अनुवाद की क्षमता और उसकी दृष्टि कितनी दूर जा सकती है, भीम भोई से कोई अनुवादक सीख सकता है। अनुवादक का धर्म, उसका संप्रदाय, उसका लक्ष्य प्राप्त सब भीम भोई में मिल जाता है । अतः अनुवादक की अकिंचनता, उसकी दुर्बलता न समझें । वह समाज के उस छोर पर होता है जहाँ से नया साहित्य, नयी दिशा और नई दृष्टि जन्म लेती है। वाल्मीकि के बाद तुलसीदास, सारलादास, जगन्नाथदास, सूरदास इसीलिए देदीप्यमान ज्योतिष्क बन सके । अनुवादक को अपनी अस्मिता पहचान कर इस पवित्र कार्य में अजातशत्रु की तरह काम करना है और

कीरति भनिति भूति भलि होई।
सुरसरि सम सब कैह हितहोई। ''

सर्वमंगलकारी अनुवाद की उससे समाज अपेक्षा करता है ।

राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना .. जल संकट का निवारण

रीता कश्यप

भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि मानसून पर आश्रित है लेकिन अब जल केवल कृषि कार्य के लिए ही नहीं बल्कि बढ़ते हुये विकास क्रम के हर रोज में जल की आवश्यकता होती है। गहराते जल संकट और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हम मानसून की अनियमितता से सबसे अधिक पीड़ित हैं और हमें अपनी जल भंडारण क्षमता को बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें अपनी संवैधानिक स्थिति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है क्योंकि **राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना न केवल जल संरक्षण परियोजनाओं की एक श्रृंखला है अपितु जल संकट का निवारण भी है।** भारत के उच्चतम न्यायालय द्वारा हाल ही में नदी जोड़ परियोजना को क्रियान्वित करने के पक्ष में दिए गए स्पष्ट निर्णय से यह दावा और भी प्रबल हो जाता है।

प्रतिदिन बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और बदलते जलवायु के परिप्रेक्ष्य में भारतीय जल संसाधनों की उपलब्धता लगातार घटती जा रही है। भारत की जल नीति के संदर्भ में विश्व बैंक की एक रिपोर्ट यह कहती है कि भारत को अक्षम जल आपूर्ति सेवाओं का सामना करना पड़ रहा है। यहां तक कि किसानों और शहरी निवासियों को स्वयं के उपभोग हेतु नलकूपों के माध्यम से भूजल की पम्पिंग करनी पड़ रही है। इन कारणों से अनेक स्थानों पर भूजल स्तर में तेजी से गिरावट आ रही है और जलभृत (Aquifers) भी लगभग समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। सरकार द्वारा अत्याधिक सब्सिडी का प्रावधान तथा किसानों को मुफ्त बिजली की व्यवस्था इस भूजल समस्या को हल करने के बजाय और बढ़ा रही है। भारत में जल संकट और भी गंभीर समस्या का रूप लेती जा रही है। अब हमें यह समझने की आवश्यकता है कि जल एक स्थानीय एवं असीमित संसाधन नहीं है अपितु जल एक वैश्विक एवं सीमित संसाधन है। देश में जल की अधिकता तथा जल की कमी वाले विभिन्न क्षेत्रों को ध्यान में रखकर भारत सरकार द्वारा अपनाई गई राष्ट्रीय जल नीति – 2002 एवं 2012 में जल के अंतरबेसिन अंतरण पर जोर दिया गया है। इसमें कहा गया है कि ''क्षेत्रों/बेसिनों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के आधार पर जल की कमी वाले क्षेत्रों को अन्य क्षेत्रों से जल अंतरण द्वारा जल उपलब्ध कराना चाहिए, जिसमें एक नदी बेसिन से दूसरे नदी बेसिन में जल का अंतरण भी शामिल है।'' इस प्रकार आपस में नदियों को जोड़ने के कार्यक्रम से बाढ़ की आशंका वाले इलाकों में रहने वाले लोगों को बाढ़ के कारण होने वाले नुकसान से और सूखा प्रभावित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को सूखे से बचाने में मदद मिलेगी। राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना भारत की एक अवधारणात्मक योजना है जिसके अंतर्गत 14 हिमालयी और 16 प्रायद्वीपीय लिंकों द्वारा भारत की विभिन्न नदियों को भविष्य में आपस में जोड़ा जाना प्रस्तावित है।

नदी जोड़ योजना का इतिहास

देश की आजादी के पूर्व ब्रिटिश शासन के दौरान एक इंजीनियर सर आर्थर कॉटन ने जल परिवहन परियोजनों के लिए गंगा और कावेरी नदियों को जोड़ने की मांग की थी। लेकिन इन क्षेत्रों के बीच बढ़ते रेलवे संपर्को के कारण यह विचार स्थगित कर दिया गया। 1970 के दशक में तत्कालीन सरकार ने श्री के. एल. राव द्वारा प्रस्तावित नदियों को जोड़ने की परियोजना की तरफ एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया था। उनके कार्यकाल में इस परियोजना को गति देने के लिए एक टास्क फोर्स का भी गठन किया गया था जिसने नदी जोड़ परियोजना को ठोस रूप देने के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। इस टास्क फोर्स ने आगे के अध्ययन के लिए केन – बेतवा एवं पार्वती – काली सिंध – चम्बल परियोजना को चिन्हित किया। तत्पश्चात्, जुलाई 1982 में, इस नदी जोड़ परियोजना के सभी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन करने हेतु भारत सरकार ने जल संसाधन मंत्रालय के अधीन स्वायत्त निकाय के रूप में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की स्थापना की।

पूर्व में किए गए कार्यो के परिणामस्वरूप 2005 में सरकार के कार्यकाल में इस परियोजना की एक महत्वपूर्ण लिंक केन – बेतवा परियोजना की विस्तृत परियोजन रिपोर्ट का कार्य भी शुरू करने के लिए उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा केंद्र सरकार के मध्य एक दिव्पक्षीय समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया था। इसके बाद संप्रग सरकार के ही कार्यकाल में जनवरी 2009 में ही इस परियोजना के दो और महत्वपूर्ण लिंकों पार–तापी–नर्मदा एवं दमन–गंगा–पिंजल की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य भी संबन्धित राज्य सरकरों (महाराष्ट्र एवं गुजरात) से सहमति प्राप्त होने के बाद शुरू किया जा चुका है। फरवरी 2012 में भारत के उच्चतम न्यायालय ने नदियों को जोड़ने के लिए अपनी हरी झंडी दे दी है और इस परियोजना को तेजी से लागू करने और क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सरकार से कहा गया है। नर्मदा परियोजना पर सुप्रीम कोर्ट के संज्ञान के आलोक में इस परियोजना की उम्मीद बंधती है।

चुनौतियां

भारत में सरकारे बड़ी–बड़ी जल परियोजनाएं तो लाती है, किन्तु विस्थापितों की पुनः स्थापना, प्रभावशाली नागरिक समाज समूहों के कड़े विरोध एवं पर्यावरण को नुकसान की आशंका के कारण इन्हें लागू करने में काफी दिक्कत आती है। विभिन्न गैर सरकारी संगठन स्थानीय निवासियों के विस्थापन के मुद्दों को जोर–शोर से उठाते हैं। इस प्रकार के संगठन अनेक जलविद्युत परियोजनाओं के विरोध में अपना शक्ति प्रदर्शन भी कर चुके हैं। बढ़ता हुआ औद्योगीकरण व शहरीकरण स्थानीय जल संसाधनों पर दबाव डाल रहे हैं। ऐसे में गैर सरकारी संगठन और नागरिक समूहों ने ऐसे उद्योगों का विरोध तेज कर दिया है जिनमें पानी की अधिक मात्रा में खपत होती है। भारत की लौह अयस्क पट्टी में लगजमबर्ग के आर्सेल्लर मित्तल और दक्षिण कोरिया के पॉस्को समूह की परियोजनाओं के जबरदस्त विरोध के कारण इन परियोजनाओं में देरी इसका ताजा उदाहरण हैं।

इसके अलावा नदी जोड़ परियोजना के द्वारा नहरों के माध्यम से नदियों को जोड़ जाना है और इसके लिए बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण की आवश्यकता होगी और वो भी विभिन्न प्रदेशों के मध्य सामंजस्य बनाते हुए। कुछ राज्य जैसे तमिलनाडु, जहां कोई बड़ी नदी नहीं निकलती है और

जो पड़ोसी राज्यों की नदियों पर निर्भर है, इस परियोजना का भरपूर समर्थन कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर कुछ राज्य, जैसे असम, सिक्किम, केरल आदि, अपने जल संसाधनों पर अपने कोई भी अधिकार प्रभावित नहीं होने देना चाहते हैं। इस परियोजना की लागत 5,60,000 करोड़ रूपये होने का अनुमान किया गया है जो एक बहुत बड़ निवेश है और अंत में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने की आशंका के कारण यह परियोजना भी खटाई में पड़ सकती है।

अवसर

मानसून के मौसम में गंगा, ब्रह्मपुत्र मेघना नदियों के बेसिन में बाढ़ आ जाती है, जबकि पश्चिमी भारत और प्रायद्वीपीय बेसिनों में पानी की कमी हो जाती है। इन तमाम बेसिनों में पानी की उपलब्धता बनाए रखने, बाढ़ से बचने और खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए नदी जोड़ कार्यक्रम ही एकमात्र उत्तम और सरल उपाय है। नई कृषि प्रोद्योगिकी और एन प्रकार के बीज मिलने के बाद भी खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार को सिंचाई सुविधाओं का विस्तार करना ही होगा। अन्यथा, खाद्यान्न आयात पर बढ़ती निर्भरता से पीछा नहीं छूटेगा। बदलते हुए जलवायु के परिप्रेक्ष्य में खाद्य सुरक्षा और जल सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजनओं का क्रियान्वयन नितांत आवश्यक है। हालांकि नदी जोड़ने की इस परियोजना में भारी खर्च आने का अनुमान है। परन्तु, इस बात पर भी गौर किया जाना चाहिए कि नदियों को आपस में जोड़ने से भारत का वार्षिक खाद्यान्न उत्पादन बढ़कर लगभग दोगुना हो जाएगा और आगे आने वाले समय में वर्ष 2050 तक भी बहुत बढ़ती जनसंख्या और संपन्नता के कारण खाद्यान्न की बढ़ती मांग की आसानी से पूर्ति हो पाएगी।

वस्तुस्थिति

यह स्पष्ट है कि गैर सरकारी संगठन तथा परियोजनओं से प्रभावित होने वाले स्थानीय लोगों द्वारा संगठित विरोध एवं पर्यावरणीय नुकसान की मात्र आशंकाओं के कारण परियोजनाओं के कारण परियोजनाओं को रोकना पड़ता है जो कि सर्वथा अनुचित है। ऐसा अनेक पनबिजली परियोजनाओं के साथ हो भी चुका है। इसी कारण से इन परियोजनाओं में निजी–सार्वजनिक निवेश को लेकर उत्साह भी नहीं है। परिणामस्वरूप, जलविद्युत का आकर्षण समाप्त होता जा रहा है, जबकि देश के हिमालयी भाग में जलविद्युत उत्पादन की विपुल संभावनाएं है। यह सत्य है कि दुनिया के अनेक भागों में अंतर–बेसिन जल स्थानांतर सफलता के साथ क्रियान्वित हो रहा है। चीन की दक्षिण–उत्तर की जल परियोजना विश्व की सबसे विशाल अंतर–बेसिन जल स्थानान्तरण योजना है। भारत में इस तरह की दीर्घकालिक सामरिक योजनाएं बनाने और उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने की क्षमता तो है, परन्तु इन लिंक परियोजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए संबंधित राज्यों एवं परियोजना से प्रभावित होने वाले स्थानीय लोगों की सहमति मिलना भी बहुत आवश्यक है। अतः इन्हीं कारणों से भारत को नर्मदा नदी परियोजना को पूरा करने में भी दशकों का समय लगा। नदी जोड़ योजना का प्रभाव पड़ोसी देशों, जैसे भूटान, चीन, नेपाल, बांग्लादेश आदि पर भी पड़ना तय है। अतः वह इस परियोजना को लेकर पहले से ही चिंतित हैं।

इन सभी देशों के साथ भी मिलकर सहमति बनाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारत एक कृषि प्रधान देश है और हमारी कृषि मानसून पर आश्रित है। गहराते जल संकट और जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हम मानसून की अनियमितता से सबसे अधिक पीड़ित हैं और हमें अपनी जल भंडारण क्षमता को बढ़ाने की आवश्यकता है। हमें अपने संवैधानिक स्थिति में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है क्योंकि राष्ट्रीय नदी जोड़ परियोजना न केवल जल संरक्षण परियोजनाओं की एक श्रृंखला है अपितु जल संकट का निवारण भी है। भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा हाल ही में नदी जोड़ परियोजना के क्रियान्वित करने के पक्ष में दिए गए स्पष्ट निर्णय से यह दावा और भी प्रबल हो जाता है।

राजनीतिक व एन.जी.ओ. कार्यकर्ताओं द्वारा विरोध प्रदर्शन, लालफीताशाही, कानूनी अड़चन, पर्यावरण चिंताओं, भूमि अधिग्रहण पर अनावश्यक कानूनी कारवाई और राज्य सरकारों द्वारा पेशगी प्रीमियम राशि की मांग से साबित हो जाता है कि कोई भी बड़ी परियोजना शुरू करना बेहद मुश्किल काम है। इसके बावजूद भी **भारत में इस परियोजना को लागू करना एक टेड़ी खीर जरूर है, परंतु असंभव नहीं है।** इसके लिए हम सभी को आपस में मिलकर सर्व–सम्मति बनानी होगी एवं सामूहिक प्रयास करने होंगे। इस परियोजना में हमारे द्वारा आज किया गया निवेश हमारे आने वाली पीढ़ियों के स्वर्णिम कल को निर्धारित करेगा।

भारत में जल संकट और समाधान

बिमलेश गोस्वामी

परिचयः–

वर्ष 2020–2022 पानी के बुनियादी ढांचे के मामले में भारत के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण और निर्णायक वर्ष होने जा रहा है। भारत के अलग–अलग हिस्सों में हमें पानी से जुड़ी कई समस्याएं देखने को मिलेंगी, जिनके भौगोलिक नुकसान हैं। 2030 तक, साठ प्रतिशत (60%) आबादी शहरी क्षेत्रों में रहेगी, जिससे पूरे भारत में जल संसाधनों पर दबाव काफी बढ़ जाएगा। यह स्मार्ट बेसिन (स्मार्ट, इंटर–कनेक्टेड, टिकाऊ जल नेटवर्क) का एक नेटवर्क है जो नल पर पीने योग्य पानी और कृषि और शहरी जीवन तक प्रचुर पहुंच के लिए देश की बढ़ती जरूरतों को पूरा करता है। दुनिया भर में भूजल में अवांछनीय रूप से उच्च आर्सेनिक सामग्री के मामले मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा हैं। भारत में भूजल में आर्सेनिक के दूषित होने की सूचना सबसे पहले पश्चिम बंगाल से मिली थी। बीआईएस 2012 मानक के अनुसार, पीने के पानी में आर्सेनिक की स्वीकार्य सीमा 0.01 मिलीग्राम/ली (10 पीपीबी) है और वैकल्पिक स्रोत के अभाव में, स्वीकार्य सीमा 0.05 मिलीग्राम/ली (50 पीपीबी) मानी जाती है। लंबे समय तक आर्सेनिक दूषित पानी के सेवन से मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे दुनिया भर में लाखों लोग प्रभावित हुए हैं।

भारतीय शहर उदयपुर और बैंगलोर प्राकृतिक पहाड़ी शहर हैं जहां प्राकृतिक घाटियां हैं। पिछले कुछ दशकों में, बड़े पैमाने पर निर्माण और अन्य अतिक्रमण गतिविधियों की उपेक्षा ने इन घाटियों पर बहुत दबाव डाला है। झीलें उदयपुर की तश्तरी के आकार की घाटी में एक श्रृंखला बनाती हैं। उदयपुर का भीतरी गिरवा मैदान पश्चिमी और मध्य से घिरा हुआ है। अरावली की पहाड़ियाँ और उसका पानी अहर (आयद) नदी में मिल जाता है। लगभग 425 साल पहले, उदयपुर की झीलों की प्रणाली को वर्षा जल प्रबंधन का एक मॉडल माना जाता था। बैंगलोर, कर्नाटक में झीलें असंख्य हैं। बंगलौर क्षेत्र की अधिकांश झीलों का निर्माण सोलहवीं शताब्दी में प्राकृतिक घाटी प्रणालियों पर बांध या बांध बनाकर किया गया था। शहरीकरण के प्रभाव ने बैंगलोर की झीलों पर कुछ भारी असर डाला है। शहरी बुनियादी ढांचे के लिए शहर में झीलों का बड़े पैमाने पर अतिक्रमण किया गया है और इसके परिणामस्वरूप, शहर के बीचों–बीच केवल 17 अच्छी झीलें मौजूद हैं, जबकि 1985 में 51 स्वस्थ झीलें थीं। मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के हिस्से के रूप में खेल के मैदानों और आवासीय कॉलोनियों और कुछ टैंकों को ध्वस्त कर दिया गया था। बढ़ती जनसंख्या और शहरीकरण ने गंभीर जल संकट को जन्म दिया है। प्रस्ताव विकासशील शहरों के लिए सतत बुनियादी ढांचे और जल आपूर्ति के लिए योजना, निष्पादन और रखरखाव के क्षेत्रों में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करके बेसिन की अंतर–कनेक्टिविटी में सुधार के बारे में बात करता है। उदयपुर में गुरुत्वाकर्षण संचालित प्रणाली के साथ सबसे पुरानी अंतर–बेसिन कनेक्टिविटी है, जिसमें कई चुनौतियां हैं, क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में, जलग्रहण क्षेत्र में कमी आई है और शहरीकरण के कारण पानी की गुणवत्ता खराब हो गई है। बाढ़ के दौरान झिल्लियों से भर जाने के कारण घाटियों की भंडारण क्षमता पिछले कुछ वर्षों में कम हो गई है। बैंगलोर में भी ऐसी ही समस्या है जो शहरीकरण और प्राकृतिक घाटियों के विचलित होने के कारण उत्पन्न हुई है। जैसे–जैसे शहरी आबादी बढ़ती है, बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए नए स्रोत खोजने की जरूरत है। यदि भूजल उपलब्ध है तो इसे पीने के लिए सुरक्षित बनाने के लिए इसे अक्सर न्यूनतम उपचार के साथ उपयोग किया जा सकता है। कस्बों और शहरों

प्रारूपकार

के लिए, बड़े यंत्रीकृत जल उपचार संयंत्रों द्वारा पानी की आपूर्ति की जाती है। कस्बों और शहरों के लिए, पानी की आपूर्ति तब बड़े मशीनीकृत जल उपचार संयंत्रों द्वारा प्रदान की जाती है जो एक बड़ी नदी या जलाशय से पानी खींचते हैं, पंपों का उपयोग करते हैं और पानी के उपचार के लिए नीचे उल्लिखित प्रक्रिया चरणों का पालन करते हैं। उपयोग किए गए पानी का भी उपचार किया जाता है।

योजनाः

जल को हमारे उपभोग का समर्थन करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में उपयोग किए जाने वाले पानी की मात्रा के रूप में मापा जाता है। एक विस्तृत जल पदचिह्न विश्लेषण वस्तुओं और सेवाओं की पूरी आपूर्ति श्रृंखला को प्रकट करेगा और उपयोग किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पानी की मात्रा निर्धारित करेगा। सतही या भूजल (नीला पानी), वर्षा का प्रभावी उपयोग (हरा पानी) और विभिन्न अस्थायी और स्थानिक पैमानों पर जल संसाधनों (ग्रे पानी) पर प्रदूषण का प्रभाव। जल पदचिह्न दुनिया के सीमित मीठे पानी के संसाधनों के मानव विनियोग को दर्शाता है और इस प्रकार मीठे पानी की प्रणालियों पर वस्तुओं और सेवाओं के प्रभावों का आकलन करने और उन प्रभावों को कम करने के लिए रणनीति तैयार करने के लिए एक आधार प्रदान करता है। वाटर फुटप्रिंट विश्लेषण का आउटपुट भौगोलिक क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर पानी की कुल मांग प्रदान करेगा। इन दो आउटपुट के साथ, हम यह निर्धारित कर सकते हैं कि पानी को कहाँ और कैसे मोड़ना है। हम उपयुक्त बेसिन लिंकिंग परियोजनाओं का अनुसरण कर सकते हैं। इसका प्रमुख उद्देश्य भारत में मौजूदा, चालू और प्रस्तावित जलाशय लिंक सिस्टम के बहु–जलाशय अनुकरण का संचालन करना है ताकि एक बेसिन से दूसरे बेसिन में पानी की आवश्यकता और मात्रा का पता लगाया जा सके। अध्ययन में निम्नलिखित कार्य शामिल होंगेः –लिंक सिस्टम से संबंधित प्रत्येक बेसिन में जलाशयों के एकीकृत संचालन के लिए दीर्घकालिक अनुकरण और परिचालन विश्वसनीयता का पता लगाना – सिमुलेशन के माध्यम से प्रत्येक जलाशय के प्रदर्शन को अनुकूलित करने और प्रत्येक बेसिन में सतही जल अधिशेष या कमी को मापने के लिए योजना में भूजल पर विचार और शुद्ध पानी की कमी को दूर करना, और – घाटे को पूरा करने के लिए डायवर्जन की मात्रा निर्धारित करना और जलाशयों के प्रदर्शन पर डायवर्जन के प्रभाव का अध्ययन करना। इन सभी अध्ययनों का अंतिम उद्देश्य शहर या भौगोलिक क्षेत्र का एक डिजिटल जुड़वां बनाना है। जिसका उपयोग अन्य जलाशयों के लिए भंडारण, जल प्रवाह, जलग्रहण क्षेत्र, संभावित मार्गों के सटीक स्थान का अनुकरण और पहचान करने के लिए किया जाएगा। सिमुलेशन सही बाढ़ की स्थिति की भविष्यवाणी करने में भी मदद करेगा।

निष्कर्षः–

भारतीय शहरों के भविष्य के लिए इंटर–कनेक्टेड बेसिन महत्वपूर्ण हैं क्योंकि आसपास के गांवों को शामिल करने के लिए भारतीय शहरों का तेजी से विस्तार हो रहा है। शहरीकरण और लगातार बढ़ती शहर की सीमाओं के दौरान, अग्रिम स्मार्ट जल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके शहर की योजना, निष्पादन और रखरखाव के हिस्से के रूप में बेसिन कनेक्टिविटी को जोड़कर जलग्रहण क्षेत्र को बढ़ाने की आवश्यकता होगी।

पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना–एक नजर में

ईश्वर लाल मौर्य

परिचय तथा भूमिका

दमनगंगा–पिंजाल लिंक परियोजना तथा पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना की विस्तृत परियोना रिपोर्ट तैयार करने के लिए गुजरात और महाराष्ट्र तथा भारत संघ के मध्य दिनांक 03 मई 2010 को नई दिल्ली में एक त्रिपक्षीय समझौता ज्ञापन (एम ओ यू) पर हस्ताक्षर किए गए।

पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना का मुख्य उद्देश्य गुजरात के सूखा प्रवण सौराष्ट्र क्षेत्र सहित लिंक के दायीं ओर आने वाले जनजातीय क्षेत्र को अधिकतम सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध कराना है। यह लिंक परियोजना गुजरात सरकार द्वारा प्रस्तावित पांच परियोजनाओं नामतः खुंताली, उगरा, सिघम्बर, खाता अमजा, जंखारी के कमान क्षेत्रों को भी जल उपलब्ध कराएगी। यह लिंक परियोजना पार–तापी–नर्मदा लिंक नहर के अन्तर्गत गुजरात राज्य के नर्मदा मुख्य नहर से छोटा उदयपुर तथा पंचमहल जिले में जनजातीय क्षेत्रों के अंतर्गत आने वाले कमानों में डांग तथा वलसाड जिलों के जनजातीय बहुल क्षेत्रों और महाराष्ट्र के नासिक जिले में आने वाले इसके निकट के अधिकतर गांवों में पेय जल सहित तथा पंचायतों के अधिकतर टैंकोंध्चौक डैम को प्रतिस्थापन के आधार पर जल उपलब्ध कराएगी।

राजविअ ने पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना की विस्तृत परियोजना अगस्त 2015 में पूरी कर ली है। राजविअ ने पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना की संशोधित विस्तृत परियोजना रिपोर्ट अप्रैल 2017 में पूरी कर ली है।

इस लिंक परियोजना का विवरण इस प्रकार है–

इसमें 6 बांध हैं नामतः

- पार बेसिन में झेरी और पैखेद बेसिन।
- औरंगा बेसिन में चसमंडवा बांध।
- अंबिका बेसिन में चिक्कार और दबदार बांध।
- पूरना बेसिन में केलवान बांध।

इसमें दो बैराज हैं नामतः–पैखेद और चिक्कार बांध स्थल के अनुप्रवाह में।

इसमें कुल 6 ऊर्जा घर हैं नामतः

- पैखेद, चसमंडवा, चिक्कार, दबदार और केलवान बांधों की तली में एक–एक।
- केलवान बांध को मुख्य नहर से जोड़ने वाली फीडर पाइप लाइन पर एक।
- फीडर पाइप लाइन तथा सुरंगों सहित 406 कि.मी. नहर।

6 जलाशयों के निर्माण से महाराष्ट्र का नासिक जिला तथा गुजरात के वलसाड और डांग जिलों के 6065 हैक्टेयर क्षेत्र डूब में आयेंगे। यह इससे होने वाली सबसे नकारात्मक प्रभाव है। इसमें

वार्षिक सिंचाई 2.32 लाख हैक्टेयर मार्गस्थ तथा गुजरात राज्य के जल न्यून सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र में शामिल है। वर्ष 2014–15 की मूल्य दर पर परियोजना की कुल लागत रूपये 10211 करोड़ आकलित की गई है।

परियोजना का लाभ–लागत अनुपात 1.035 तथा आंतरिक वापसी की दर 10.172% है।

प्रारूपकार

पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना से लाभ

- भारत सरकार की इस महत्वपूर्ण परियोजना से होने वाले संभावित लाभ कुछ इस प्रकार है।
- नौसारी, तापी, डांग तथा भरूच जिलों में लिंक नहर के मार्गस्थ 6110 हैक्टेयर नए कमान तक सिंचाई का प्रावधान।
- गुजरात सरकार द्वारा प्रस्तावित वलसाड, नौसारी तथा तापी जिलों के उगता, सिघम्बर खाटा अम्बा, जंखारी एवं खुंताली परियोजनाओं के 45461 हैक्टेयर कमान क्षेत्र में सिंचाई उपलब्ध कराना।
- तापी एवं सूरत तथा भरूच जिलों में लिफ्ट द्वारा पार–तापी–नर्मदा लिंक पहर के दायीं छोर पर जनजातीय क्षेत्रों को लाभ पहुंचाते हुए लगभग 36,200 हैक्टेयर क्षेत्र।
- नर्मदा मुख्य नहर से लिफ्ट द्वारा प्रतिस्थापन आधार पर छोटा उदयपुर तथा पंचमहल जिलों के कमान क्षेत्र में क्रमशः लगभग 23750 और 10592 हैक्टेयर।
- गुजरात के डांग और वलसाड जिले तथा महाराष्ट्र के नासिक जिले में जलाशय से लिफ्ट के माध्यम से 6 जलाशयों के आस–पास 12514 हैक्टेयर कमान क्षेत्र।
- सौराष्ट्र क्षेत्र में 42358 हैक्टेयर लक्ष्य कमान क्षेत्र।
- डांग और नौसारी जिलों के अधिकतर गांवों, वलसाड जिले के करपाड़ा और धरमपुर तालुका तथा नासिक जिले में झेरी जलाशय के आस–पास स्थित गांवों की लगभग 27.5 लाख जसंख्या को पेयजल आपूर्ति के लिए 76 एमसीएम जल का प्रावधान रखा गया है।
- परियोजना के निकट सभी जनजातीय क्षेत्रों में 2226 पंचायत टैंकों तथा गांव के टैंकोंध्चौक डैम को भरने के लिए लगभग 50 एम सी एम जल का प्रावधान रखा गया है।
- [ाद्यान्न सुरक्षा के लिए बड़े कदम।
- 6 ऊर्जा घरों से 102 मेगा यूनिट वार्षिक ऊर्जा उत्पादन।
- निर्माण के दौरान बड़े स्तर पर रोजगार सृजन क्षेत्र के सीमेंट और स्टील उद्योगों को मजबूती।
- द्वित्तीय और तृतीयक गतिविधियों के सृजन से रोजगार सृजन।
- परियोजना क्षेत्र में पर्यटन विकास।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जिन–जिन क्षेत्रों पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना स्थित है, वहां के लोगों के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्न्यन, पशुयान, रोजगार, मत्स्य पालन, विद्युत उत्पादन एवं अन्य तत्कालिक तथा मूलभूत सुविधाएं अवश्य मिलेंगी।

राजभाषा में यूनिकोड की आवश्यकता

राधा

यूनिकोड क्या है?

सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि यूनिकोड क्या है? क्या यूनिकोड कोई फोंट है? क्या यूनिकोड कोई टंकण का टूल है? या यूनिकोड कोई हिंदी या भारतीय भाषाओं में टंकण करने का तरीका है?

यूनिकोड एक टेक्नोलॉजी मानक है । यूनिकोड मानक में विश्वस्तर पर एवं प्रचलित सभी लिपियों के वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के लिए यूनिक कोड प्रदान किया गया है।

यूनिकोड (Unicode) प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष संख्या प्रदान करता है, चाहे कोई भी कम्प्यूटर प्लेटफॉर्म, प्रोग्राम अथवा कोई भी भाषा हो। यूनिकोड मानक को एपल, एच.पी., आई.बी.एम., माइक्रोसॉफ्ट, ऑरेकल, सैप, सन, यूनिसिस जैसी उद्योग की प्रमुख कम्पनियों और कई अन्य ने अपनाया है। यूनिकोड आई.एस.ओ/आई.ई.सी. 10646 (ISO/IEC 10646) एक अंतर्राष्ट्रीय मानक है। यह कई संचालन प्रणालियों, सभी आधुनिक ब्राउजरों और कई अन्य उत्पादों में उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं के लिए यूनिकोड एनकोडिंग के लिये UTF–8 का प्रयोग होता है।

यूनिकोड क्यों?

कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए यूनिकोड है । इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे – वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई–मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान–प्रदान तथा हिंदी की–वर्ड पर गूगल या किसी अन्य सर्च इंजन पर सर्च कर सकते हैं ।

राजभाषा विभाग ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एनकोडिंग की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रीय कार्यालय को कंप्यूटरों में यूनिकोड एनकोडिंग प्रणाली अथवा यूनिकोड समर्थित ओपन टाइप फोंट का ही प्रयोग करने का निर्देश दिया है। परंतु, कंप्यूटर परिचालन से संबंधित छोटी छोटी जानकारी के अभाव में कई केंद्रीय कार्यालय इस निःशुल्क सुविधा की जगह विभिन्न प्रकार के फोंट और बहुभाषी सॉफ्टवेयरों का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे सूचना हस्तांतरण में तकनीकी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । इस कारण हिंदी की फाइलों को, अंग्रेजी की तरह आसानी से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर, आदान–प्रदान (transfer) नहीं कर पाते हैं । हिंदी पाठ (text) को दूसरे सॉफ्टवेयर में जोड़ने (paste) में भी समस्या आती है । अतः सभी मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालय/उपक्रम/सरकारी बैंक केवल यूनिकोड समर्थित फोंट एवं यूनिकोड एनकोडिंग के अनुरूप सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करें । यूनिकोड एनकोडिंग को install/use करना बहुत आसान है । इसकी जानकारी राजभाषा विभाग की साइट (http//hindietools-nic-in) पर भी उपलब्ध है।

यूनिकोड का महत्व तथा लाभ

• एक ही दस्तावेज में अनेकों भाषाओं के जमगज लिखे जा सकते है।

• किसी सॉफ्टवेयर–उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की जरूरत नहीं पड़ती ।

• क्ष, त्र एवं ज्ञ के लिये अलग से कोड नहीं है। इन्हें संयुक्त वर्ण मानकर अन्य संयुक्त वर्णों की भांति इनका अलग से कोड नहीं दिया गया है।

• इस रेंज में बहुत से ऐसे वर्णों के लिये भी कोड दिये गये हैं जो सामान्यतः हिन्दी में व्यवहृत नहीं होते। किन्तु मराठी, सिन्धी, मलयालम आदि को देवनागरी में सम्यक ढंग से लिखने के लिये आवश्यक हैं।

• नुक्ता के लिये भी अलग से एक कोड दे दिया गया है। अतः नुक्तायुक्त अक्षर यूनिकोड की दृष्टि से दो प्रकार से लिखे जा सकते हैं – एक बाइट यूनिकोड के रूप में या दो बाइट यूनिकोड के रूप में। उदाहरण के लिए ज को ' ज'

राजभाषा में यूनिकोड की भूमिका

जुलाई–सितम्बर, 2017 24 राजभाषा भारती है यह सर्वभौमिक एन्कोडिंग प्रणाली "यूनिकोड" यानी सभी भाषाओं के लिए एक समान कोड। यूनिकोड एक अद्यतन तकनीक है। यह कोई फोंट नहीं है न कि कोई टंकण टूल या टंकण करने की तरीका। यूनिकोड एक टेकनोलाजी है

विंडोस 2000 के बाद के कम्प्यूटरों में यूनिकोड सक्रिय करना बहुत आसान हैं कंप्यूटर के कंट्रोल पैनल में जाकर बहुत आसान प्रक्रिया से प्रत्येक कम्प्यूटर को यूनिकोड सक्रिय किया जा सकता है।

यह उन लोगों के लिए बहुत फायदेमंद स्थापित हो गया है जिनकी मातृभाषा किसी भी भारतीय भाषा के रूप में हो तथा वह भाषा बोल सकते हैं किंतु लिखना नहीं जानते हैं तथा जो लोग अंग्रेजी का मानक कुंजीपटल का प्रयोग कर सकते हैं, लेकिन हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के कुंजीपटल से अपरिचित हैं। सरकारी कार्यालयों में आजकल बडे पैमाने पर इलेक्ट्रोनिक तरीके से काम हो रहा है। कम्प्यूटर ने सभी कार्य आसान कर दिया है सभी सरकारी कार्यालयों के कंप्यूटरों में हिंदी में शब्द संसाधन करने हेतु सभी कंप्यूटरों को यूनिकोड से सुसज्जित करने के लिए राजभाषा विभाग जोर दे रहा है। जिस कार्य निष्पादन हेतु प्रत्येक कार्यालय का अस्तित्व है वह कार्य कंप्यूटर के जरिए करने के लिए सोफ्टवेयर का निर्माण किया है तथा उससे संबंधित कार्य तीव्रता एवं सटीकता से संपन्न हो रहा है।

निष्कर्ष

अब यूनिकोड की उपलब्धता से कंप्यूटरों में हिदी में काम करना आसान हो गया है। हिंदी में कार्य का प्रतिशत भी बढ़ गया है। इंटरनेट में हिंदी साहित्य संबंधी लेख, कहानी, कविता अपलोड करने से विश्वभर के नेट प्रयोगकर्ता लाभान्वित हो रहे हैं। इस प्रकार हिंदी के विकास में पहले की तुलना में बहुत वृद्धि हो गई है। यहाँ फिर दोहराना उचित होगा कि किसी भी भाषा को भविष्य की विश्व–भाषा की मान्यता प्राप्त करने के लिए यह भी एक शर्त समझी जाती है कि वह कम्प्यूटर की भी भाषा हो। हिंदी इस कसौटी पर भी खरी उतर रही है। इसलिए निस्संदेह हम कह सकते है कि आने वाला समय, हिंदी का समय है और हिंदी का भविष्य भी उज्जवल है।

रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

जुलाई–सितम्बर, 2022 की तिमाही का तकनीकी सारसंग्रह

जुलाई–सितम्बर, 2022 की तिमाही के दौरान पूरे किए गए महत्वपूर्ण कार्य

क. जुलाई, 2022 के दौरान पूर्ण किए गए महत्वपूर्ण कार्य

- दिनांक 20 जुलाई, 2022 को केन बेतवा लिंक परियोजना (एससी–केबीएलपी) की संचालन समिति की दूसरी बैठक नई दिल्ली में सचिव, जल शक्ति मंत्रालय और अध्यक्ष, संचालन समिति, केबीएलपी की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

- दिनांक 12.07.2022 को केबीएलपी के परियोजना प्रबंधन सलाहकार के लिए ईओआई को अंतिम रूप देने के लिए सदस्य (डी एंड आर), सीडब्ल्यूसी की अध्यक्षता में परामर्श मूल्यांकन समिति की पहली बैठक आयोजित की गई ।

- मानस –संकोष – तिस्ता – गंगा, गंगा – दामोदर – सुवर्णरेखा, सुवर्णरेखा – महानदी, फरक्का – सुंदरबन लिंक परियोजना की प्रणाली अध्ययनों पर क्रमशः आईआईटी गुवाहाटी, एनआईटी पटना, एनआईटी वारंगल और एनआईएच रुड़की से प्राप्त परियोजना प्रस्तावों/रुचि की अभिव्यक्ति के मूल्यांकन के लिए निविदा मूल्यांकन समिति की बैठक दिनांक 18.07.2022 को आयोजित की गई।

- केन–बेतवा लिंक परियोजना चरण–। के अंतर्गत मौजूदा बरियारपुर पिकअप वियर के डी/एस में प्रस्तावित दो नए बैराजों की डायमंड डीप कोर ड्रिलिंग सहित भू–तकनीकी अन्वेषण के लिए कार्य प्रदान किया गया एवं ड्रिलिंग कार्य प्रगति पर है।

- दिनांक 06.07.2022 को केन–बेतवा लिंक परियोजना चरण –। के अंतर्गत महोबा टैंक के 16500 हेक्टेयर जलमग्न क्षेत्र और नहर/नाला मार्गस्थ टैंक के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए कार्य प्रदान किया गया।

- पन्ना टाइगर रिजर्व के भीतर केन–बेतवा लिंक परियोजना के अंतर्गत प्रभावित 21 गांवों के भूमि अधिग्रहण के लिए संपत्ति सर्वेक्षण का कार्य प्रगति पर है, 8 गांवों की जनगणना और मकान संपत्ति का सर्वेक्षण पूरा किया गया ।

- दिनांक 15.02.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने मु.अ.(मु.), रा.ज.वि.अ. के साथ सचिव, जल संसाधन विभाग बिहार सरकार पटना के साथ बिहार राज्य में आईएलआर परियोजनाओं के अध्ययन और कार्यान्वयन के संबंध में चर्चा की।

- दिनांक 01.07.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने बेंगलुरू में जल शक्ति मंत्रालय की संसदीय सलाहकार समिति की बैठक में भाग लिया।

- मु.अ.(द.)रा.ज.वि.अ., हैदराबाद ने डब्ल्यू–एन लिंक नहर संरेखण और गोसीखुर्द जलाशय का दौरा किया और दिनांक 19.07.2022 से 21.07.2022 तक नागपुर की अपनी यात्रा के दौरान जल संसाधन विभाग, महाराष्ट्र सरकार के अधिकारियों के साथ डब्ल्यू–एन लिंक परियोजना की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की।

(ख) **जुलाई, 2022 के दौरान महत्वपूर्ण बैठकें**

1. दिनांक 07.07.2022 कों महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने सम्मेलन कक्ष, पहली मंजिल, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, सी–विंग, श्रम शक्ति भवन में एकीकृत जल संसाधन प्रबंधन पर मसौदा मॉडल बिल पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।
2. दिनांक 06.07.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने सचिव, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली के चौंबर ऑफ सेक्रेटरी में मुख्य अभियंता (स्तर–।), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (रा.ज.वि.अ.) के पद के लिए चयन के लिए अन्वेषण–सह–चयन समिति की बैठक में भाग लिया।
3. दिनांक 07.07.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने चैंबर ऑफ एडवाइजर में माननीय केंद्रीय मंत्री के सलाहकार श्री श्रीराम वेदिरे के साथ बैठक में भाग लिया।

ग. लंबित/निकाले गए मुद्देः

(क) वन,पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्टेज– ।। वन मंजूरी का मुद्दा वन,पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय , मध्य प्रदेश राज्य (भूमि प्रबंधन) के पास विचाराधीन है।

(ख) वन,पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से लोअर ऑर परियोजना की पर्यावरण मंजूरी अभी तक प्राप्त नहीं हुई है और परियोजना में कार्य प्रगति पर है। इसे भी नियमित करने की जरूरत है।

(ग) नीरा के संविधान पर कैबिनेट नोट।

(घ) केबीएलपीए के अधिकारियों की नियुक्ति का मामला मंत्रालय में विचाराधीन है

अगस्त, 2022 के दौरान पूर्ण किए गए महत्वपूर्ण कार्य

- दिनांक 24.08.2022 को संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने मुख्य अभियंता (दक्षिण) का कार्यालय रा.ज.वि.अ. का निरीक्षण किया। महानिदेशक, मुख्य अभियंता (दक्षिण) सहित अन्य अधिकारी बैठक में शामिल हुए।
- दिनांक 18.08.2022 को मु. अ. (उ.), रा.ज.वि.अ. लखनऊ द्वारा संबंधित राज्यों/कार्यालयों को संशोधित पी–के–सी लिंक का पीएफआर परिचालित किया गया ।

- दिनांक 30.08.2022 को ''सबसे उपयुक्त वैकल्पिक योजना की पहचान के लिए सिस्टम अध्ययन पर उप समिति'' की 21वीं वर्चुअल बैठक रूप से आयोजित की गई ।

- (क)मानस–सकोष–तिस्ता–गंगा लिंक (ख) सुवर्णरेखा–महानदी लिंक (ग) गंगा–दामोदर–सुवर्णरेखा लिंक और (घ) फरक्का–सुंदरबन लिंक परियोजना के प्रणाली अध्ययन के लिए परामर्श कार्य क्रमश आईआईटी, गुवाहाटी, एनआईटी, वारंगल, एनआईटी पटना और एनआईएच, रुड़की को सौंपा गया।

- केन–बेतवा लिंक परियोजना के अंतर्गत प्रस्तावित नए बैराजों पैलानी बैराज और बांदा बैराज के लिए डायमंड कोर डीप ड्रिलिंग प्रगति पर है और जीएसआई, लखनऊ द्वारा प्रस्तावित बांदा बैराज पर दिनांक 16.08.2022 से 18.08.2022 तक 4 ड्रिल होल से कोर लॉगिंग नमूना एकत्र किया गया है और रिपोर्ट की प्रतीक्षा है।

- दिनांक 30.08.2022 को सेवा भवन, नई दिल्ली में आयोजित बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार मानव रहित हवाई वाहन (यूएवी)/ड्रोन प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए केन–बेतवा लिंक परियोजना के अंतर्गत प्रस्तावित बैराज स्थानों पर पैलानी बैराज और बांदा बैराज का स्थलाकृतिक सर्वेक्षण कार्य पूरा हो गया है और सॉफ्ट कॉपी में प्रारूप रेखा–चित्र प्राप्त हुआ ।

- केन बेतवा लिंक परियोजना के अंतर्गत महोबा, मार्गस्थ टैंकों और संबंधित नहरध्नाला के टैंकों के 16500 हेक्टेयर जलमग्न क्षेत्र के लिए स्थलाकृतिक सर्वेक्षण प्रगति पर है।

- दिनांक 26.08.2022 को केन उप–बेसिन के नीचे यमुना के मुक्त जलग्रहण (एफसीवाई) के पीडब्ल्यूबीएस को परिचालित किया गया है।

- दिनांक 26.08.2022 को का.अभि. अ.प्र.–।।, रा.ज.वि.अ., नासिक ने पालघर, महाराष्ट्र में माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री (जल शक्ति एवं जनजातीय कार्य) श्री बिश्वेश्वर टुडू द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक में भाग लिया।

- दिनांक 26.08.2022 को सारदा–यमुना लिंक परियोजना के नहर संरेखण के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और अन्य सर्वेक्षण कार्यों के लिए निविदा दस्तावेज रा.ज.वि.अ. की वेबसाइट और सीपीपी पोर्टल पर अपलोड किए गए है।

- दिनांक 22.08.2022 और 23.08.2022 को अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण सर्कल रा.ज.वि.अ. वलसाड और अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग । और ।। ने महाराष्ट्र के दमनगंगा (एकदरे)– गोदावरी और दमनगंगा–वैतरणा–गोदावरी अंतः राज्यीय लिंक के डिजाइन कार्य के संबंध में निदेशक (डिजाइन), केंद्रीय जल आयोग के साथ चर्चा की।

<u>अगस्त, 2022 के दौरान महत्वपूर्ण बैठकें</u>

1. दिनांक 03.08.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली के समिति कक्ष में सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग की अध्यक्षता में पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) में आ रही तकनीकी समस्याओं को हल करने के लिए सभी हितधारकों के साथ आयोजित बैठक में भाग लिया।
2. दिनांक 01.08.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की 6वीं बैठक पर अनुवर्ती कार्रवाई के लिए सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग द्वारा बुलाई गई बैठक में भाग लिया।
3. दिनांक 04.08.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में अपर सचिव (जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग) की अध्यक्षता में भारत की जी 20 के दौरान घटनाओं ध गतिविधियों की समीक्षा और अंतिम रूप देने के लिए बैठक में भाग लिया।
4. दिनांक 10.08.2022 को महानिदेशक रा.ज.वि.अ. ने 15:00 बजे श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली के सम्मेलन कक्ष में सचिव, जल संसाधन,नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग द्वारा जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग के इतिहास की समीक्षा / अद्यतन करने के लिए आयोजित बैठक में भाग लिया ।
5. दिनांक 29.08.2022 को महानिदेशक रा.ज.वि.अ. ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से रा.ज.वि.अ. के क्षेत्रीय अधिकारियों के साथ कार्यक्रम और कार्यों की प्रगति की समीक्षा की।
6. दिनांक 10.08.2022 को 16:30 बजे महानिदेशक रा.ज.वि.अ. ने माननीय जल शक्ति मंत्री, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, भवन, नई दिल्ली में माननीय जल शक्ति मंत्री की सिफारिशों के कार्यान्वयन की स्थिति पर आयोजित बैठक में भाग लिया।
7. दिनांक 12.08.2022 को महानिदेशक रा.ज.वि.अ. और निदेशक (तक) ने नीति आयोग के कक्ष संख्या 122 में डीएपीएससी के अंतर्गत एससी और एसटी के कल्याण के लिए संसाधनों के आवंटन की वयवस्था की समीक्षा करने के लिए नीति आयोग में विशेषज्ञ समिति की बैठक में भाग लिया।
8. दिनांक 16.08.2022 को महानिदेशक रा.ज.वि.अ. और निदेशक (तक) ने श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली के सम्मेलन कक्ष में सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग द्वारा ली गई समीक्षा बैठक में भाग लिया।
9. दिनांक 25.08.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ. ने सुषमा स्वराज भवन, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में संयुक्त नदी आयोग की 38वीं बैठक में भाग लिया।
10. दिनांक 22.08.2022 को महानिदेशक, रा.ज.वि.अ., मु. अ. (उ.) और निदेशक (तक) ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पार्वती–कालीसिंध–चंबल लिंक और पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना के प्रस्तावित एकीकरण के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए आयोजित बैठक में भाग लिया।
11. निदेशक (तक) ने चालू वित्त वर्ष यानी 2022–23 के दौरान जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग के अंतर्गत विभिन्न संगठनों द्वारा जीईएम के माध्यम से खरीद पर समीक्षा बैठक में भाग लिया।

ग. लंबित/स्वीकृत किए गए मुद्दे:

(क) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण–प्प वन स्वीकृति और केन–बेतवा लिंक परियोजना के लिए माननीय उच्चतम न्यायालय के सीईसी द्वारा स्वीकृति।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण–प्प वन स्वीकृति का मुद्दा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश राज्य (भूमि प्रबंधन) के पास विचाराधीन है।

(ख) लोअर ऑर परियोजना की पर्यावरणीय स्वीकृति पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से अभी प्राप्त नहीं हुई है और परियोजना में कार्य प्रगति पर है। इसे नियमित करने की जरूरत है।
(ग) नीरा के गठन पर कैबिनेट नोट।
(घ) केबीएलपीए के अधिकारियों की नियुक्ति का मामला मंत्रालय में विचाराधीन है।

सितंबर, 2022 के दौरान पूर्ण किए महत्वपूर्ण कार्य

- दिनांक 26.09.2022 को वर्चुअल मोड के माध्यम से जीएसआई, उत्तरी क्षेत्र, लखनऊ की 18वीं सीजीपीबी समिति– प (भू–वैज्ञानिक अन्वेषण) की बैठक आयोजित की गई ।

- दिनांक 07.09.2022 को मैट्रिक्स जियो–सॉल्यूशन, नई दिल्ली द्वारा ड्रोन प्रौद्योगिकी द्वारा स्थलाकृतिक सर्वेक्षण करने के बाद प्रस्तावित दो नए बैराज अक्ष (पैलानी और बांदा) की समोच्च योजना प्रस्तुत की गई।

- दिनांक 14.09.2022 को नई दिल्ली में सदस्य, डी एंड आर, सीडब्ल्यूसी की अध्यक्षता में केन–बेतवा लिंक परियोजना प्राधिकरण (केबीएलपीए) के लिए परियोजना प्रबंधन परामर्श (पीएमसी) सेवाओं की नियुक्ति के लिए परामर्शमूल्यांकन समिति (सीईसी) की दूसरी बैठक आयोजित की गई ।

- दिनांक 20.09.2022 को सोन बांध एसटीजी लिंक के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए तकनीकी बोलियों के मूल्यांकन के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से निविदा मूल्यांकन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- पश्चिम बंगाल में मानस–संकोष–तिस्ता–गंगा (एमएसटीजी) लिंक का नमूना कमान क्षेत्र का सर्वेक्षण करने का कार्य प्रगति पर है।

- दिनांक 20.09.2022 को शारदा–यमुना लिंक परियोजना के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए तकनीकी बोलियां आयोजित की गई।

- दिनांक 07.09.2022 को मध्याह्न 3:00 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शारदा यमुना लिंक नहर परियोजना के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए मुख्य अभियंता (उ.) की अध्यक्षता में बोली से पूर्व बैठक आयोजित की गई।

- डॉ. आर.एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (द.),राजविअ, हैदराबाद, श्री ए राजेश्वर राव, कार्यपालक अभियंता और श्री एसएस कलडगी, सहायक कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ,

बेंगलुरू द्वारा कृष्णा (अलमाटी)–पेन्नार परियोजना स्थल की लिंक नहर के स्थानों का दौरा किया गया।

- दिनांक 12.09.2022 को उदयपुर, राजस्थान में अधिशासी अभियंता, ग्वालियर ने माननीय मंत्री (जल शक्ति मंत्रालय) द्वारा बुलाई गई बैठक में भाग लिया।

- जामनी सब–बेसिन का पीडब्लूबीएस मुख्य अभियंता (उ.) कार्यालय, लखनऊ में प्राप्त हुआ और उसका अन्वेषण किया जा रहा है।

अगस्त, 2022 के दौरान आयोजित महत्वपूर्ण बैठकें

1. दिनांक 05.08.2022 को महानिदेशक, राजविअ ने सचिव (जल शक्ति मंत्रालय), श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली के कमरे में राष्ट्रीय नदी जोड़ प्राधिकरण के संबंध में सचिव के साथ बैठक में भाग लिया।

2. दिनांक 15.08.2022 को महानिदेशक,राजविअ ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सचिव (जल संसाधन,नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग) की अध्यक्षता में वीआईपीध्पीएमओ संदर्भों, पीजी शिकायतों, आश्वासनों, व्यय समीक्षा, विजन 2047 आदि पर चर्चा करने के लिए समीक्षा बैठक में भाग लिया।

3. दिनांक 23.08.2022 को महानिदेशक, राजविअ ने भारत जल सप्ताह, 2022 - अपर सचिव, जल शक्ति मंत्रालय,श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली के कक्ष में गतिविधियों की स्थिति पर चर्चा के संबंध में अपर सचिव के साथ बैठक में भाग लिया।

4. दिनांक 02.08.2022 को महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता(मुख्यालय) ने माननीय मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली के कक्ष में माननीय मंत्री (जल शक्ति मंत्रालय) की अध्यक्षता में आईडब्ल्यूडब्ल्यू–2022 की बैठक में भाग लिया।

5. दिनांक 12.08.2022 को महानिदेशक,राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने दूसरी मंजिल (एस), सेवा भवन, आरके पुरम, नई दिल्ली के समिति कक्ष में पार्वती–कालीसिंध–चंबल (पीकेसी) लिंक और पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) के प्रस्तावित एकीकरण के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।

6. दिनांक 13.08.2022 को महानिदेशक,राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सम्मेलन कक्ष,प्रथम मंजिल, श्रम, शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली में सचिव, जल संसाधन,नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग की अध्यक्षता में आउटपुट–आउटकम मॉनिटरिंग फ्रेमवर्क प्रगति की समीक्षा करने के लिए बैठक में भाग लिया।

7. दिनांक 13.08.2022 को मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने भारत की जी–20 अध्यक्षता के दौरान जल संसाधन,नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग में की जाने वाली गतिविधियों की समीक्षा और उसे अंतिम रूप देने के लिए अपर सचिव (जल संसाधन,नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग) की अध्यक्षता में आयोजित चौथी बैठक में भाग लिया।

8. दिनांक 21.08.2022 को मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में संयुक्त सचिव (आरडी एंड पीपी), जल संसाधन,नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग की अध्यक्षता में आयोजित आईडब्ल्यूडब्ल्यू –2022 की संचालन समिति की तीसरी बैठक में भाग लिया।

9. दिनांक 13.08.2022 को मुख्य अभियंता (उ.) और अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण सर्किल , राजविअ ग्वालियर और कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, झांसीध्भोपाल ने भोपाल में केन–बेतवा लिंक परियोजना के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने के लिए सीईओ, केबीएलपीए की अध्यक्षता में केबीएलपीए की दूसरी बैठक में भाग लिया।

10. दिनांक 16.08.2022 को अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण सर्किल, राजविअ ग्वालियर और कार्यपालक अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ,भोपाल ने पन्ना जिले के गांवों में केबीएलपी के संपत्ति सर्वेक्षण कार्य में प्रगति और बाधाओं की समीक्षा करने के लिए जिला कलेक्टर, पन्ना द्वारा ली गई समीक्षा बैठक और कलेक्टर कार्यालय पन्ना में अन्य मामलों और बिजावर तहसील के पलखुआ गांव में किए जा रहे संपत्ति सर्वेक्षण कार्य का निरीक्षण किया।

ग. लंबित/स्वीकृत किए गए मुद्दे:

(क) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण–।। वन स्वीकृति और केन–बेतवा लिंक परियोजना के लिए माननीय उच्चतम न्यायालय के सीईसी द्वारा स्वीकृति।

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की चरण–।। वन स्वीकृति का मुद्दा पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश राज्य (भूमि प्रबंधन) के पास विचाराधीन है।

(ख) लोअर ऑर परियोजना की पर्यावरणीय स्वीकृति पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से अभी प्राप्त नहीं हुई है और परियोजना में कार्य प्रगति पर है। इसे नियमित करने की आवश्यकता है।

(ग) नीरा के गठन पर कैबिनेट नोट।

(घ) केबीएलपीए के अधिकारियों की भर्ती का मामला मंत्रालय में विचाराधीन है।

लगा रहे प्रेम हिन्दी में, पढ़ूँ हिन्दी लिखूँ हिन्दी चलन हिन्दी चलूँ, हिन्दी पहरना, ओढना खाना। — **राम प्रसाद बिस्मिल जी**

'निज भाषा उन्नति रहे, सब उन्नति के बिनु निज भाषा ज्ञान के, रहत मूढ़-के-मूढ़।।' — **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**

01.07.2022 से 30.09.2022 तक नियुक्तियां

(क) प्रतिनियुक्ति/सीधी भर्ती वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	प्रतिनियुक्ति/सीधी भर्ती	तैनाती का स्थान
1.	श्री आशीष स्वामी सहायक अभियंता	सीधी भर्ती प्रभावी कार्य दिवस 11.07.2022	अ. प्र., राजविअ, झांसी
2.	श्री अमीर अहमद, सहायक अभियंता	सीधी भर्ती 23.07 2022 प्रभावी कार्य दिवस	अ. प्र., राजविअ, पटना
3.	श्री शुभम सुभाष वाघ सहायक अभियंता	सीधी भर्ती 25.07.2022 प्रभावी कार्य दिवस	अ. प्र., राजविअ, भोपाल
4.	श्री विवेक मित्तलायक सहायक अभियंता	सीधी भर्ती 26.07.2022 प्रभावी कार्य दिवस	अ. प्र., राजविअ, छत्तरपुर
5.	श्री अंकित कुमार सहायक अभियंता	सीधी भर्ती 24.08.2022 प्रभावी कार्य दिवस	अ. प्र., राजविअ,
6.	श्री बालेश्वर ठाकुर, मु. अ. (मु.)	सीधी भर्ती 24.08.2022 प्रभावी कार्य दिवस	रा.ज.वि.अ, मुख्यालय, नई दिल्ली
7.	निमिश उपाध्याय सहायक अभियंता	डीआर 01.09.2022 प्रभावी कार्य दिवस	मु. अ. (दक्षिण), राजविअ का कार्यालय, हैदराबाद
8.	श्री विवेक कुमार श्रीवास्तव सहायक अभियंता	सीधी भर्ती 02.09.2022 प्रभावी कार्य दिवस	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

पदोन्नतिः इस अवधि के दौरान पदोन्नति पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	पदोन्नति का पद एवं दिनांक	पदोन्नति के बाद तैनाती का स्थान
1.	श्री दीपक नफड़े आशुलिपिक ग्रेड–।	निजी सचिव प्रभावी कार्य दिवस 15.07.2022	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., ग्वालियर
2.	कमी. बसंती लता देई, प्रधान लिपिक	अधीक्षक ग्रेड–।। प्रभावी कार्य दिवस 19.07.2022	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर
3.	श्री आर.आर. पटेल, सहायक अभियंता	सहायक पूर्व अभियंता प्रभावी कार्य दिवस 20.07.2022	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., भोपाल
4.	श्री एन. सतीश कुमार कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता प्रभावी कार्य दिवस 22.07.2022	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

(ख) सेवानिवृत्ति/त्यागपत्र/प्रत्यावर्तन

राजविअ से सेवानिवृत्ति/त्यागपत्र/प्रत्यावर्तन पदाधिकारी।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	सेवानिवृत्ति/ प्रत्यावर्तन का दिनांक
1.	श्री राधेवेंद्र कुमार गुप्ता, अधि. अभि. अ.प्र., रा.ज.वि.अ., झांसी	31.07.2022
2.	श्री एस.के. सिंघल, का.अ., अ.प्र., रा.ज.वि.अ., वडोदरा	31.07.2022
3.	श्री जी.एस. सोनी, सहायक अभियंता, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., झांसी	31.07.2022
4.	श्रीमती जी. निर्मला, मुख्य प्रारूपकार, मु. अ. (दक्षिण), हैदराबाद कार्यालय	31.07.2022
5.	श्रीमती गीता बाथम, प्रवर श्रेणी लिपिक, अ.वृ., रा.ज.वि.अ., ग्वालियर	31.07.2022
6.	श्री ए.के. रॉय, प्रवर श्रेणी लिपिक, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., नागपुर	31.07.2022
7.	श्री जे.के. मुदुली, विषेश ग्रेड ड्राइवर, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर	31.07.2022
8.	श्री एम. चिन्नप्पा, एमटीएस, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., बेंगलुरु	31.07.2022
9.	श्री सुखा साई राम, एमटीएस, आईएसडी, रा.ज.वि.अ., रांची	31.07.2011 (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
10.	श्री दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., पटना	10.08.2022 (इस्तीफा)
11.	श्रीमती जैन्सी विजयन, निदेशक(एमडीयू), रा.ज.वि.अ. (मुख्यालय), नई दिल्ली।	31.07.2022
12.	श्री सुभाष सक्सेना, प्रधान लिपिक, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., ग्वालियर	31.07.2022
13.	श्री बालदास, एमटीएस, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	31.07.2022
14.	श्री डी–जी–चौहान, कार्यपालक अभियंता, अ.प्र., रा.ज.वि.अ.,वलसाड	31.07.2022
15.	श्री बी बी जेना, एमटीएस, अ.प्र., रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर	31.07.2022

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में राजभाषा संबंधी गतिविधियां
मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा 2022 का आयोजन

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय, नई दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में 14 सितम्बर, 2022 से 29 सितम्बर, 2022 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

सहायक निदेशक राजभाषा ने पखवाड़े की रूपरेखा प्रस्तुत की ।

मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई देते हुए कहा कि ''हिन्दी पखवाड़ा 2022 के शुभ अवसर पर राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण परिवार के सभी साथियों को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रसार के लिए कई कदम उठाए हैं। समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और इसी प्रकार की अन्य प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से सभी को साथ लेकर हिन्दी को बढ़ाने का प्रयास भी इन्ही कदमों में से एक है। जिस पर आप लोग बहुत ध्यान दे रहे हैं । उन्होंने आगे कहा हिन्दी बहुत ही सरल एंव सहज भाषा है। भारत सरकार ने इसे सरकार के कार्यालयों में काम–काज की भाषा घोषित किया है। हम सभी इसका उपयोग बड़ी सरलता से कर सकते हैं। और प्रायः यह देखा गया है कि डीलिंग हैंड द्वारा नोटिंग मुख्य रूप से हिन्दी में ही की जाती है। डीलिंग हैंड के इस प्रयास को देखते हुए उच्चाधिकारी भी उस पर अपनी टिप्पणियां एवं हस्ताक्षर आदि हिन्दी में ही करते हैं। हमारे कार्यालय के लिए यह बड़े गौरव की बात है।''

मुख्य अभियंता (द.) डॉ. आर.एन. संखुआ इस कार्यक्रम में गूगल मीट के माध्यम से जुड़े और उन्होंने दक्षिण भारत में रा.ज.वि.अ. के कार्यालयों में हिन्दी के कार्यों में प्रगति की तकनीकियों पर चर्चा किया और अपने अनुभवनों को साझा करते हुए हिन्दी में उत्तरोतर कार्य करते रहने की प्रेरणा की।

मुख्य अभियंता (उ.) शिवप्रकाश ने अपने अधीनस्थ कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की स्थिति पर चर्चा की आदि इस के कियान्वयन में आने वाली समस्याओं को दूर करने के अपने अनुभव को साझा किया!

महानिदेशक महोदय ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई दी और अपनी ओर से एक अपील जारी की। उन्होंने कहा कि ''आज हम सब हिन्दी दिवस समारोह एवं हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह के लिए गूगल मीट के माध्यम से एकत्र हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, उसी दिन की स्मृति में हम प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस का आयोजन करते हैं और राजभाषा का यह पखवाड़ा मनाते हैं। उन्होंने बहुत प्रसन्नतापूर्वक कहा कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी के प्रति जिस निष्ठा और लगन से काम किया जा रहा है और हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है और इस क्षेत्र में की गई प्रगति को बराबर बनाए भी हुए हैं इस कार्य में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का बराबर एवं सराहनीय सहयोग रहा है। इसके लिए आप सभी हार्दिक बधाई के पात्र हैं।

महानिदेशक महोदय ने हिन्दी में ही सोचने और केवल हिन्दी में ही कार्य करने के बारे में बताया कि शब्द हमारे सोचने की प्रक्रिया से निर्मित एवं परिस्कृत होकर हमारे समक्ष आते हैं। हम अपने कार्यक्षेत्र एवं विषय के अनुसार शब्दों का चयन करते हैं। यदि हम अपना कार्य आरंभ करते समय सोचने की प्रक्रिया के समय थोड़ा भी ध्यान दें तो स्वतः वे शब्द हिन्दी भाषा के ही निकलते हैं। यदि इस बात को ध्यान में रखा जाए तो अपने कार्यालय का सभी कार्य हिन्दी के माध्यम से भी निपटाया जा सकता है।''

निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, श्री डी.के.शर्मा ने मुख्य अभियंता तथा सभी पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी पखवाड़ा 2022 के उद्घाटन अवसर पर महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता महोदय एवं अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत है। विगत वर्षों की भांति इस बार भी राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है। सरकारी कामकाज में हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने और उसे बनाए रखने के लिए राजभाषा विभाग के नियमानुसार विभिन्न हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है और इस पखवाड़े में भी हिन्दी पत्राचार और हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन हेतु हिन्दी में एक मिनट की भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का हिन्दी में उत्तर देने पर प्रतियोगिता, प्रार्थना पत्र प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता, राजभाषा नीति और हिन्दी अनुवाद से संबंधित प्रश्नावली प्रतियोगिता के साथ–साथ वर्ष भर चालू मूल टिप्पणध्आलेखन प्रोत्साहन योजना, श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना, तकनीकी लेख प्रोत्साहन, प्रारूपकारों हेतु प्रोत्साहन योजना, जटिल मामलों पर टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन, बच्चों के लिए निबंध प्रोत्साहन योजना, राजभाषा वैजयंती आदि योजनाओं का भी आयोजन एवं उनका मूल्यांकन किया जाएगा।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता (मु.), निदेशक (तक.) महोदय एवं अन्य अध्किारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद किया और पखवाड़े में बढ़–चढ़कर भाग लेने का आग्रह किया।

अंत में राष्ट्रगान के साथ पखवाड़े के उद्घाटन समारोह का समापन हुआ ।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के सभी पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इस पखवाड़े को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान छह प्रतियोगिताएं निम्नानुसार आयोजित की गईं जिनके परिणाम इस प्रकार हैं:

एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता 19.09.2022

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारुपकार	
2.	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	द्वितीय
3.	मनोज कुमार धीमर, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	अनुराग, आशुलिपिक	
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	निधि शर्मा, आशुलिपिक	
	मिथलेश मौर्य, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
	ऊषा रानी, आशुलिपिक	
	मोहम्मद इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	

निबंध प्रतियोगिता 20.09.2022

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	मोहम्मद इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम संयुक्त
	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	
	अनुराग, आशुलिपिक	
	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
2.	मनोज कुमार धीमर, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	निर्मला सिह, आशुलिपिक	
	रामदास सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
3.	अंकित, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
	ऊषा रानी, आशुलिपिक	
	लाल मोहन महतो, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	निखिल विजे. , कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	

अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों का हिन्दी में उत्तर देने पर प्रतियोगिता 21.09.2022

क्र.सं.	**नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)**	**पुरस्कार**
1.	मनोज कुमार धीमर, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	
	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारुपकार	
2.	निखिल विजे. , कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	अनुराग, आशुलिपिक	
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	मोहम्मद इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	अर्जुन अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय संयुक्त
	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
	महेन्द्र, अवर श्रेणी लिपिक	
	मिथलेश मौर्य, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	कृष्णा गुर्जर, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
	पूजा मीना, आशुलिपिक	
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	

प्रार्थना पत्र प्रतियोगिता 22.09.2022

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	उमेश चन्द्र, एम.टी.एस.	प्रथम
2.	पी.एस. नेगी, एम.टी.एस.	द्वितीय
3.	भोपाल, एम.टी.एस.	तृतीय
4.	राजकंवर, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त
5.	हकीकत, एम.टी.एस.	

कविता प्रतियोगिता 23.09.2022

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	ऊषा रानी, आशुलिपिक	प्रथम संयुक्त
	मनोज कुमार, धीमर, कनिष्ठ अभियंता	
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारुपकार	
	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	
2.	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	निर्मला सिह, आशुलिपिक	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
	कृष्णा गुर्जर, कनिष्ठ अभियंता	
3.	शिवम शर्मा, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	
	लाल मोहन महेतो, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	विशाल सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	
	रजनी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	निखिल विजे. , कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	अमित बूरा, कनिष्ठ अभियंता	
	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	
	प्रिया विज, आशुलिपिक	
	महेन्द्र, अवर श्रेणी लिपिक	

प्रतियोगिता (राजभाषा नीति एवं अनुवाद) 26.09.2022

क्र.सं.	**नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)**	**पुरस्कार**
1.	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	मिथलेश मौर्य, प्रवर श्रेणी लिपिक	
2.	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	
	आरजू तोमर, अवर श्रेणी लिपिक	
3.	निखिल विजे. , कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	शिवम शर्मा, कनिष्ठ अभियंता	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	

	रामदास सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4.	धर्म सिंह बैरवा, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
5.	नरेन्द्र कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	
6.	विनय कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	
7.	सृजिता मुखर्जी, अवर श्रेणी लिपिक	

1. मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	**नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)**	**पुरस्कार**
1.	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
2.	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	प्रथम
3.	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
4.	चिरब्रत सरकार, निदेशक (प्रशा.)	द्वितीय
5.	रजनी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
6.	मिथलेश मौर्या, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
7.	ऊषा रानी, आशुलिपिक	तृतीय
8.	रामदास, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
9.	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय
10.	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	तृतीय

2. श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना में पुरस्कार हेतु

क्र.सं.	**नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)**	
1	राजेश कुमार उप निदेशक (प्रशा.)	अधिकारी वर्ग
	रीना वाधवा, आशुलिपिक	कर्मचारी वर्ग

3. तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजना:

क्र.सं.	**विषय**	**नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)**	**पुरस्कार**
1.	वैदिक रीति से दिव्य अमृत जल का प्रबंधन	डॉ. आर.एन.संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण)	प्रथम
2.	केन-बेतवा लिंक परियोजना-बुंदेलखंड में जल एवं खाद्यान्न सुरक्षा का समाधान	श्री धर्मेंद्र कुमार शर्मा, निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी	

3.	नदियों का परस्पर जोड़-कुछ उल्लेखनीय मुद्दे	श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
4.	भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम	श्री सतीश चंद्र अवस्थी, राजविअ, नई दिल्ली	
5.	नदियों का अंतर्योजन में बहार-सदियों का भारतीय सपना साकार	श्री के.एस.नायुडु, सहायक अभियंता	
6.	भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम	श्री हरि ओम वार्ष्णेय, सहायक अभियंता	
7.	भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम	श्री ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
8.	'जल है तो कल है'	श्री एस.के. श्रीवास्तव, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
9.	भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	

4. जटिल मामलों पर टिप्पण/ आलेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	टिप्पणी की स्थिति	पुरस्कार
1.	श्री ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	प्रथम
2.	चिरब्रत सरकार, निदेशक (प्रशा.)	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	द्वितीय
3.	एस.बी.पाण्डेय, कनिष्ठ लेखा अधिकारी	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	तृतीय
4.	श्री विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	प्रोत्साहन

5. बच्चों के लिए निबंध लेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं कक्षा	पिता/माता का नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)
1.	वंशिका स्यानियां (9वीं)	ललित कुमार स्यानियां, सहायक अभियंता
2.	आर्यन स्यानियां (10वीं)	
3.	हंर्षिखा (12वीं)	निर्मला सिह, आशुलिपिक
4.	हर्षिता लाल (9वीं)	आर.एस. लाल, कार्यक्रम सहायक
5.	यशिका गोस्वामी (9वीं)	विमेश गोस्वामी, प्रारूपकार
6.	वैभव (9वीं)	लाल मोहन महतो, प्रवर श्रेणी लिपिक
7.	अदा कश्यप (12वीं)	रीता कश्यप, आशुलिपिक
8.	प्रखर वाधवा (9वीं)	रीना वाधवा, आशुलिपिक

9.	निखिल मौर्य (11वीं)	श्री ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार
10.	श्रेया (6वीं)	राधा गुप्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक
11.	श्रद्धा मौर्या (तीसरी)	मिथलेश मौर्या, प्रवर श्रेणी लिपिक
12.	कार्तिक बघेल (8वीं)	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता
13.	प्रेरणा बघेल (8वीं)	
14.	रिदा कश्यप (7वीं)	रीता कश्यप, आशुलिपिक
15.	बानी (5वीं)	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक
16.	अरायना सैफी (6वीं)	मोहम्मद इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक
17.	प्रत्युषा (तीसरी)	ऊषा रानी, आशुलिपिक
18.	प्रत्यूष (तीसरी)	
19.	चिराग राजपूत (पहली)	राधा गुप्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक
20.	प्रत्युष वाधवा (तीसरी)	रीना वाधवा, आशुलिपिक

6. राजभाषा वैजयंती. प्रोत्साहन योजना

राजभाषा वैजयंती, अन्वेषण सर्किल, हैदराबाद को और लघु राजभाषा वैजयंती उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभागों को प्रदान की गई।

7. प्रारूपकारों हेतु प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम एवं पदनाम	टिप्पणी की स्थिति	पुरस्कार
1	श्री विमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार, नई दिल्ली	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	प्रथम
2	श्री साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार, अन्वेषण प्रभाग, भोपाल	संबंधित साक्ष्यों सहित प्रविष्टियां संलग्न	द्वितीय

समापन समारोह

दिनांक 29.09.2022 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा किया गया ।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, निर्णायक की भूमिका निभाने वाले सभी वरिष्ठ अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया एवं पुरस्कारों संबंधी उद्घोषणा की।

तत्पश्चात् मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास भी है कि हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने सभी प्रकार के काम सरलता से पूरा करने में सक्षम हैं।

महानिदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़े की सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कारों को जीतने की बधाई दी और इस उत्साह को सदैव बनाए रखने की प्रेरणा दी।

अंत में निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने यह भी बताया कि प्रतियोगिताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के सभी निर्णायकों ने निर्णय लेते समय ध्यान में रखा है कि जो पदाधिकारी हिन्दी में काम करते हैं उन्हें पूरा प्रोत्साहन मिले और दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिले कि वो अपना काम हिन्दी में कर सकते हैं।

सहायक निदेशक (राजभाषा) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ।

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन
मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2022 का आयोजन

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

त्वरित भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	श्री संजय त्रिपाठी, सहायक अभियन्ता	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)
2.	श्री हरि ओम वार्ष्णेय, सहायक अभियन्ता	
3.	श्रीमती जसविंदर कौर, सहायक निदेशक	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)
4.	श्री राजेन्द्र सिंह नयाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	
5.	श्री अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)
6.	श्री एस0 बी0 सिंह, प्र0लि0	
7.	श्री जय प्रकाश, एम0टी0एस0	
8.	श्री आकाश श्रीवास्तव, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त)
9.	श्री नवीन कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	
10.	श्री खुशी राम, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार (गैर हिन्दी भाषी) (संयुक्त)
11.	श्री सी0 बी0 थापा, वाहन चालक–।।	

प्रश्नोत्तरी (मौखिक) प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	श्री आकाश श्रीवास्तव, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)
2.	श्री राजेन्द्र सिंह नयाल, प्रवर श्रेणी लिपिक	
3.	श्री करन कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)
4.	श्री खुशी राम, अवर श्रेणी लिपिक	
5.	श्री दिनेश कुमार, आशुलिपिक श्रेणी–।।	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)
6.	श्री सी0 बी0 थापा, वाहन चालक–।।	
7.	श्री प्रमोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार (संयुक्त)
8.	श्री जय प्रकाश, एम0टी0एस0	
9.	श्री एस0 बी0 सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार (गैर हिन्दी भाषी) (संयुक्त)

हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम दिनांक 29.09.2022 को श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उत्तर) की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया। मुख्य अभियंता (उत्तर) ने अपने संबोधन में हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन व पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं, बच्चों की निबंध प्रतियोगिता एवं मूल टिप्पण/आलेखन के सभी विजेताओं को बधाई दी एवं हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए सभी को सामूहिक प्रयास निरन्तर जारी रखने की अपील की तथा राजभाषा हिन्दी में निरन्तर कार्य वृद्धि के लिए धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया।

अन्वेषण वृत / प्रभाग, राजविअ, ग्वालियर

दिनांक 20 सितम्बर 2022 को अन्वेषण वृत / प्रभाग कार्यालय में "हिन्दी श्रुतलेख" प्रतियोगिता क्रमश: पूर्वान्ह 11.00 बजे एवं अपरान्ह 03.00 बजे आयोजित की गई । इसी प्रकार दिनांक 26 सितम्बर 2022 को ''प्रश्नावली'' प्रतियोगिता आयोजित की गई । अन्वषेण उप-प्रभाग,जयपुर में दिनांक 27 सितम्बर 2022 को प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित की गई। इन प्रतियोगिताओं में सम्मिलित प्रतियोगियों द्वारा प्राप्त पुरस्कारों का विवरण निम्नानुसार है:-

<u>श्रुतलेख प्रतियोगिता</u> :-

क्र.सं.	**अन्वेषण वृत, राजविअ, ग्वालियर** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	दीपक नाफडे., निजी सचिव	प्रथम
2	पी.एन. सोनी, सहायक अभियंता	द्वितीय संयुक्त
3	प्रवीण दीक्षित, प्र०श्रे०लि०	
4	आशु सोनी, अ०श्रे०लि०	तृतीय
5	उत्कर्ष सोनकर, अ०श्रे०लि०	प्रोत्साहन

क्र.सं.	**अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, ग्वालियर** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	राकेश कुमार, प्रारूपकार	प्रथम
2	सोनवीर भगौर, प्र०श्रे०लि०	द्वितीय
3	पवन, अ०श्रे०लि०	तृतीय
4	रूपराव आर. हेडाऊ , सहा.अ.अ.	प्रोत्साहन
5	अमरजीत, प्र०श्रे०लि०	प्रोत्साहन

"प्रश्नावली" प्रतियोगिता:-

क्र.सं.	**अन्वेषण वृत, राजविअ, ग्वालियर** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	आशु सोनी, अ०श्रे०लि०	प्रथम
2	पी.एन. सोनी, सहायक अभियंता	द्वितीय संयुक्त
3	दीपक नाफडे., निजी सचिव	
4	प्रवीण दीक्षित, प्र०श्रे०लि०	तृतीय

क्र.सं.	**अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, ग्वालियर** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	रूपराव आर. हेडाऊ , सहा.अ.अ.	प्रथम
2	पवन, अ.श्रे.लि.	द्वितीय
3	राकेश कुमार, प्रारूपकार	तृतीय
4	सोनवीर भगौर, प्र०श्रे०लि०	प्रोत्साहन

क्र.सं.	**अन्वेषण उप-प्रभाग, राजविअ, जयपुर** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	सुनील मीणा, अ०श्रे०लि०	प्रथम
2	रामकिशन तोमर, एम०टी०एस०	द्वितीय

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी

दिनांक 16 सितम्बर 2022 को अन्वेषण प्रभाग झांसी में ''श्रुतलेख'' एवं दिनांक 23 सितम्बर 2022 को ''प्रश्नोत्तरी'' प्रतियोगिता आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में सम्मिलित प्रतियोगियों द्वारा प्राप्त पुरस्कारों का विवरण निम्नानुसार है:-

"श्रुत लेखन" प्रतियोगिता

क्र.सं.	**अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	अमित तिवारी, क०अ०	प्रथम
2	निशान्त निशु, क०ले०अ०	द्वितीय
3	आशीष स्वामी, स०अ०	तृतीय
4	विनीत, अ०श्रे०लि०	प्रोत्साहन

"प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता

क्र.सं.	**अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	विनीत, अ०श्रे०लि०	प्रथम
2	अमित तिवारी, क०अ०	द्वितीय
3	रवि कुमार, अ०श्रे०लि०	तृतीय
4	अंशुल जैन, स०अ०	प्रोत्साहन संयुक्त
5	ओम प्रकाश लिखार, अधीक्षक	
6	आशीष स्वामी, स०अ०	
7	निशान्त निशु, क०ले०अ०	
8	राजेश कुमार, वाहन चालक	
	निर्णायक: श्री आर.के.बिजोरिया, स.अ.	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भोपाल

दिनांक 17 सितम्बर 2022 को अन्वेषण प्रभाग भोपाल में "शुद्ध लेखन" प्रतियोगिता एवं दिनांक 21 सितम्बर 2022 को ''प्रश्नोत्तरी'' प्रतियोगिता आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में सम्मिलित प्रतियोगियों द्वारा प्राप्त पुरस्कारों का विवरण निम्नानुसार है:-

"हिन्दी शुद्ध लेखन" प्रतियोगिता

क्र.सं.	**अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्र.लि.	प्रथम
2	गोविन्द, आशुलिपिक	द्वितीय
3	कपिल, अ०श्रे०लि०	तृतीय
4	अरूण गंगाधर साली, प्रारूपकार	प्रोत्साहन
5	शुभम सुभाष वाघ, स०अ०	प्रोत्साहन

"प्रश्नोत्तरी" प्रतियोगिता

क्र.सं.	**अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, भोपाल** सर्वश्री/श्रीमती	पुरस्कार
1	कपिल, अ०श्रे०लि०	प्रथम
2	गोविन्द, आशुलिपिक	द्वितीय
3	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्र.लि.	तृतीय
4	शुभम सुभाष वाघ, स०अ०	प्रोत्साहन
5	अरूण गंगाधर साली, प्रारूपकार	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, के भुवनेश्वर स्थित अन्वेषण वृत्त में "हिन्दी पखवाड़ा- 2022" का आयोजन दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक की समयावधि में किया गया, जिसमें अन्वेषण वृत्त व प्रभाग कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पूरे उत्साह से बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

हिन्दी पखवाड़ा-2022 के दौरान जिन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया उनका विवरण प्रकार है :-

अन्वेषण वृत्त, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस. पी. तोमर, सहायक अभियंता	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त)
	एस. सी. पारुई, सहायक अभियंता	
	डी. किरण कुमार, कनिष्ठ अभियंता	
	आर.सी. बेहुरा, एम.टी.एस.	
2	ए. पी. बास्की, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त)
	एस. आर., महापात्र, प्रारूपकार श्रेणी – II	
	सुरेश, अवर श्रेणी लिपिक	
3	एम. एम. धल, आशुलिपिक श्रेणी–I	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त)
	यू. के. रथ, प्रधान लिपिक	
	आर. के. मल्लिक, एम.टी.एस.	
4	के. रमणा राव, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन पुरस्कार – I
5	जे. महालिक, प्रारूपकार श्रेणी – III	प्रोत्साहन पुरस्कार – II
	यू.के. मिश्रा, वाहन चालक विशेष श्रेणी	

प्रश्नावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस. पी. तोमर, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	एस. सी. पारुई, सहायक अभियंता	
	डी. किरण कुमार, कनिष्ठ अभियंता	
	श्री एम. एम. धल, आशुलिपिक श्रेणी – I	
2.	ए. पी. बास्की, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	यू. के. रथ, प्रधान लिपिक	
	एस. आर., महापात्र, प्रारूपकार श्रेणी – II	
	जे. महालिक, प्रारूपकार श्रेणी – III	
3.	सुरेश, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय संयुक्त
	श्री के. रमणा राव, अवर श्रेणी लिपिक	
	आर. के. मल्लिक, एम.टी.एस.	
	एस. एन. गौडा, एम.टी.एस.	
4.	आर.सी. बेहुरा, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त
	यू. के. मिश्रा, वाहन चालक विशेष श्रेणी	

अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एम. कोदंडराम, सहायक अभियन्ता	प्रथम संयुक्त
	विवेक कुमार श्रीवास्तव, सहायक अभियन्ता	
	विकास रंजन, कनिष्ठ अभियन्ता	
	कुमारी बी.एल देई, अधीक्षक श्रेणी– ।।	
2.	कुमारी सुजाता सेनापति, कनिष्ठ अभियन्ता	द्वितीय संयुक्त
	आर एन पंडा, प्रधान लिपिक	
	हर्षित सहजपाल, आशुलिपिक श्रेणी– ।।	
	ए.के पाढ़ी, बाहन चालाक श्रेणी– ।।	
3.	श्रीमती के.के.महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी – II	तृतीय संयुक्त
	डी. सी. साहु , प्रबर श्रेणी लिपिक	
	एस.के. चंपती, एम.टी.एस	
4.	के.पी.राव, सहायक अधिशासी अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	एस महंती, प्रारूपकार श्रेणी – ।।	
	पी. के.आचार्य, एम.टी.एस	
	बी.सुब्रमन्यम, एम.टी.एस	

प्रश्नावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	कुमारी सुजाता सेनापति, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रथम संयुक्त
	विकास रंजन, कनिठ अभियन्ता	
	के.के.महान्ती, प्रारूपकार श्रेणी – II	
	एस महंती, प्रारूपकार श्रेणी – II	
2.	एम. कोदंडराम, सहायक अभियन्ता	द्वितीय संयुक्त
	कुमारी बी.एल देई, अधीक्षक श्रेणी– II	
	ए.के पाढ़ी, बाहन चालाक श्रेणी– I	
3.	विवेक कुमार श्रीवास्तव, सहायक अभियन्ता	तृतीय संयुक्त
	डी. सी. साहु , प्रबर श्रेणी लिपिक	
	हर्षित सहजपाल, आशुलिपिक श्रेणी– II	
4.	एस.के. चंपती, एम.टी.एस	प्रोत्साहन संयुक्त
	पी. के.आचार्य, एम.टी.एस	
	आर एन पंडा, प्रधान लिपिक	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता, में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है

प्रश्नावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	दिपांशु पांचाल, अ श्रे लिपिक	प्रथम संयुक्त
	एस बी धीरसामन्त, प्रधान लिपिक	
2.	लक्ष्मण टुडू, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	बिश्वजीत महान्ती, सहायक अभियंता	
3.	प्रवीन सुहाग, आशुलिपिक श्रेणी–प्प	तृतीय संयुक्त
	अर्घ्य प्रसाद प्रामानिक, कनिष्ठ अभियंता	
4.	जी. बी. सामल, अ श्रे लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	ए. एच. चौधरी, एमटी. एस.	

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	दिपांशु पांचाल, अ श्रे लिपिक	प्रथम संयुक्त
	एस बी धीरसामन्त, प्रधान लिपिक	
2.	अर्घ्य प्रसाद प्रामानिक, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
	प्रवीन सुहाग, आशुलिपिक श्रेणी–प्प	
3.	बिश्वजीत महान्ती, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	लक्ष्मण टुडू, कनिष्ठ अभियंता	
4.	जी. बी. सामल, अ श्रे लिपिक	प्रोत्साहन
5.	ए. एच. चौधरी, एम. टी. एस	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., पटना

निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र सं	प्रतियोगियों के नाम (श्री / श्रीमति)	पुरस्कार
1	शशि रंजन, अ.श्रे.लि	प्रथम पुरस्कार
2	शुभम पांडेय, क.अ	द्वितीय पुरस्कार
3	निरंजन स्वॉई, प्रधान लिपिक	सांत्वना पुरस्कार
4	करण कुमार, आशुलिपिक	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप में)
5	विवेक कुमार, अ.श्रे.लि	
6	दीन दयाल प्रसाद, एमटीएस	सांत्वना पुरस्कार

नारा लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	प्रतियोगियों के नाम (श्री / श्रीमति)	पुरस्कार
1	निरंजन स्वॉई, प्रधान लिपिक	प्रथम पुरस्कार (संयुक्त रूप में)
2	शुभम पांडेय, क.अ	
3	शशि रंजन, अ.श्रे.लि	द्वितीय पुरस्कार (संयुक्त रूप में)
4	विवेक कुमार, अ.श्रे.लि	

5	करण कुमार, आशुलिपिक	तृतीय पुरस्कार (संयुक्त रूप में)
6	अंकुर, प्र.श्रे.लि	
7	दीन दयाल प्रसाद, एमटीएस	सांत्वना पुरस्कार
8	प्रमोद कुमार दास, एमटीएस	सांत्वना पुरस्कार

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	प्रतियोगियों के नाम (श्री / श्रीमति)	पुरस्कार
1.	इन्दु जायसवाल, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
2.	आमिर अहमद, सहायक अभियंता,	प्रथम संयुक्त
3.	हिमाँशु कुमार टुडु, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन पुरस्कार
4.	सन्नी कुमार, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय पुरस्कार संयुक्त
5.	नवनीत गोयल, कनिष्ठ लेखाकर	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
6.	निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी–।।	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
7.	अंकुर, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय पुरस्कार संयुक्त
8.	प्रशांत कुमार दास, एम.टी.एस	प्रोत्साहन पुरस्कार

कविता लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	प्रतियोगियों के नाम (श्री / श्रीमति)	पुरस्कार
1.	इन्दु जायसवाल, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन पुरस्कार
2.	आमिर अहमद, सहायक अभियंता,	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
3.	श्री सन्नी कुमार, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय पुरस्कार संयुक्त
4.	नवनीत गोयल, कनिष्ठ लेखाकर	तृतीय पुरस्कार
5.	निरंजन पाठक, आशुलिपिक श्रेणी–।।	प्रथम पुरस्कार
6.	प्रशांत कुमार दास, एम.टी.एस	प्रोत्साहन पुरस्कार

अन्वेषण उप–प्रभाग, रा.ज.वि.अ., राँची

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	प्रतियोगियों के नाम (श्री / श्रीमति)	पुरस्कार
1.	अजय विश्वास, सहायक अभियंता	द्वितीय
2.	सत्यनारायण कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम

कविता लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	प्रतियोगियों के नाम (श्री / श्रीमति)	पुरस्कार
1	अजय विश्वास, सहायक अभियंता	प्रथम
2	सत्यनारायण कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	शिवा कान्त पाण्डेय, सहायक अभियंता नन्द लाल चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
2.	प्रमोद कुमार, सहायक अभियंता बिबियाना सांगा, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
3.	तेजप्रकाश यादव, प्रवर श्रेणी लिपिक अभयराज मीणा, कनिष्ठ अभियंता विनय सलूजा, क.लेखाकार	तृतीय संयुक्त
4.	बिपिन कुमार, एम. टी. एस.	प्रोत्साहन
5.	सुरेश चन्द्र, एम.टी.एस. अशोक कुमार शुक्ला, प्र. श्रे. लि.	प्रोत्साहन

प्रश्नावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	शिवा कान्त पाण्डेय, सहायक अभियंता	
	नन्द लाल चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
2.	प्रमोद कुमार, सहायक अभियंता	
	बिबियाना सांगा, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
3.	मनीष कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	
	अभयराज मीणा, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
4.	तेजप्रकाश यादव, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
5.	बिपिन कुमार, एम.टी.एस.	
	सुरेश चन्द्र, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा –2022 का आयोजन

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद में संयुक्त रूप से दिनांक 14.9.2022 से 29.9.2022 तक अपने अपने कार्यालय में ही अलग अलग हिन्दी पखवाड़ा 2022 का आयोजन किया गया। अन्वेषण वृत, राजविअ, वलसाड एवं अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वलसाड कार्यालय में दिनांक 14.9.2022 से 29.9.2022 तक की अवधि के दौरान किये गये हिन्दी पखवाडे का अलग अलग रूप से आयोजन किया गया, 14 सिंतबर, 2022 को हिन्दी पखवाडे का शुभारंभ हुआ, इस अवसर पर सी एच.वै.सुब्रह्मण्यम, अधीक्षण अभियंता द्वारा महानिदेशक, राजविअ का संदेश पढकर सुनाया गयो और श्री डी.जी.चौहान, अधिशासी अभियंता ने हिन्दी पखवाडे के आयोजन तथा इसके अंर्तगत आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं की जानकारी दी और वर्षभर कार्यालयीन कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का अनुरोध किया गया ।

उक्त पखवाडे के दौरान अन्वेषण वृत, राजविअ, वलसाड एवं अन्वेषण प्रभाग, वलसाड/वडोदरा/नाशिक–।/।। कार्यालयों द्वारा अलग रूप से निम्नलिखित दो प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

उक्त प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनांक 16.09.2022 को श्री जे.एन. चौहान, सहायक निदेशक अन्वेषण वृत, राजविअ, वलसाड द्वारा "अवकाश नियमावली" विषय पर हिन्दी में अन्वेषण वृत एवं अन्वेषण प्रभाग कार्यालय का सयुंक्त रूप से कार्यशाला ली गई ।दिनांक 29.9.2022 को हिन्दी पखवाडे का समापन समारोह आयोजित किया गया। प्रतियोगिता के इनामों की धोषणा एवं पुरस्कार वितरण श्री डी.जी.चौहान, अधिशासी अभियंता द्वारा किया गया । समापन समारोह के अंत में श्री डी.जी.चौहान, अधिशासी अभियंता ने हिन्दी पखवाडे में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए और कार्यक्रम सफल बनाने के लिए धन्यवाद किया एवं अधिकारियों एवं कर्मचारियों से ज्यादातर कार्य हिन्दी में करने हेतु अनुरोध किया। मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण वृत्त एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद में संयुक्त रूप से दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाड़ा 2022 का आयोजन किया गया। हिन्दी पकवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमो को सुचारू रूप से चलाने हेतु, अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण वृत्त, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद की अध्यक्षता में एक प्रबंधन समिति का गठन किया गया है। दिनांक 14.09.2022 को हुई उदघाटन समारोह में मान्यवर गृह मंत्री का संदेश अधीक्षण अभियंता ने पढ़ा और मुख्य अभियंता (दक्षिण), ने महानिदेशक महोदय की अपील पढ़ी। इसके अतिरिक्त मूलटिप्पण आलेखन हेतु प्रोत्साहन पुरस्कार, रा.ज.वि.अ के वर्ष 2021–22 के अंतर्गत कार्यालयीन हिन्दी के उत्कृष्ट योगदन हेतु शील्ड भी वितरित किया गया है। सभी पदाधिकारियों ने बड़े उल्लास से तीनों प्रतियोगिताओं में भाग लिया। दिनांक 29.09.2022 को आयोजित पखवाड़े का समापन समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओ को पुरस्कार वितरित किए गए।

हिन्दी पखवाडे के अंतर्गत आयोजित की गई दो प्रतियोगिता के विजेताओं की सूची इस प्रकार है ।

शब्दावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	श्री/श्रीमती/कु	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम संयुक्त रूप से
2	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	निमिष उपाध्याय, सहायक अभियंता	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त रूप से
5	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
6	संजय कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
7	हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

8	संदीप सुमन, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त रूप से
9	जी. नरसिम्हा राव, प्रधान लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
10	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजू, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
11	के.पी. महेश्वर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
12	हारिस पी., कनिष्ठ लेखा अधिकारी	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त रूप से
13	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
14	दाड़ी बाग्या नुकेश, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
15	डी. सुधाकर, प्रारूपकार श्रेणी–।।	मु.अ. (द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
16	जी. वीर्जानन्द, प्रारूपकार श्रेणी–।।	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
17	एम. सत्यनारायणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
18	सी. एच. वेकंट किशोर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

शब्दावली/कार्यशाला में भाग लेते प्रतिभागी

निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	श्री/श्रीमती/कु	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम संयुक्त रूप से
2	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त रूप से
4	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5	दिनेश कुमार शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त रूप से
6	संदीप सुमन, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
7	एस. वी. शिव कुमार यादव, आशुलिपिक श्रेणी–।।	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त रूप से
8	हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
9	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजू, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
10	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

गंगा समूह			
1	सतीश कुमार, सहायक अभियंता	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम संयुक्त
2	निमिष उपाध्याय, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	संदीप सुमन, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	जी. नरसिम्हा राव, प्रधान लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
गोदावरी समूह			
1	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त
2	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	डी. सुधाकर, प्रारूपकार श्रेणी–।।	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	दिनेश कुमार शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5	डी. रामाकृष्णा, साधारण चालक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
कृष्णा समूह			
1	महेन्द्र राज, प्रारूपकार श्रेणी–।।	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त
2	जी. वीर्जानन्द, प्रारूपकार श्रेणी–।।	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	शेखर नायक, प्रधान लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	एस. वी. शिव कुमार यादव, आशुलिपिक श्रेणी–।।	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5	संजय कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
नर्मदा समूह			
1	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त रूप से
2	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	हीरा लाल, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	वी. रामि रेड्डी, चालक विशेष श्रेणी	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5	के. सत्यनारायण, एम.टी.एस	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
कावेरी समूह			
1	हारिस पी., कनिष्ठ लेखा अधिकारी	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त रूप से
2	दाड़ी बाग्या नुकेश, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
3	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजू, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	सी. एच. वेकंट किशोर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
5	के. पी. महेश्वर, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

प्रश्नमंच में भाग लेते प्रतिभागी

भाषण प्रतियोगिता

दिनांक **15.09.2022** को इंजीनियर्स डे के उपलक्ष्य में एक भाषण प्रतियोगिता, जिसका शीर्षक था "देश की प्रगति में इंजीनियर्स की भूमिका" का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निम्न पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम पुरस्कार
2	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय पुरस्कार
3	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय पुरस्कार

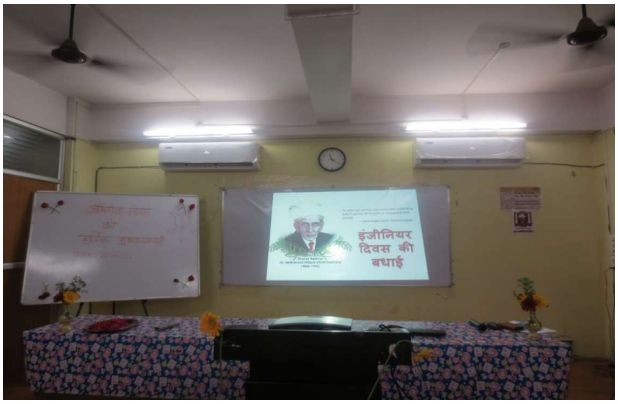

इंजीनियर्स दिवस कार्यक्रम में भाग लेते प्रतिभागी

कार्यशाला का आयोजन : (दिनाक 16.09.2022)

हिंदी पखवाड़ा के दौरान दिनाक 16.09.2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका संचालन श्री एम.के. नागराजु, राजभाषा अधिकारी, द.म.रे, सिकंदराबाद ने किया। इस कार्यशाला में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/कु	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	दीपक कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम पुरस्कार
2	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त रूप से
3	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
4	संजय कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय संयुक्त रूप से
5	दिनेश कुमार शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	
6	हारिस पी., कनिष्ठ लेखा अधिकारी	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	

कार्यशाना में भाग लेते प्रतिभ्भागी

मूल टिप्पण आलेख प्रोत्साहन योजना :

दिनांक 01.04.2021 से 31.03.2022 तक की अवधि में मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना में निम्नलिखित पदाधिकारियों ने पुरस्कार प्राप्त किए।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती/कु	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजू, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय
2	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	द्वितीय
3	संजय कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय

बच्चो के लिए निबंध प्रोत्साहन योजना :

रा.ज.वि.अ., हैदराबाद स्थित तीनों कार्यालयों में कार्यरत पदाधिकारियों के 1 से 12 वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए आयोजित निबंध प्रतियोगिता में निम्न प्रतिभागियों ने पुरस्कार प्राप्त किये।

क्र.सं.	बच्चों का नाम एवं कक्षा	माता/पिता का नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती	कार्यालय का नाम	पुरस्कार
1	डी. यकुला चौथी	डी. रामाकृष्णा, साधारण चालक	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	प्रथम
2	के. समन्विता, 5 वीं	के.वी.वी.एस.एस.पी. राजू, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद	तृतीय

वर्ष 2021–22 में हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के शील्ड का वितरण

हैदराबाद स्थित रा.ज.वि.अ., के तीनों कार्यालयों से वित्त वर्ष 2021–2022 के दौरान राजभाषा से संबंधित कार्यालीन हिंदी में उत्कृष्ट कार्य के लिए एक–एक पदाधिकारी को शील्ड का वितरण किया गया। जिसका विवरण निम्नानुसार है ।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	कार्यालय
1	श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
2	श्री सतीश कुमार, सहायक अभियंता	अ.वृ., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद
3	श्री के. शेखर नायक, प्रधान लिपिक	अ.प्र., रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

शील्ड पदान करते हुए

न्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैः

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	के. ए. नायुडू, का. अ.	प्रथम
2	टी. महेंद्रन, स.अ.	द्वितीय
3	अभिषक कुमार, क.अ.	तृतीय

राजभाषा प्रश्नावली प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	के. ए. नायुडू, का. अ.	प्रथम
2	टी. महेंद्रन, स.अ.	द्वितीय
3	अभिषक कुमार, क.अ.	तृतीय

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	महादेवी एस.ए.बिरादार, प्रा.श्रे.–।	प्रथम संयुक्त
2.	एस.राजालेक्ष्मी, स.अ.	प्रथम संयुक्त
3.	एन.एस.भाग्या, प्रा.श्रे.–।	द्वितीय संयुक्त
4.	गीता एस.के., प्रधान लिपिक	
5.	एस.एस.कलडगी, स.अ.अ.	तृतीय संयुक्त
6.	गोपिकबालगोपाल, क.अ.	
7.	एच.यू.प्रभाकर, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन संयुक्त
8.	जी.राजाण्ण, एम.टी.एस.	प्रथम संयुक्त
9.	पी.चेन्नय्या, स.अ.अ.	
10.	ई.केंपण्ण, अधीक्षक श्रेणी–।	
11.	ए.राजेश्वर राव, अधिशासी अभियंता	

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	महादेवी एस.ए.बिरादार, प्रा.श्रे.–।	प्रथम संयुक्त
2	एस.राजालेक्ष्मी, स.अ.	
3	एन.एस.भाग्या, प्रा.श्रे.–।	द्वितीय संयुक्त
4	गीता एस.के., प्रधान लिपिक	
5	एस.एस.कलडगी, स.अ.अ.	तृतीय संयुक्त
6	गोपिकबालगोपाल, क.अ.	
7	एच.यू.प्रभाकर, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन संयुक्त
8	जी.राजाण्ण, एम.टी.एस.	
9	पी.चेन्नय्या, स.अ.अ.	
10	ई.केंपण्ण, अधीक्षक श्रेणी–।	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस दुर्गाबाई, प्रधान लिपिक	प्रथम
2.	श्री एस. गुरुराजन, सहायक अभियन्ता	द्वितीय
3.	श्री शरणप्पा बी. मुंदरगि, सहायक अधिशासी अभियंता	तृतीय
4.	श्री प्रशांत कुमार सिंह, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रोत्साहन
5.	श्री मोहम्मद इसमाईल सिथ्थिक, सहायक अभियन्ता	प्रोत्साहन

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	श्री शरणप्पा बी. मुंदरगि, सहायक अधिशासी अभियंता	प्रथम
2.	श्री प्रशांत कुमार सिंह, कनिष्ठ अभियन्ता	द्वितीय
3.	श्रीमती पी. पदमजा, प्रारुपकार–।।।	तृतीय
4.	श्रीमती एस दुर्गाबाई, प्रधान लिपिक	प्रोत्साहन
5.	श्री एस. गुरुराजन, सहायक अभियन्ता	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल रा.ज.वि.अ., वलसाड

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया।सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान दोनों कार्यालयों में अलग–अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

अन्वेषण वृत्त, राजविअ, वलसाड

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	के.आर.पटेल, सहायक अभियंता	प्रथम
2.	शुभम गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
3.	कल्पना ए. परमार उच्च श्रेणी लिपिक	तृतीय
4.	क्रिष्णा पी. देसाई, प्रधान लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	उपेन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	

अन्वेषण प्रभाग

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एम.डी.पटेल, सहायक अभियंता	प्रथम
2.	दिपीका आर.पटेल, उच्च श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3.	एन.सी. आशरा, प्रारूपकार श्रेणी - ।।।	तृतीय
4.	मिनाक्षी डी. पार, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	भोगा शिवा प्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक	

लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	के.आर.पटेल, सहायक अभियंता	प्रथम
2.	श्री कुलदीप सिंह, अवर श्रेणी अभियंता श्री कुशीराम मीना, अवर श्रेणी अभियंता	द्वितीय संयुक्त
3.	श्रीमती कल्पना ए. परमार उच्च श्रेणी लिपिक श्री शुभम गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
4.	श्री उपेन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता श्री विनोद डी. पटेल, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वलसाड

लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एम.डी.पटेल, सहायक अभियंता	प्रथम
2.	भोगा शिवा प्रसाद, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3.	दिपीका आर.पटेल, उच्च श्रेणी लिपिक	तृतीय
4.	मिनाक्षी डी. पार, अवर श्रेणी लिपिक एन.श्री. आशरा, प्रारूपकार श्रेणी - ।।।	प्रोत्साहन संयुक्त

केन बेतवा जोड़ नहर

श्री सतीश चन्द्र अवस्थी

अटल बिहारी वाजपेयी का विचार श्रेष्ठ
नदी जोड़ो योजना का सर्व श्रेष्ठ नारा है।
किंतु राजनेता राष्ट्रनीति में विषमता से
तथा कचित नेतन ने सर्वथा विचारा है
राष्ट्रनीति राजनीति रीति प्रीती अब हैं एक
अतिसय विचित्र चित्रकारी खजुराहो की
जुगल किशोर पन्ना में रतन अकूत की
जो भी केन बेतवा की धारा वहा दे यहाँ
वह भी वुंदेली वाट जोर रहे वर्षों से
अवसर को पायें रह पायेंगे चौन से
वादा और इरादा दोऊ सत्य सरकारी हैं।
शीघ्र सम्पूर्ण होय देखे हम नैन से
तपन हैं चुवन हैं घुटन है भीष्म ग्रीषम की
तीतल महीतल हो शीतल शशि नेन से
हर्ष तव सतीश पाये जनता जर्नादन है।
तव क्यों गठजोड़ होय बेतवा का केन से
जल जब वहेगा व रहेगा दुख दारिद कहूँ।
वारिद सी उदारता से कृत्य कर दीजिये
पूरा बुंदेलखण्ड आशा से देख रहा
वशुंधरा अपनी को हरा भरा कीजिये
शीध्र करो सार्थक सिंचाई परियोजना है।
अवसर यश वाला व्यर्थ जाने न दीजिये
लिंक केन बेतवा तवा सी तपी धरती पर
गंगाजल धारा सी उतार आप दीजिये
पानी के आते हरियाली आये धरती पर
विटपों पर पर्ण और पल्लव आ जायेंगे
मुग्ध अन्नदाता उगायेंगे अनोखी फसल
बुंदेली धरती से दारिद हट जायेंगे।
अनुपम प्रयास से विश्वास और विकास होय
युवा बाल वृद्ध कलित कीरत तब गायेंगे
कृषि उद्योग उपयोग नव प्रयोग करें
खेत खेत फसलन में प्राण आ जायेंगे।
कैसे सतीश कोऊ कर सकत किनारा है
निज नयनों विमेष से जनता निहार रही
येन केन लिंक केन बेतवा सहारा है।

अधीक्षण अभियंता (उत्तर)

माँ गंगा की पुकार

बिमलेश गोस्वामी, प्रारूपकार-।।।

गंगा आज चीख रही,
गंगा आज पुकार रही।
सबको जीवन देने वाली,
अपनी सांसे हार रही।
कब से राह निहार रही
फिर से कोई भागीरथ आए,
माँ गंगा आज पुकार रही ।

कलयुग के इस कालखंड में,
मानव विकृतियों का हुई शिकार।
मानव जाति के दानव ने,
भर दिए मुझ में कई विकार।
रो रो के गंगा कब से,
अपनी व्यथा गुहार रही।
फिर से कोई भागीरथ आए,
माँ गंगा आज पुकार रही ।

मेरे कल कल करते प्रवाह को,
जगह जगह पर मानव रोक रहे।
मेरे अमृत से जल में,
दिन पर दिन विश्व घोल रहे।
मंद पड़ गई नाड़ी मेरी,
करो कोई उपचार सही।
कब से राह निहार रही
फिर से कोई भागीरथ आए,
माँ गंगा आज पुकार रही ।

नगर बस्तियों का कचरा,
मुझ में कब से डाल रहे।
औद्योगिक रसायनों से,
सब मेरा रूप बिगाड़ रहे।
पतित पावनी कहने वाली,
अपना तारणहार निहार रही।
कब से राह निहार रही
फिर से कोई भागीरथ आए,
माँ गंगा आज पुकार रही

जल है अनमोल रत्न

अमित बूरा

जल है अनमोल रत्न
इसे बचाने का करो जत्न

जल के बिना धरती है सूनी
बिना जल जीवन में घट जाये अनहोनी
जल से बनी है धरती
जल से बने है हम और तुम
जल से हरियाली यहां पर
बिना जल धरती खाली
जल है अनमोल रत्न
इसे बचाने का करो जत्न

जल नहीं रहा धरती पर तो,
हाहाकार मच जायेगा
ना रहेगा जीवित कोई
शमशान बन जायेगा।
जल है अनमोल रत्न
इसे बचाने का करो जत्न

नदी समुद्र में पानी है
तभी तो हर तरफ हरियाली है,
अन्न तभी तो मिलता है
जब तक धरती पर पानी है।
जल है अनमोल रत्न
इसे बचाने का करो जत्न

जल प्रचुरता में था कभी
सुखे नदी तालाब,
दर-दर भटके पानी के लिए
रहना हुआ बेहाल,
जल है अनमोल रत्न
इसे बचाने का करो जत्न

कनिष्ठ अभयिंता, एम.डी.यू. अनुभाग, राजविअ, साकेत, नई दिल्ली

राजविअ पदाधिकारियों के बच्चों का कोना

पर्यावरण

खतरे में है सॉस, जिन्दगी हो गई अब निराश
पर्यावरण से रिश्ता हमने तोड दिया,
पेड कॉटा और पौधा रोप दिया
कैसे होगी अब बरसात
कैसे होगी पूरी अब हर आस

प्रकृति ने मुख अब मोड लिया
बीच भॅवर में हम सबको छोड दिया
हरियाली को काट किया हमने शमशान
इसे नष्ट करने में हमने दिया पूरा योगदान

कलयुग में अपराध का बढ रहा अब प्रकोप
आज फिर से काँप उठी, देखो धरती माता की कोख!!
समय समय पर प्रकृति
देती रही हमें चोट
लालच में इतना अँधा हुआ
मानव को नही रहा कोई खौफ!!

कही बाढ़, कही पर सूखा
कभी महामारी का प्रकोप
यदा कदा धरती हिलती
फिर भूकम्प से मरते बे मौत!!

सबको अपनी चाह लगी है
नहीं रहा प्रकृति का अब शौक
"धर्म" करे जब बाते जनमानस की
दुनिया वालो को लगता है जोक!!

कलयुग में अपराध का
बढ़ा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख!!

कक्षा – 6 वीं श्रेया (पुत्री श्रीमती राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक)

जल संरक्षण पर कविता

बानी

जल से सारा जीवन है
जल से ही संसार है

बिन पानी जीवन सुना
सुना सारा संसार है

है जो जल इस दुनिया में
तभी तो हम और आप है

जल न हो इस दुनिया में
न हम है न और आप है

पानी से ही हरियाली है
पानी से खुशहाली है

पानी से इंसान बना
पानी से ही दुनिया सारी है

जल का महत्व क्या होता है
इस बात से हम अनजान है

जल का सदुपयोग करना
जल सरक्षण कहलाता है

जल का दुरूपयोग करना
जीवन खतरे में लाता है।

जल इस सारी दुनिया का महवपूण श्रृंगार है
जल ही सारा जीवन है ,जल से ही संसार है।

कक्षा – 6 वीं (पुत्री श्री विक्रम सिंह)

(मेरा नाम हैं... जल)

प्रखर वाधवा

मेरा नाम है जल

जुड़ा है मुझसे सबका कल।

मैं लोगों की प्यास बुझाता

उनके लिए अमृत बन जाता।

नदियों में भी बहता जाता

तालाबों में मैं लहराता।

खलिहानों में भी मैं जब जाता

खेत भी हरा भरा हो जाता।

कल कल करके बहता जाता

सभी जीवों से मेरा नाता।

बादलों से गिरकर में बरस जाता

सबके आंगन खुशियां फैलाता।

सर्दी है जब ज्यादा पड़ती

बर्फ के रूप में मैं जम जाता।

बहकर पहाड़ों से मैं आता

अंत में सागर से मिल जाता।

कक्षा – 9 वीं (पुत्र श्रीमती रीना वाधवा)

जल संरक्षण पर चित्र

नीलेश मौर्या

कक्षा – 11 वीं (पुत्र श्री ईश्वर लाल मौर्या)

जल ही जीवन है पर चित्र

श्रध्दा मौर्या

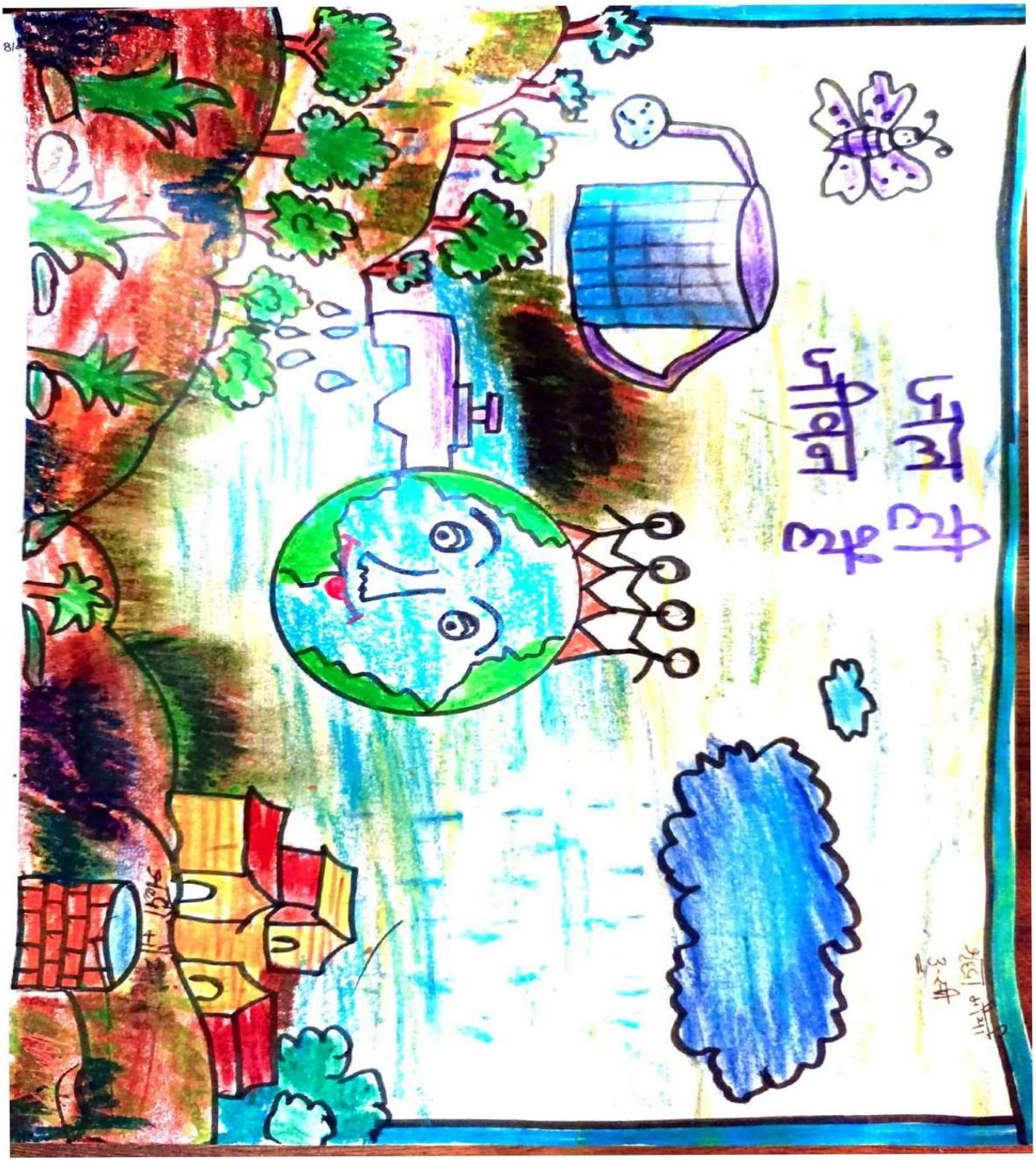

कक्षा – तीसरीं (पुत्री श्रीमती मिथलेश मौर्य)

जल बचाओ पर चित्र

श्रेया

कक्षा – छठीं (पुत्री श्रीमती राधा)

जल संरक्षण पर चित्र

प्रत्युष वाधवा

कक्षा – 3 (पुत्र श्रीमती रीना वाधवा)

जल विकास राजभाषा विशेषांक

संरक्षक
श्री भोपाल सिंह, महानिदेशक
संपादक मंडल
श्री बालेश्वर ठाकुर, मुख्य अभियंता (मुख्यालय)
अध्यक्ष
श्री डी के शर्मा, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी
सदस्य
डॉ, अनिल कुमार द्विवेदी, सहायक निदेशक (राजभाषा)
सदस्य–सचिव

पत्रिका में छपे सभी लेखों के लेखकों के विचार उनके अपने हैं
और राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण उसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

जल विकास **www.nwda.gov.in** पर भी उपलब्ध है
jal vikas can also be accessed at www.nwda.gov.in
राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, 18–20 सामुदायिक केंद्र, साकेत
नई दिल्ली–110017 द्वारा प्रकाशित